अध्याय १०

महाप्रभु का जगन्नाथ पुरी लौट आना

जब श्री चैतन्य महाप्रभु दक्षिण भारत की यात्रा पर थे, तब सार्वभौभ भट्टाचार्य ने राजा प्रतापरुद्र से बहुत बातें कीं। जब महाराज प्रतापरुद्र ने भट्टाचार्य से यह प्रार्थना की कि वे महाप्रभु से उनकी भेंट करा दें, तो भट्टाचार्य ने आश्वासन दिया कि दक्षिण भारत से महाप्रभु के लौटते ही वे ऐसा करने की चेष्टा करेंगे। जगन्नाथ पुरी लौटने पर महाप्रभु काशी मिश्र के घर रहे। सार्वभौम भट्टाचार्य ने महाप्रभु के लौट आने पर अनेक वैष्णवों का उनसे परिचय कराया। रामानन्द राय के पिता भवानन्द राय ने अपने दूसरे पुत्र वाणीनाथ पट्टनायक को महाप्रभु की सेवा में भेंट कर दिया। श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने संगियों से भट्टथारियों की संगति के द्वारा कृष्णदास के दूषित होने की बात बतलाई और उसे निकाल देने का प्रस्ताव रखा। नित्यानन्द प्रभु ने कृष्णदास को बंगाल भेज दिया, जिससे वह जाकर नवद्वीप के भक्तों को महाप्रभु के जगन्नाथ पुरी लौट आने का समाचार दे। इस तरह नवद्वीप के सारे भक्त जगन्नाथ पुरी आने की व्यवस्था करने लगे। उस समय परमानन्द पुरी नवद्वीप में थे; वे महाप्रभु के लौटने का समाचार पाकर अपने साथ कमलाकान्त नामक एक ब्राह्मण को लेकर तुरन्त ही जगन्नाथ पुरी के लिए चल पड़े। नवद्वीप के एक निवासी ने, जिनका नाम पुरुषोत्तम भट्टाचार्य था, वाराणसी में शिक्षा प्राप्त की थी। उन्होंने चैतन्यानन्द से संन्यास ग्रहण किया था, किन्तु अपना नाम स्वरूप रखा था। अब वे श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों की शरण में आये। श्री ईश्वर पुरी के तिरोधान के बाद उनका शिष्य गोविन्द अपने गुरु की आज्ञानुसार चैतन्य महाप्रभु की सेवा करने गया। केशव भारती से सम्बन्ध होने के कारण ब्रह्मानन्द भारती

का भी श्री चैतन्य महाप्रभु ने आदर सहित स्वागत किया। जगन्नाथ पुरी आने पर महाप्रभु ने उन्हें मृगचर्म न पहनने का परामर्श दिया। जब ब्रह्मानन्द ने महाप्रभु को ठीक से समझ लिया तो उन्होंने उन्हें साक्षात् कृष्ण के रूप में स्वीकार कर लिया। किन्तु जब सार्वभौम भट्टाचार्य ने महाप्रभु को कृष्ण कहकर सम्बोधित किया, तो महाप्रभु ने तुरन्त इसका विरोध किया। तभी काशीश्वर गोस्वामी भी महाप्रभु से भेंट करने आये। इस अध्याय में चैतन्य महाप्रभु का दर्शन करने के लिए भक्तगण विभिन्न स्थानों से आते हैं और वे भक्तगण उन नदियों के समान हैं, जो अनेक स्थानों से बहकर समुद्र में जा मिलती हैं।

तं वन्दे गौर-जलदं स्वस्य यो दर्शनामृतैः ।
विच्छेदावग्रह-म्लान-भक्त-शस्यान्यजीवयत् ॥ १ ॥

तं वन्दे गौर-जलदं स्वस्य यो दर्शनामृतैः ।
विच्छेदावग्रह-म्लान-भक्त-शस्यान्यजीवयत् ॥ १ ॥

तम्—उनको; **वन्दे**—मैं सादर नमस्कार करता हूँ; **गौर**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **जल-दम्**—पानी से भरे मेघ; **स्वस्य**—अपने; **यः**—वे जो; **दर्शन-अमृतैः**—दर्शन रूपी अमृत; **विच्छेद**—विरह के कारण; **अवग्रह**—वर्षा का अभाव; **म्लान**—शोक ग्रस्त, शुष्क; **भक्त**—भक्त; **शस्यानि**—अन्न; **अजीवयत्**—रक्षा करता है।

अनुवाद

मैं उन श्री चैतन्य महाप्रभु को सादर नमस्कार करता हूँ, जो वर्षा की कमी से कष्ट पा रहे भक्तरूपी धान्य के खेतों में जल बरसाने वाले बादल की तरह हैं। श्री चैतन्य महाप्रभु का वियोग सूखे की तरह है, किन्तु जब महाप्रभु लौटते हैं, तो उनकी उपस्थिति उस अमृत-वर्षा की तरह है, जो सूखते हुए अनाज पर बरसकर उसे नष्ट होने से बचा लेती है।

जय जय श्री-चैतन्य जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैत-चन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥ २ ॥

जय जय श्री-चैतन्य जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैत-चन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥ २ ॥

जय जय—जय जय; **श्री-चैतन्य**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **जय**—जय हो; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु; **जय**—जय हो; **अद्वैत-चन्द्र**—अद्वैत आचार्य की; **जय**—जय हो; **गौर-भक्त-वृन्द**—श्री चैतन्य महाप्रभु के सभी भक्तों की।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की जय हो! श्री नित्यानन्द प्रभु की जय हो! अद्वैत आचार्य की जय हो तथा भगवान् चैतन्य के समस्त भक्तों की जय हो!

पूर्वे यबे महाप्रभु चलिला दक्षिणे ।
प्रतापरुद्र राजा तबे बोलाइल सार्वभौमे ॥३॥

पूर्वे यबे महाप्रभु चलिला दक्षिणे ।
प्रतापरुद्र राजा तबे बोलाइल सार्वभौमे ॥ ३ ॥

पूर्वे—पहले; **यबे**—जब; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **चलिला**—चले थे; **दक्षिणे**—अपनी दक्षिण भारत की यात्रा पर; **प्रतापरुद्र**—प्रतापरूद्र; **राजा**—राजा ने; **तबे**—उस समय; **बोलाइल**—बुलाया; **सार्वभौमे**—सार्वभौम भट्टाचार्य को।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु दक्षिण भारत के लिए चल पड़े, तब राजा प्रतापरुद्र ने सार्वभौम भट्टाचार्य को अपने महल में बुलाया।

बसिते आसन दिल करि' नमस्कारे ।
महाप्रभुर वार्ता तबे पुछिल ताँहारे ॥४॥

बसिते आसन दिल करि' नमस्कारे ।
महाप्रभुर वार्ता तबे पुछिल ताँहारे ॥ ४ ॥

बसिते—बैठने के लिए; **आसन**—आसन; **दिल**—दिया; **करि'**—करके; **नमस्कारे**—नमस्कार; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **वार्ता**—समाचार; **तबे**—उस समय; **पुछिल**—पूछा; **ताँहारे**—उनसे।

अनुवाद

जब सार्वभौम भट्टाचार्य राजा से मिले, तो राजा ने उन्हें सम्मानपूर्वक आसन प्रदान किया और श्री चैतन्य महाप्रभु का समाचार पूछा।

শুনিলাঙ তোমার ঘরে এক মহাশয় ।
গৌড় হইতে আইলা, তেঁহো মহা-কৃপাময় ॥৫॥

शुनिलाङ तोमार घरे एक महाशय ।
गौड़ हइते आइला, तेंहो महा-कृपामय ॥५॥

शुनिलाङ—मैंने सुना है; **तोमार**—आपके; **घरे**—घर पर; **एक**—एक; **महाशय**—महापुरुष; **गौड़ हइते**—बंगाल से; **आइला**—आये हैं; **तेंहो**—वे; **महा-कृपा-मय**—अत्यन्त कृपालु।

अनुवाद

राजा ने भट्टाचार्य से कहा, "मैंने सुना है कि बंगाल से एक महापुरुष आये हैं, जो आपके घर ठहरे हैं। मैंने यह भी सुना है कि वे अत्यन्त कृपालु हैं।

তোমারে বহু কৃপা কৈলা, কহে সর্ব-জন ।
কৃপা করি' করাহ মোরে তাঁহার দর্শন ॥৬॥

तोमारे बहु कृपा कैला, कहे सर्व-जन ।
कृपा करि' कराह मोरे ताँहार दर्शन ॥६॥

तोमारे—आपके ऊपर; **बहु कृपा**—बहुत दया; **कैला**—की; **कहे**—कहता है; **सर्व-जन**—प्रत्येक व्यक्ति; **कृपा करि'**—कृपा करके; **कराह**—व्यवस्था करो; **मोरे**—मेरे लिए; **ताँहार**—उनका; **दर्शन**—दर्शन।

अनुवाद

"मैंने यह भी सुना है कि इस महापुरुष ने आप पर महती कृपा की है। जो भी हो, विभिन्न लोगों से मैं यही सुन रहा हूँ। अब आप कृपा करके मेरी उनसे भेंट कराकर मुझे कृतार्थ करें।"

ভট্ট কহে,—যে শুনিলা সব সত্য হয় ।
তাঁর দর্শন তোমার ঘটন না হয় ॥৭॥

भट्ट कहे,—ये शुनिला सब सत्य हय ।
ताँर दर्शन तोमार घटन ना हय ॥७॥

भट्ट कहे—भट्टाचार्य ने उत्तर दिया; **ये**—जो; **शुनिला**—आपने सुना है; **सब**—सब; **सत्य**—सच; **हय**—है; **ताँर दर्शन**—उनका दर्शन; **तोमार**—आपके; **घटन**—घटना, सम्भव; **ना हय**—नहीं है।

अनुवाद

भट्टाचार्य ने उत्तर दिया, "आपने जो कुछ भी सुना है, वह सत्य है। किन्तु जहाँ तक भेंट करने की बात है, उसका प्रबन्ध कर पाना अत्यन्त कठिन है।

विरक्त सन्न्यासी तेँहो रहेन निर्जने ।
स्वप्नेह ना करेन तेँहो राज-दरशने ॥८॥

विरक्त सन्न्यासी तेंहो रहेन निर्जने ।
स्वप्नेह ना करेन तेंहो राज-दरशने ॥८॥

विरक्त—वैरागी; **सन्न्यासी**—संन्यासी; **तेंहो**—वे; **रहेन**—स्वयं को रखते हैं; **निर्जने**—एकान्त स्थान में; **स्वप्नेह**—स्वप्न में भी; **ना**—नहीं; **करेन**—करते; **तेंहो**—वे; **राज-दरशने**—राजा से मुलाकात।

अनुवाद

"श्री चैतन्य महाप्रभु संन्यासी हैं और सांसारिक मामलों से अत्यधिक विरक्त हैं। वे निर्जन स्थान में ठहरते हैं और सपने में भी किसी राजा से भेंट नहीं करते।

तथापि प्रकारे तोमा कराइताम दरशन ।
सम्प्रति करिला तेँहो दक्षिण गमन ॥९॥

तथापि प्रकारे तोमा कराइताम दरशन ।
सम्प्रति करिला तेंहो दक्षिण गमन ॥९॥

तथापि—तथापि; **प्रकारे**—किसी न किसी प्रकार; **तोमा**—आपकी; **कराइताम**—मैं व्यवस्था कर देता; **दरशन**—दर्शन; **सम्प्रति**—अभी; **करिला**—किया है; **तेंहो**—उन्होंने; **दक्षिण**—भारत के दक्षिण भाग में; **गमन**—प्रस्थान।

अनुवाद

"इतने पर भी मैं आपकी भेंट कराने का प्रयास करता, किन्तु वे हाल ही में दक्षिण भारत के भ्रमण पर गये हैं।"

রাজা কহে,——জগন্নাথ ছাড়ি' কেনে গেলা ।
ভট্ট কহে,——মহান্তের এই এক লীলা ॥ ১০॥

রাজা কহে,——জগন্নাথ ছাড়ি' কেনে গেলা ।
ভট্ট কহে,——মহান্তের এই এক লীলা ॥ ১০॥

রাজা কহে—राजा ने कहा; **জগন্নাথ ছাড়ি'**—भगवान् जगन्नाथ के धाम को छोड़कर; **কেনে গেলা**—वे क्यों गये; **ভট্ট কহে**—सार्वभौम भट्टाचार्य ने कहा; **মহান্তের**—महान् पुरुष की; **এই**—यह; **এক**—एक; **লীলা**—लीला।

अनुवाद

राजा ने पूछा, "उन्होंने जगन्नाथ पुरी को क्यों छोड़ा?" भट्टाचार्य ने उत्तर दिया, "महापुरुषों की लीलाएँ ही ऐसी हैं।

তীর্থ পবিত্র করিতে করে তীর্থ-ভ্রমণ ।
সেই ছলে নিস্তারয়ে সাংসারিক জন ॥ ১১॥

তীর্থ পবিত্র করিতে করে তীর্থ-ভ্রমণ ।
সেই ছলে নিস্তারয়ে সাংসারিক জন ॥ ১১॥

তীর্থ—तीर्थस्थान; **পবিত্র করিতে**—पवित्र करने के लिए; **করে**—करते हैं; **তীর্থ-ভ্রমণ**—तीर्थ स्थानों की यात्रा; **সেই ছলে**—उसी बहाने से; **নিস্তারয়ে**—उद्धार करते हैं; **সাংসারিক**—बद्ध; **জন**—आत्माएँ।

अनुवाद

"बड़े-बड़े सन्त तीर्थस्थानों को पवित्र बनाने के लिए उनकी यात्रा करते हैं। इसीलिए चैतन्य महाप्रभु अनेक तीर्थों का भ्रमण कर रहे हैं और अनेकानेक बद्धजीवों का उद्धार कर रहे हैं।

ভবদ্বিধা ভাগবতাস্তীর্থী-ভূতাঃ স্বয়ং বিভো ।
তীর্থী-কুর্বন্তি তীর্থানি স্বান্তঃ-স্থেন গদা-ভৃতা ॥ ১২॥

ভবদ্বিধা ভাগবতাস্তীর্থী-ভূতাঃ স্বয়ং বিভো ।
তীর্থী-কুর্বন্তি তীর্থানি স্বান্তঃ-স্থেন গদা-ভৃতা ॥ ১২॥

ভবৎ—आप; **বিধাঃ**—की तरह; **ভাগবতাঃ**—भक्त; **তীর্থী**—पवित्र तीर्थस्थान की तरह; **ভূতাঃ**—वर्तमान; **স্বয়ম্**—स्वयं; **বিভো**—हे भगवान्; **তীর্থী-কুর্বন্তি**—तीर्थ के पवित्र स्थान

बनाते हैं; **तीर्थानि**—पवित्र स्थान; **स्व-अन्तः-स्थेन**—उनके हृदयों में स्थित होने के कारण; **गदा-भृता**—भगवान् द्वारा।

अनुवाद

"'आप जैसे सन्त पुरुष साक्षात् तीर्थ हैं। वे अपनी शुद्धता के कारण भगवान् के चिरन्तन संगी हैं, अतएव वे तीर्थों को भी शुद्ध कर सकते हैं।'

तात्पर्य

यह श्लोक *श्रीमद्भागवत* (१.१३.१०) का है, जिसे महाराज युधिष्ठिर ने विदुर से कहा था और यह आदिलीला (१.६३) में भी आया है।

वैष्णवेर एई हय एक स्वभाव निश्चल ।
तेँहो जीव नहेन, हन स्वतन्त्र ईश्वर ॥ १३॥

वैष्णवेर एइ हय एक स्वभाव निश्चल ।
तेंहो जीव नहेन, हन स्वतन्त्र ईश्वर ॥ १३॥

वैष्णवेर—महान् भक्तों का; **एइ**—यह; **हय**—है; **एक**—एक; **स्वभाव**—स्वभाव; **निश्चल**—निश्चल; **तेंहो**—वे; **जीव**—बद्ध आत्मा; **नहेन**—नहीं है; **हन**—है; **स्वतन्त्र**—स्वतंत्र; **ईश्वर**—ईश्वर।

अनुवाद

"वैष्णव तीर्थस्थानों की यात्रा उन्हें पवित्र बनाने तथा पतित बद्धजीवों का उद्धार करने के लिए करता है। यह वैष्णवों का कर्तव्य है। वास्तव में श्री चैतन्य महाप्रभु जीव नहीं, अपितु साक्षात् पूर्ण पुरूषोत्तम भगवान् हैं। फलस्वरूप वे पूर्णतः स्वतन्त्र नियन्ता हैं, फिर भी भक्तरूप में वे भक्त के कार्य करते हैं।"

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर इंगित करते हैं कि तीर्थस्थानों में ऐसे अनेक स्थायी निवासी होते हैं, जो तीर्थस्थानों में रहने के विधि-विधानों का ठीक से पालन नहीं करते, इसलिए महान् भक्तों को उनका उद्धार करने के लिए इन स्थानों में जाना पड़ता है। यही वैष्णव का कार्य है। वैष्णव दूसरों को भौतिकता में ग्रस्त देखकर दुःखी होता है। यद्यपि श्री चैतन्य महाप्रभु समस्त वैष्णवों के आराध्य देव हैं, पूर्ण तथा स्वतन्त्र पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् हैं, फिर

भी वैष्णवों के कार्यकलापों की शिक्षा उन्हीं की दी हुई है। वे *पूर्णः शुद्धो नित्यमुक्तः*—अर्थात् पूर्ण, पूर्णतया शुद्ध तथा सनातन रूप से मुक्त हैं। वे *सनातन* हैं, क्योंकि उनका न तो आदि है और न अन्त।

রাজা কহে,—তাঁরে তুমি যাইতে কেনে দিলে ।
পায় পড়ি' যত্ন করি' কেনে না রাখিলে ॥ ১৪॥

রাজা কহে,—তাঁরে তুমি যাইতে কেনে দিলে ।
পায় পড়ি' যত্ন করি' কেনে না রাখিলে ॥ ১৪॥

রাজা কহে—राजा ने कहा; **তাঁরে**—उनको; **তুমি**—आपने; **যাইতে**—जाने; **কেনে**—क्यों; **দিলে**—दिया; **পায়**—उनके चरणकमलों पर; **পড়ি'**—गिरकर; **যত্ন করি'**—बहुत प्रयास करके; **কেনে**—क्यों; **না**—नहीं; **রাখিলে**—रोका।

अनुवाद

यह सुनकर राजा ने कहा, "आपने उन्हें क्यों जाने दिया? आपने उनके चरणकमलों पर गिरकर उन्हें यहीं क्यों नहीं रखा?"

ভট্টাচার্য কহে,—তেঁহো স্বয়ং ঈশ্বর স্বতন্ত্র ।
সাক্ষাত্শ্রীকৃষ্ণ, তেঁহো নহে পর-তন্ত্র ॥ ১৫॥

ভট্টাচার্য কহে,—তেঁহো স্বয়ং ঈশ্বর স্বতন্ত্র ।
সাক্ষাত্শ্রীকৃষ্ণ, তেঁহো নহে পর-তন্ত্র ॥ ১৫॥

ভট্টাচার্য কহে—सार्वभौम ने उत्तर दिया; **তেঁহো**—वे; **স্বয়ম্**—स्वयं; **ঈশ্বর**—पूर्ण पुरूषोत्तम भगवान्; **স্বতন্ত্র**—स्वतंत्र; **সাক্ষাত্**—साक्षात्; **শ্রী-কৃষ্ণ**—भगवान् कृष्ण; **তেঁহো**—वे; **নহে**—नहीं हैं; **পর-তন্ত্র**—किसी के अधीन।

अनुवाद

सार्वभौम भट्टाचार्य ने उत्तर दिया, "श्री चैतन्य महाप्रभु स्वयं पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् हैं और वे पूर्ण तथा स्वतन्त्र हैं। साक्षात् भगवान् श्रीकृष्ण होने के कारण वे किसी पर आश्रित नहीं हैं।

তথাপি রাখিতে তাঁরে বহু যত্ন কৈলুঁ ।
ঈশ্বরের স্বতন্ত্র ইচ্ছা, রাখিতে নারিলুঁ ॥ ১৬॥

तथापि राखिते ताँरे बहु यत्न कैलुँ ।
ईश्वरेर स्वतन्त्र इच्छा, राखिते नारिलुँ ॥ १६ ॥

तथापि—तथापि; **राखिते**—रखने के लिए; **ताँरे**—उन्हें; **बहु**—बहुत; **यत्न**—प्रयास; **कैलुँ**—मैंने किये; **ईश्वरेर**—परम भगवान् की; **स्वतन्त्र**—स्वतंत्र; **इच्छा**—इच्छा; **राखिते**—रखने के लिए; **नारिलुँ**—मैं अक्षम था।

अनुवाद

"फिर भी मैंने उन्हें यहाँ रखने के लिए बहुत प्रयत्न किया, किन्तु वे परम भगवान् हैं तथा पूर्णतया स्वतन्त्र हैं, अतएव मैं इसमें सफल नहीं हो सका।"

राजा कहे,——भट्ट तुमि विज्ञ-शिरोमणि ।
तुमि ताँरे 'कृष्ण' कह, ताते सत्य मानि ॥ १७ ॥

राजा कहे—राजा ने कहा; **भट्ट**—सार्वभौम भट्टाचार्य; **तुमि**—आप; **विज्ञ-शिरोमणि**—सर्वश्रेष्ठ अनुभवी विद्वान; **तुमि**—आप; **ताँरे**—उनको; **कृष्ण कह**—भगवान् कृष्ण कहते हो; **ताते**—आपका वचन; **सत्य मानि**—मैं सत्य स्वीकार करता हूँ।

अनुवाद

राजा ने कहा, "हे भट्टाचार्य, मैं जिन्हें जानता हूँ उनमें से आप सर्वाधिक विद्वान तथा अनुभवी व्यक्ति हैं। अतएव जब आप श्री चैतन्य महाप्रभु को भगवान् कृष्ण कहते हैं, तो मैं इसको सत्य के रूप में स्वीकार करता हूँ।

तात्पर्य

आध्यात्मिक विज्ञान में आगे बढ़ने का यही उपाय है। आचार्य या प्रामाणिक गुरु के शब्दों को स्वीकार करना चाहिए, जिससे आध्यात्मिक प्रगति का मार्ग साफ हो सके। यही सफलता का रहस्य है। हाँ, मनुष्य का मार्गदर्शक ऐसा आध्यात्मिक गुरु होना चाहिए, जो पूर्ववर्ती आचार्य के आदेशों का बिना विचलित हुए दृढ़ता से पालन करने वाला हो। गुरु जो भी कहे, उसे शिष्य को स्वीकार करना चाहिए। तभी सफलता निश्चित होती है। यही वैदिक पद्धति है।

सार्वभौम भट्टाचार्य एक ब्राह्मण एवं स्वरूपसिद्ध व्यक्ति थे, जबकि प्रतापरुद्र एक क्षत्रिय थे। क्षत्रिय राजा विद्वान ब्राह्मणों एवं सन्त पुरुषों के आदेशों का पालन श्रद्धापूर्वक किया करते थे और इस तरह वे अपने देश का शासन चलाते थे। इसी प्रकार वैश्य राजा के आदेशों का पालन करते थे और शूद्र इन तीन उच्चतर जातियों की सेवा करते थे। इस प्रकार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र आपस में मिलजुलकर रहते थे और अपने नियत कर्मों का पालन करते थे। फलस्वरूप समाज में शान्ति थी और लोग कृष्णभावनामृत के कर्तव्यों को पूरा करने में समर्थ थे। फलतः वे इस जीवन में सुखी थे और भगवद्धाम वापस जाने में सक्षम थे।

पुनरपि ইহাঁ তাঁর হৈলে আগমন ।
এক-বার দেখি' করি সফল নয়ন ॥ ১৮॥

पुनरपि इहाँ ताँर हैले आगमन ।
एक-बार देखि' करि सफल नयन ॥ १८॥

पुनरपि—फिर भी; **इहाँ**—यहाँ; **ताँर**—उनका; **हैले**—जब हो; **आगमन**—आगमन; **एक-बार**—एक बार; **देखि'**—देखकर; **करि**—मैं करता हूँ; **स-फल**—सफल; **नयन**—अपने नेत्र।

अनुवाद

"श्री चैतन्य महाप्रभु जब पुनः यहाँ आयें, तो मैं अपने नेत्रों को सफल बनाने के लिए उनका एक बार दर्शन करना चाहता हूँ।"

ভট্টাচার্য কহে,——তেঁহো আসিবে অল্প-কালে ।
রহিতে তাঁরে এক স্থান চাহিয়ে বিরলে ॥ ১৯॥

भट्टाचार्य कहे,——तेंहो आसिबे अल्प-काले ।
रहिते ताँरे एक स्थान चाहिये विरले ॥ १९॥

भट्टाचार्य कहे—सार्वभौम भट्टाचार्य ने उत्तर दिया; **तेंहो**—वे; **आसिबे**—आयेंगे; **अल्प-काले**—अति शीघ्र; **रहिते**—रखने के लिए; **ताँरे**—उनको; **एक**—एक; **स्थान**—स्थान; **चाहिये**—चाहिए; **विरले**—एकान्त।

अनुवाद

सार्वभौम भट्टाचार्य ने उत्तर दिया, "श्री चैतन्य महाप्रभु शीघ्र ही लौट आयेंगे। मैं उनके लिए एक उत्तम स्थान चाहता हूँ, जो एकान्त तथा शान्त हो।

ঠাকুরের নিকট, আর হইবে নির্জনে ।
এ-মত নির্ণয় করি' দেহ' এক স্থানে ॥২০॥

ঠাকুরের নিকট, আর হইবে নির্জনে ।
এ-মত নির্ণয় করি' দেহ' এক স্থানে ॥ ২০॥

ঠাকুরের নিকট—भगवान् जगन्नाथ के मन्दिर के निकट; **আর**—भी; **হইবে**—होना चाहिए; **নির্জনে**—एकान्त; **এ-মত**—इस प्रकार; **নির্ণয় করি'**—निर्णय करके; **দেহ'**—कृपया दो; **এক স্থানে**—एक स्थान।

अनुवाद

"श्री चैतन्य महाप्रभु का निवासस्थान एकान्त में हो तथा जगन्नाथ मन्दिर के निकट भी। आप इस प्रस्ताव पर विचार करें और उनके लिए एक अच्छा-सा स्थान दें।"

রাজা কহে,—ঐছে কাশী-মিশ্রের ভবন ।
ঠাকুরের নিকট, হয় পরম নির্জন ॥২১॥

রাজা কহে,—ঐছে কাশী-মিশ্রের ভবন ।
ঠাকুরের নিকট, হয় পরম নির্জন ॥ ২১॥

রাজা কহে—राजा ने उत्तर दिया; **ঐছে**—ठीक वैसा ही; **কাশী-মিশ্রের ভবন**—काशी मिश्र का घर; **ঠাকুরের নিকট**—भगवान् जगन्नाथ के निकट; **হয়**—है; **পরম**—अत्यन्त; **নির্জন**—एकान्त।

अनुवाद

राजा ने उत्तर दिया, "आप जैसा चाहते हैं, काशी मिश्र का घर वैसा ही है। वह मन्दिर के निकट है और अत्यन्त निर्जन तथा शान्त भी है।"

এত কহি' রাজা রহে উৎকণ্ঠিত হঞা ।
ভট্টাচার্য কাশী-মিশ্রে কহিল আসিয়া ॥২২॥

এত কহি' রাজা রহে উৎকণ্ঠিত হঞা ।
ভট্টাচার্য্য কাশী-মিশ্রে কহিল আসিয়া ॥ ২২ ॥

এত কহি'—यह कहकर; **राजा**—राजा; **रहे**—रहे; **उत्कण्ठित**—अति उत्सुक; **हञा**—होकर; **भट्टाचार्य्य**—सार्वभौम भट्टाचार्य; **काशी-मिश्रे**—काशी मिश्र को; **कहिल**—कहा; **आसिया**—आकर।

अनुवाद

यह कहकर राजा महाप्रभु के पुनरागमन के लिए अत्यन्त आतुर हो उठे। तब सार्वभौम भट्टाचार्य काशी मिश्र के घर राजा की इच्छा बतलाने गये।

কাশী-মিশ্র কহে,——আমি বড় ভাগ্যবান্ ।
মোর গৃহে 'প্রভু-পাদের' হবে অবস্থান ॥২৩॥

কাশী-মিশ্র কহে,——আমি বড় ভাগ্যবান্ ।
মোর গৃহে 'প্রভু-পাদের' হবে অবস্থান ॥ ২৩ ॥

काशी-मिश्र कहे—काशी मिश्रने कहा; **आमि**—मैं; **बड़**—बहुत; **भाग्यवान्**—भाग्यवान्; **मोर गृहे**—मेरे घर में; **प्रभु-पादेर**—प्रभुओं के स्वामी का; **हबे**—होगा; **अवस्थान**—निवास।

अनुवाद

जब काशी मिश्र ने यह प्रस्ताव सुना तो उन्होंने कहा, "मैं परम भाग्यवान् हूँ कि समस्त प्रभुओं के स्वामी श्री चैतन्य महाप्रभु मेरे घर पर ठहरेंगे।"

तात्पर्य

इस श्लोक में श्री चैतन्य महाप्रभु के लिए प्रयुक्त *प्रभुपाद* शब्द महत्त्वपूर्ण है। इस सम्बन्ध में श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी प्रभुपाद की टीका है—"श्री चैतन्य महाप्रभु स्वयं पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण हैं और उनके सारे दास उन्हें प्रभुपाद कहते हैं। इसका अर्थ यह है कि उनके चरणकमलों

में शरण लेने वाले अनेक *प्रभु* हैं।" शुद्ध वैष्णव को *प्रभु* कहा जाता है और वैष्णवों में यह सम्बोधन शिष्टाचार के रूप में प्रयुक्त होता है। जब बहुत से प्रभु किसी अन्य प्रभु के चरणकमलों की शरण लेते हैं, तब प्रभुपाद सम्बोधन का प्रयोग किया जाता है। श्री नित्यानन्द प्रभु तथा श्री अद्वैत प्रभु भी प्रभुपाद कहलाते हैं। श्री चैतन्य महाप्रभु, श्री अद्वैत प्रभु तथा श्री नित्यानन्द प्रभु ये सभी *विष्णु-तत्त्व* हैं, अतएव सारे जीव उनके चरणकमलों की शरण में हैं। भगवान् विष्णु हर एक के शाश्वत प्रभु हैं और भगवान् विष्णु का प्रतिनिधि भगवान् का विश्वासपात्र दास होता है। ऐसा व्यक्ति नये वैष्णवों के लिए गुरु का कर्तव्य निभाता है, अतएव गुरु श्रीकृष्ण चैतन्य या भगवान् विष्णु के समान ही आदरणीय होता है। इसीलिए गुरु को ॐ विष्णुपाद या प्रभुपाद कहा जाता है। आचार्य अर्थात् गुरु का आदर सामान्यतया अन्य लोगों द्वारा श्रीपाद के रूप में किया जाता है और दीक्षित वैष्णव को प्रभु कहकर सम्बोधित किया जाता है। प्रभु, प्रभुपाद तथा विष्णुपाद का वर्णन *श्रीमद्भागवत, श्रीचैतन्य चरितामृत* तथा *श्रीचैतन्य-भागवत* जैसे प्रामाणिक शास्त्रों में मिलता है। इस सम्बन्ध में ये शास्त्र अनन्य भक्तों द्वारा स्वीकृत प्रमाणों को प्रस्तुत करते हैं।

प्राकृत सहजिये वैष्णव तक कहलाने के पात्र नहीं होते। वे सोचते हैं कि केवल गोस्वामी जाति के लोगों को ही प्रभुपाद कहना चाहिए। ऐसे अज्ञानी सहजिये अपने आपको *वैष्णव-दास-अनुदास* कहते हैं, किन्तु वे शुद्ध वैष्णव को प्रभुपाद कहने के विरोधी होते हैं। दूसरे शब्दों में, वे प्रभुपाद कहलाने वाले प्रामाणिक गुरु से ईर्ष्या करते हैं। इस तरह वे गुरु को सामान्य मनुष्य या किसी जाति विशेष का सदस्य मानने के कारण अपराध के भागी बनते हैं। श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर ऐसे सहजियों को सर्वाधिक अभागा बतलाते हैं, जो अपनी भ्रान्त धारणाओं के कारण नरक को जाते हैं।

এই-মত পুরুষোত্তম-বাসী যত জন ।
প্রভুকে মিলিতে সবার উৎকণ্ঠিত মন ॥২৪॥

एइ-मत पुरुषोत्तम-वासी यत जन ।
प्रभुके मिलिते सबार उत्कण्ठित मन ॥ २४॥

एइ-मत—इस प्रकार; **पुरुषोत्तम-वासी**—जगन्नाथ पुरी के निवासी; **यत**—सभी; **जन**—लोग; **प्रभुके**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **मिलिते**—मिलने के लिए; **सबार**—प्रत्येक व्यक्ति; **उत्कण्ठित**—उत्सुक; **मन**—मन।

अनुवाद

इस तरह जगन्नाथ पुरी अर्थात् पुरुषोत्तम के सारे निवासी श्री चैतन्य महाप्रभु से फिर से भेंट करने के लिए परम उत्सुक हो गये।

সর্ব-লোকের উৎকণ্ঠা যবে অত্যন্ত বাড়িল ।
মহাপ্রভু দক্ষিণ হৈতে তবহি আইল ॥২৫॥

सर्व-लोकेर उत्कण्ठा यबे अत्यन्त बाड़िल ।
महाप्रभु दक्षिण हैते तबहि आइल ॥ २५ ॥

सर्व-लोकेर—सभी लोगों की; **उत्कण्ठा**—उत्सुकता; **यबे**—जब; **अत्यन्त**—बहुत अधिक; **बाड़िल**—बढ़ गई; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **दक्षिण हैते**—दक्षिण भारत से; **तबहि**—उसी समय; **आइल**—लौट आये।

अनुवाद

जब जगन्नाथ पुरी के सारे निवासी पुनः महाप्रभु से भेंट करने के लिए अत्यन्त उत्सुक हो गये, तभी महाप्रभु दक्षिण भारत से लौट आये।

শুনি' আনন্দিত হৈল সবাকার মন ।
সবে আসি' সার্বভৌমে কৈল নিবেদন ॥২৬॥

शुनि' आनन्दित हैल सबाकार मन ।
सबे आसि' सार्वभौमे कैल निवेदन ॥ २६ ॥

शुनि'—सुनकर; **आनन्दित**—प्रसन्न; **हैल**—हो गये; **सबाकार**—प्रत्येक का; **मन**—मन; **सबे आसि'**—हर एक ने आकर; **सार्वभौमे**—सार्वभौम भट्टाचार्य को; **कैल**—किया; **निवेदन**—निवेदन।

अनुवाद

महाप्रभु की वापसी के बारे में सुनकर सभी लोग अत्यन्त प्रसन्न हुए और वे सभी लोग सार्वभौम भट्टाचार्य के पास जाकर इस प्रकार बोले।

প্রভুর সহিত আমা-সবার করাহ মিলন ।
তোমার প্রসাদে পাই প্রভুর চরণ ॥২৭॥

প্রভুর সহিত আমা-সবার করাহ মিলন ।
তোমার প্রসাদে পাই প্রভুর চরণ ॥ ২৭॥

প্রভুর সহিত—श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ; **आमा-सबार**—हम सबका; **कराह**—व्यवस्था करो; **मिलन**—भेंट; **तोमार**—आपकी; **प्रसादे**—कृपा से; **पाइ**—हम पाते हैं; **प्रभुर चरण**—महाप्रभु के चरणकमल।

अनुवाद

"कृपा करके श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ हमारी भेंट कराने की व्यवस्था कर दें। आपकी कृपा के बल पर ही हमें महाप्रभु के चरणकमलों की शरण प्राप्त हो सकती है।"

ভট্টাচার্য কহে,—কালি কাশী-মিশ্রের ঘরে ।
প্রভু যাইবেন, তাহাঁ মিলাব সবারে ॥২৮॥

ভট্টাচার্য্য কহে,—কালি কাশী-মিশ্রের ঘরে ।
প্রভু য়াইবেন, তাহাঁ মিলাব সবারে ॥ ২৮॥

ভট্টাচার্য্য কহে—भट्टाचार्य ने उत्तर दिया; **कालि**—कल; **काशी-मिश्रेर घरे**—काशी मिश्र के घर में; **प्रभु**—महाप्रभु; **य़ाइबेन**—जायेंगे; **ताहाँ**—वहाँ; **मिलाब सबारे**—मैं आप सबके मिलन की व्यवस्था करूँगा।

अनुवाद

भट्टाचार्य ने लोगों से कहा, "महाप्रभु कल काशी मिश्र के घर पर होंगे। तभी मैं आप लोगों की उनसे मिलने की व्यवस्था करूँगा।"

আর দিন মহাপ্রভু ভট্টাচার্যের সঙ্গে ।
জগন্নাথ দরশন কৈল মহা-রঙ্গে ॥২৯॥

আর দিন মহাপ্রভু ভট্টাচার্য্যের সঙ্গে ।
জগন্নাথ দরশন কৈল মহা-রঙ্গে ॥ ২৯॥

आर दिन—अगले दिन; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **भट्टाचार्य्यर सङ्गे**—सार्वभौम

भट्टाचार्य के साथ; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ के; **दरशन**—दर्शन; **कैल**—किये; **महा-रङ्गे**—अत्यन्त उत्साहपूर्वक।

अनुवाद

अगले दिन श्री चैतन्य महाप्रभु आ गये और वे बड़े ही उत्साहपूर्वक सार्वभौम भट्टाचार्य के साथ भगवान् जगन्नाथ के मन्दिर में दर्शन करने गये।

महा-प्रसाद दिया ताहाँ मिलिला सेवक-गण ।
महाप्रभु सबाकारे कैल आलिङ्गन ॥ ३०॥

महा-प्रसाद दिया ताहाँ मिलिला सेवक-गण ।
महाप्रभु सबाकारे कैल आलिङ्गन ॥ ३०॥

महा-प्रसाद—भगवान् जगन्नाथ के भोजन के अवशेष; **दिया**—दिये; **ताहाँ**—वहाँ; **मिलिला**—मिले; **सेवक-गण**—सेवक गण; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **सबाकारे**—सबको; **कैल**—किया; **आलिङ्गन**—आलिंगन।

अनुवाद

भगवान् जगन्नाथ के सारे सेवकों ने चैतन्य महाप्रभु को भगवान् का प्रसाद लाकर दिया। तब बदले में, चैतन्य महाप्रभु ने उन सबका आलिंगन किया।

दर्शन करि' महाप्रभु चलिला बाहिरे ।
भट्टाचार्य आनिल তাঁরে কাশী-মিশ্র-ঘরে ॥ ৩১॥

दर्शन करि' महाप्रभु चलिला बाहिरे ।
भट्टाचार्य्य आनिल তাঁরে কাশী-মিশ্র-ঘরে ॥ ३१॥

दर्शन करि'—भगवान् जगन्नाथ के दर्शन कर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **चलिला**—चले गये; **बाहिरे**—बाहर; **भट्टाचार्य्य**—सार्वभौम भट्टाचार्य; **आनिल**—लाये; **তাঁরে**—उनको; **কাশী-মিশ্র-ঘরে**—काशी मिश्र के घर पर।

अनुवाद

भगवान् जगन्नाथ का दर्शन करने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु मन्दिर से बाहर आ गये। फिर भट्टाचार्य उन्हें काशी मिश्र के घर ले गये।

কাশী-মিশ্র আসি' পড়িল প্রভুর চরণে ।
গৃহ-সহিত আত্মা তাঁরে কৈল নিবেদনে ॥৩২॥

কাশী-মিশ্র আসি' পড়িল প্রভুর চরণে ।
গৃহ-সহিত আত্মা তাঁরে কৈল নিবেদনে ॥ ৩২ ॥

কাশী-মিশ্র—কাশী মিশ্র; **আসি'**—আকর; **পড়িল**—গির পড়ে; **প্রভুর**—শ্রী চৈতন্য মহাপ্রভু কে; **চরণে**—চরণকমলোঁ পর; **গৃহ-সহিত**—অপনে ঘর; **আত্মা**—স্বয়ং কো; **তাঁরে**—উনকো; **কৈল**—কিয়া; **নিবেদনে**—সমর্পণ।

অনুবাদ

জব শ্রী চৈতন্য মহাপ্রভু কাশী মিশ্র কে ঘর আয়ে, তো বে তুরন্ত উনকে চরণকমলোঁ পর গির পড়ে ঔর উন্হোঁনে স্বয়ং কো তথা অপনে সারে ঘর-বার কো উনকী শরণ মেঁ দে দিয়া।

প্রভু চতুর্ভুজ-মূর্তি তাঁরে দেখাইল ।
আত্মসাৎকরি' তারে আলিঙ্গন কৈল ॥৩৩॥

প্রভু চতুর্ভুজ-মূর্তি তাঁরে দেখাইল ।
আত্মসাৎকরি' তারে আলিঙ্গন কৈল ॥ ৩৩ ॥

প্রভু—শ্রী চৈতন্য মহাপ্রভু; **চতুর্-ভুজ-মূর্তি**—চতুর্ভুজ রূপ; **তাঁরে**—উনকো; **দেখাইল**—দিখায়া; **আত্মসাত্ করি'**—স্বীকার করকে; **তারে**—উনকো; **আলিঙ্গন কৈল**—আলিংগন কিয়া।

অনুবাদ

তব মহাপ্রভু নে কাশী মিশ্র কো অপনা চতুর্ভুজ স্বরূপ দিখলায়া। মহাপ্রভু নে উসকী সেবা স্বীকার কী ঔর উসে গলে লগায়া।

তবে মহাপ্রভু তাহাঁ বসিলা আসনে ।
চৌদিকে বসিলা নিত্যানন্দাদি ভক্ত-গণে ॥৩৪॥

তবে মহাপ্রভু তাহাঁ বসিলা আসনে ।
চৌদিকে বসিলা নিত্যানন্দাদি ভক্ত-গণে ॥ ৩৪ ॥

তবে—উস সময়; **মহাপ্রভু**—শ্রী চৈতন্য মহাপ্রভু; **তাহাঁ**—বহাঁ; **বসিলা**—বৈঠ গয়ে;

आसने—अपने आसन पर; **चौ-दिके**—चारों ओर; **वसिला**—बैठ गये; **नित्यानन्द-आदि**—नित्यानन्द प्रभु आदि; **भक्त-गणे**—सभी भक्त।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु अपने लिए तैयार किये गये आसन पर बैठ गये और नित्यानन्द प्रभु समेत सारे भक्तगण उनके चारों ओर बैठ गये।

सुखी हैला देखि' प्रभु वासार संस्थान ।
येइ वासाय हय प्रभुर सर्व-समाधान ॥ ३५ ॥

सुखी हैला देखि' प्रभु वासार संस्थान ।
येइ वासाय हय प्रभुर सर्व-समाधान ॥ ३५ ॥

सुखी हैला—बहुत आनन्दित होकर; **देखि'**—देखकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **वासार**—निवासस्थान की; **संस्थान**—स्थिति; **येइ वासाय**—जिस स्थान पर; **हय**—है; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **सर्व-समाधान**—सभी आवश्यकताओं की पूर्ति।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु अपने निवासस्थान को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए, जिसमें उनकी सारी आवश्यकताओं को पूरा करने का ध्यान रखा गया था।

सार्वभौम कहे,——प्रभु, योग्य तोमार वासा ।
तुमि अङ्गीकार कर,——काशी-मिश्रेर आशा ॥ ३६ ॥

सार्वभौम कहे,——प्रभु, योग्य तोमार वासा ।
तुमि अङ्गीकार कर,——काशी-मिश्रेर आशा ॥ ३६ ॥

सार्वभौम—सार्वभौम भट्टाचार्य ने; **कहे**—कहा; **प्रभु**—मेरे प्रिय प्रभु; **योग्य**—योग्य; **तोमार**—आपके; **वासा**—निवासस्थान; **तुमि**—आप; **अङ्गीकार कर**—स्वीकार करें; **काशी-मिश्रेर आशा**—काशी मिश्र की आशा।

अनुवाद

सार्वभौम भट्टाचार्य ने कहा, "यह स्थान आपके अनुकूल है। कृपया इसे स्वीकार करें; ऐसी काशी मिश्र की आशा है।"

প্রভু কহে,——এই দেহ তোমা-সবাকার ।
যেই তুমি কহ, সেই সম্মত আমার ॥৩৭॥

প্রভু কহে,——এই দেহ তোমা-সবাকার ।
যেই তুমি কহ, সেই সম্মত আমার ॥ ৩৭॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **एइ देह**—यह शरीर; **तोमा-सबाकार**—आप सबका है; **येइ**—जो कुछ; **तुमि**—आप; **कह**—कहते हो; **सेइ**—वही; **सम्मत आमार**—मुझे स्वीकार है।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "यह मेरा शरीर आप सबका है। अतएव आप लोग जो भी कहेंगे, वह मुझे स्वीकार है।"

তবে সার্বভৌম প্রভুর দক্ষিণ-পার্শ্বে বসি' ।
মিলাইতে লাগিলা সব পুরুষোত্তম-বাসী ॥৩৮॥

তবে সার্বভৌম প্রভুর দক্ষিণ-পার্শ্বে বসি' ।
মিলাইতে লাগিলা সব পুরুষোত্তম-বাসী ॥ ৩৮॥

तबे—तत्पश्चात्; **सार्वभौम**—सार्वभौम; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **दक्षिण-पार्श्वे**—दायीं ओर; **वसि'**—बैठकर; **मिलाइते**—परिचय देने; **लागिला**—लगे; **सब**—सब; **पुरुषोत्तम-वासी**—पुरुषोत्तम (जगन्नाथ पुरी) के निवासियों का।

अनुवाद

इसके बाद सार्वभौम भट्टाचार्य महाप्रभु की दाहिनी ओर बैठकर पुरुषोत्तम अर्थात् जगन्नाथ पुरी के सारे निवासियों का परिचय कराने लगे।

এই সব লোক, প্রভু, বৈসে নীলাচলে ।
উৎকণ্ঠিত হঞাছে সবে তোমা মিলিবারে ॥৩৯॥

এই সব লোক, প্রভু, বৈসে নীলাচলে ।
উৎকণ্ঠিত হঞাছে সবে তোমা মিলিবারে ॥ ৩৯॥

एइ सब लोक—ये सब लोग; **प्रभु**—मेरे प्रभु; **वैसे**—रहते हैं; **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी

में; **उत्कण्ठित हञाछे**—वे अत्यन्त उत्सुक हो उठे हैं; **सबे**—सब; **तोमा**—आपको; **मिलिबारे**—मिलने को।

अनुवाद

भट्टाचार्य ने कहा, "हे प्रभु, ये नीलाचल के सारे निवासी आपसे मिलने के लिए अत्यन्त उत्सुक हो रहे हैं।

तृषित चातक यैछे करे हाहाकार ।
तैछे एइ सब,——सबे कर अङ्गीकार ॥४०॥

तृषित चातक ग्रैछे करे हाहाकार ।
तैछे एइ सब,——सबे कर अङ्गीकार ॥४०॥

तृषित—प्यासे; **चातक**—चातक पक्षी; **ग्रैछे**—की तरह; **करे**—करते हैं; **हाहा-कार**—निराशा भरी चित्कार; **तैछे**—उसी प्रकार; **एइ सब**—ये सब; **सबे**—इन सबको; **कर अङ्गीकार**—कृपया स्वीकार करें।

अनुवाद

"आपकी अनुपस्थिति में ये सारे लोग प्यासे चातकों की तरह निराश होकर रोदन कर रहे थे। कृपया इन्हें अपनी शरण में लें।"

जगन्नाथ-सेवक एइ, नाम——जनार्दन ।
अनवसरे करे प्रभुर श्री-अङ्ग-सेवन ॥४१॥

जगन्नाथ-सेवक एइ, नाम——जनार्दन ।
अनवसरे करे प्रभुर श्री-अङ्ग-सेवन ॥४१॥

जगन्नाथ-सेवक—भगवान् जगन्नाथ के सेवक; **एइ**—यह; **नाम**—नामक; **जनार्दन**—जनार्दन; **अनवसरे**—नवयौवन के अवसर पर; **करे**—करता है; **प्रभुर**—भगवान् के; **श्री-अङ्ग**—दिव्य शरीर की; **सेवन**—सेवा।

अनुवाद

सार्वभौम भट्टाचार्य ने सर्वप्रथम जनार्दन का परिचय देते हुए कहा, "यह भगवान् जगन्नाथ का सेवक जनार्दन है। यह भगवान् की तब सेवा करता है, जब उनके दिव्य शरीर को नया बनाया जाता है।"

तात्पर्य

स्नान-यात्रा उत्सव के बाद अनवसर के समय भगवान् जगन्नाथ १५ दिनों तक मन्दिर से अनुपस्थित रहते हैं, जिससे उनको नया बनाया जा सके। ऐसा प्रतिवर्ष होता है। श्री चैतन्य महाप्रभु से जिस जनार्दन का परिचय कराया जा रहा था, वह उस समय यही सेवा कर रहा था। भगवान् जगन्नाथ के शृंगार को नवयौवन भी कहा जाता है, जिससे यह सूचित होता है कि जगन्नाथ अर्चाविग्रह को पुनः यौवन प्रदान किया जाता है।

कृष्णदास-नाम एइ सुवर्ण-वेत्र-धारी ।
शिखि माहाति-नाम एइ लिखनाधिकारी ॥ ४२ ॥

कृष्णदास-नाम एइ सुवर्ण-वेत्र-धारी ।
शिखि माहाति-नाम एइ लिखनाधिकारी ॥ ४२ ॥

कृष्णदास—कृष्णदास; **नाम**—नामक; **एइ**—यह; **सुवर्ण**—स्वर्ण; **वेत्र-धारी**—दण्डधारी; **शिखि माहाति**—शिखि माहिति; **नाम**—नामक; **एइ**—यह; **लिखन-अधिकारी**—लेखन का अधिकारी।

अनुवाद

सार्वभौम भट्टाचार्य ने बतलाया, "यह कृष्णदास है, जो सोने का एक दण्ड लिए रहता है और यह है शिखि माहिति जो लेखन अधिकारी है।

तात्पर्य

लेखन अधिकारी *देउलकरण-पदप्राप्त कर्मचारी* भी कहलाता है। वह विशेष रूप से *मादला-पांजि* नामक कैलण्डर अर्थात् पंजी लिखने के लिए नियुक्त किया जाता है।

प्रद्युम्न-मिश्र ईँह वैष्णव प्रधान ।
जगन्नाथेर महा-सोयार ईँह 'दास' नाम ॥ ४३ ॥

प्रद्युम्न-मिश्र इँह वैष्णव प्रधान ।
जगन्नाथेर महा-सोयार इँह 'दास' नाम ॥ ४३ ॥

प्रद्युम्न-मिश्र—प्रद्युम्न मिश्र; **इँह**—यह व्यक्ति; **वैष्णव प्रधान**—वैष्णवों का मुखिया; **जगन्नाथेर**—भगवान् जगन्नाथ का; **महा-सोयार**—महान् सेवक; **इँह**—यह; **दास नाम**—'दास' नामक।

अनुवाद

"यह प्रद्युम्न मिश्र है, जो सारे वैष्णवों का मुखिया है। यह जगन्नाथजी का महान् सेवक है और इसका नाम 'दास' है।

तात्पर्य

उड़ीसा में अधिकांश ब्राह्मणों की उपाधि दास है। सामान्यतया यह समझा जाता है कि *दास* ब्राह्मण-इतर जातियों का द्योतक है, किन्तु उड़ीसा में ब्राह्मण दास उपाधि ही प्रयुक्त करते हैं। इसकी पुष्टि चुल्लि भट्ट द्वारा होती है। वास्तव में हर व्यक्ति *दास* है, क्योंकि हर व्यक्ति पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् का दास होता है। इस दृष्टि से प्रामाणिक ब्राह्मण को *दास* उपाधि का पहला अधिकार है। अतएव यहाँ पर दास उपाधि उपयुक्त ही है।

মুরারি মাহাতি ইঁহ——শিখি-মাহাতির ভাই ।
তোমার চরণ বিনু আর গতি নাই ॥ ৪৪॥

मुरारि माहाति इँह——शिखि-माहातिर भाइ ।
तोमार चरण विनु आर गति नाइ ॥ ४४॥

मुरारि माहाति—मुरारि माहिति; **इँह**—यह; **शिखि-माहातिर**—शिखि माहिति का; **भाइ**—छोटा भाई; **तोमार**—आपके; **चरण**—चरणकमल; **विनु**—बिना; **आर**—अन्य कोई; **गति**—गति; **नाइ**—नहीं है।

अनुवाद

"यह शिखि माहिति का भाई मुरारि माहिती है। आपके चरणकमलों के अतिरिक्त इसका अन्य कोई आश्रय नहीं है।

চন্দনেশ্বর, সিংহেশ্বর, মুরারি ব্রাহ্মণ ।
বিষ্ণুদাস,——ইঁহ ধ্যায়ে তোমার চরণ ॥ ৪৫॥

चन्दनेश्वर, सिंहेश्वर, मुरारि ब्राह्मण ।
विष्णुदास,——इँह ध्याये तोमार चरण ॥ ४५॥

चन्दनेश्वर—चन्देश्वर; **सिंहेश्वर**—सिंहेश्वर; **मुरारि ब्राह्मण**—मुरारी नामक ब्राह्मण; **विष्णुदास**—विष्णुदास; **इँह**—वे सब; **ध्याये**—ध्यान करते हैं; **तोमार**—आपके; **चरण**—चरणकमलों का।

अनुवाद

"ये चन्दनेश्वर, सिंहेश्वर, मुरारि ब्राह्मण तथा विष्णुदास हैं। ये सभी निरन्तर आपके चरणकमलों का ध्यान करने में लगे रहते हैं।

प्रहरराज महापात्र ईँह महा-मति ।
परमानन्द महापात्र ईँहार संहति ॥ ४६॥

प्रहरराज महापात्र इँह महा-मति ।
परमानन्द महापात्र इँहार संहति ॥ ४६ ॥

प्रहरराज—प्रहरराजा; **महापात्र**—महापात्र; **इँह**—यह; **महा-मति**—अति बुद्धिमान; **परमानन्द महापात्र**—परमानन्द महापात्र; **इँहार**—उसका; **संहति**—मिश्रण।

अनुवाद

"ये परमानन्द प्रहरराज हैं, जो महापात्र नाम से भी जाने जाते हैं। ये अत्यधिक बुद्धिमान हैं।

तात्पर्य

प्रहरराज उपाधि उन ब्राह्मणों को दी जाती है, जो सिंहासन रिक्त होने पर राजा का प्रतिनिधित्व करते हैं। उड़ीसा में राजा की मृत्यु के समय से लेकर दूसरे राजा के सिंहासनारूढ़ होने तक प्रतिनिधि ही सिंहासन पर आसीन होता है। यही प्रतिनिधि प्रहरराज कहलाता है। प्रहरराज का चुनाव सामान्यतया राजा के निकट के पुरोहितों के परिवार से ही किया जाता है। श्री चैतन्य महाप्रभु के जमाने में परमानन्द प्रहरराज ही प्रहरराज थे।

ए-सब वैष्णव——एই क्षेत्रेर भूषण ।
एकान्त-भावे चिन्ते सबे तोमार चरण ॥ ४७॥

ए-सब वैष्णव——एइ क्षेत्रेर भूषण ।
एकान्त-भावे चिन्ते सबे तोमार चरण ॥ ४७॥

ए-सब वैष्णव—ये सब शुद्ध भक्त; **एइ क्षेत्रेर**—इस पावन क्षेत्र के; **भूषण**—आभूषण; **एकान्त-भावे**—एकाग्र भाव से; **चिन्ते**—ध्यान करते हैं; **सबे**—सब; **तोमार चरण**—आपके चरणकमलों का।

अनुवाद

"ये सारे शुद्ध भक्त जगन्नाथ पुरी के आभूषणों के समान सेवा करते हैं। ये सभी आपके चरणकमलों का अविचलित भाव से ध्यान करते हैं।"

তবে সবে ভূমে পড়ে দণ্ডবৎ হঞা ।
সবা আলিঙ্গিলা প্রভু প্রসাদ করিয়া ॥৪৮॥

তবে সবে ভূমে পড়ে দণ্ডবত্ হঞা ।
সবা আলিঙ্গিলা প্রভু প্রসাদ করিয়া ॥ ৪৮ ॥

तबे—तत्पश्चात्; **सबे**—वे सब; **भूमे**—धरती पर; **पड़े**—गिर गये; **दण्ड-वत्**—दण्ड की भाँति सीधे; **हञा**—होकर; **सबा**—उन सबका; **आलिङ्गिला**—गले लगाया; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **प्रसाद करिया**—कृपापूर्वक।

अनुवाद

इस परिचय के बाद सारे लोग जमीन पर डण्डे की तरह गिर पड़े। श्री चैतन्य महाप्रभु ने हर एक पर कृपा करके उन सबका आलिंगन किया।

হেন-কালে আইলা তথা ভবানন্দ রায় ।
চারি-পুত্র-সঙ্গে পড়ে মহাপ্রভুর পায় ॥৪৯॥

হেন-কালে আইলা তথা ভবানন্দ রায় ।
চারি-পুত্র-সঙ্গ পড়ে মহাপ্রভুর পায় ॥ ৪৯ ॥

हेन-काले—इस समय; **आइला**—आये; **तथा**—वहाँ; **भवानन्द राय**—भवानन्द राय; **चारि-पुत्र-सङ्गे**—अपने चार पुत्रों के साथ; **पड़े**—गिर पड़े; **महाप्रभुर पाय**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों पर।

अनुवाद

तभी भवानन्द राय अपने चार पुत्रों के साथ आये और वे सभी श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों पर गिर पड़े।

तात्पर्य

भवानन्द राय के पाँच पुत्र थे, जिनमें से एक अत्यन्त उच्च कोटी के महापुरूष रामानन्द राय थे। भवानन्द राय पहली बार श्री चैतन्य महाप्रभु से उनकी दक्षिण यात्रा से वापस आने के अवसर पर मिले थे। तब रामानन्द राय सरकारी पद पर कार्य कर रहे थे, अतएव भवानन्द राय अपने अन्य चार पुत्रों के साथ महाप्रभु से मिलने गये। इनके नाम थे वाणीनाथ, गोपीनाथ, कलानिधि तथा सुधानिधि। भवानन्द राय तथा उनके पाँचों पुत्रों का वर्णन आदिलीला (१०.१३३-३४) में हुआ है।

সার্বভৌম কহে,——এই রায় ভবানন্দ ।
ইঁহার প্রথম পুত্র——রায় রামানন্দ ॥৫০॥

सार्वभौम कहे,——एइ राय भवानन्द ।
इँहार प्रथम पुत्र——राय रामानन्द ॥५०॥

सार्वभौम कहे—सार्वभौम भट्टाचार्य ने आगे कहा; **एइ**—ये; **राय भवानन्द**—भवानन्द राय; **इँहार**—इनका; **प्रथम पुत्र**—प्रथम पुत्र; **राय रामानन्द**—रामानन्द राय।

अनुवाद

सार्वभौम भट्टाचार्य ने आगे बतलाया, "ये भवानन्द राय हैं, जिनके प्रथम पुत्र रामानन्द राय हैं।"

তবে মহাপ্রভু তাঁরে কৈল আলিঙ্গন ।
স্তুতি করি' কহে রামানন্দ-বিবরণ ॥৫১॥

तबे महाप्रभु ताँरे कैल आलिङ्गन ।
स्तुति करि' कहे रामानन्द-विवरण ॥५१॥

तबे—तब; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **ताँरे**—उनका; **कैल**—किया; **आलिङ्गन**—गले लगाया; **स्तुति करि'**—बहुत प्रशंसा करके; **कहे**—कहा; **रामानन्द**—रामानन्द राय का; **विवरण**—विवरण।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने भवानन्द राय का आलिंगन किया और बड़े ही आदर के साथ उनके पुत्र रामानन्द राय का बखान किया।

রামানন্দ-হেন রত্ন যাঁহার তনয় ।
তাঁহার মহিমা লোকে কহন না যায় ॥৫২॥

रामानन्द-हेन रत्न ग्राँहार तनय ।
ताँहार महिमा लोके कहन ना ग्राय ॥५२॥

रामानन्द-हेन—रामानन्द राय की भाँति; **रत्न**—रत्न; **ग्राँहार**—जिसका; **तनय**—पुत्र; **ताँहार**—उसकी; **महिमा**—महिमा का; **लोके**—इस संसार में; **कहन**—वर्णन करना; **ना**—नहीं; **ग्राय**—सम्भव है।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने भवानन्द राय का यह कहकर सम्मान किया, "जिस व्यक्ति को रामानन्द राय जैसा पुत्र-रत्न हो, उसकी महिमा का वर्णन इस मर्त्यलोक में नहीं किया जा सकता।

সাক্ষাৎপাণ্ডু তুমি, তোমার পত্নী কুন্তী ।
পঞ্চ-পাণ্ডব তোমার পঞ্চ-পুত্র মহা-মতি ॥৫৩॥

साक्षात्पाण्डु तुमि, तोमार पत्नी कुन्ती ।
पञ्च-पाण्डव तोमार पञ्च-पुत्र महा-मति ॥५३॥

साक्षात् पाण्डु—साक्षात् महाराज पाण्डु; **तुमि**—आप; **तोमार**—आपकी; **पत्नी**—पत्नी; **कुन्ती**—कुन्ती देवी के समान; **पञ्च-पाण्डव**—पाँच पाण्डव; **तोमार**—आपके; **पञ्च-पुत्र**—पाँच पुत्र; **महा-मति**—सभी अत्यन्त बुद्धिमान।

अनुवाद

"आप साक्षात् महाराज पाण्डु हैं और आपकी पत्नी साक्षात् कुन्ती हैं। आपके सारे के सारे पुत्र अत्यन्त बुद्धिमान हैं, जो पाँचों पाण्डवों का प्रतिनिधित्व करते हैं।"

রায় কহে,——আমি শূদ্র, বিষয়ী, অধম ।
তবু তুমি স্পর্শ,——এই ঈশ্বর-লক্ষণ ॥৫৪॥

राय कहे,——आमि शूद्र, विषयी, अधम ।
तबु तुमि स्पर्श,——एइ ईश्वर-लक्षण ॥५४॥

राय कहे—भवानन्द राय ने उत्तर दिया; **आमि शूद्र**—मैं शूद्र हूँ; **विषयी**—भौतिक कर्मों में व्यस्त; **अधम**—नीच; **तबु**—फिर भी; **तुमि**—आपने; **स्पर्श**—छुआ; **एइ**—यह; **ईश्वर-लक्षण**—पूर्ण पुरूषोत्तम भगवान् का लक्षण है।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा की गई प्रशंसा सुनकर भवानन्द राय ने निवेदन किया, "मैं चार वर्णों में चौथा (शूद्र) हूँ और सांसारिक कार्यों में लगा रहने वाला प्राणी हूँ। मैं अत्यन्त पतित हूँ, फिर भी आपने मेरा स्पर्श किया। यह इसका प्रमाण है कि आप पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् हैं।"

तात्पर्य

जैसाकि *भगवद्गीता* (५.१८) में कहा गया है :

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिता समदर्शिनः॥

"विनीत साधु अपने वास्तविक ज्ञान के बल पर विद्वान तथा सज्जन ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुत्ता तथा चाण्डाल को समान दृष्टि से देखते हैं।"

जो व्यक्ति आध्यात्मिक ज्ञान में उन्नत हैं, वे किसी व्यक्ति की भौतिक अवस्था की परवाह नहीं करते। आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नत व्यक्ति हर जीव के आध्यात्मिक स्वरूप को देखता है, फलतः वह विद्वान ब्राह्मण, कुत्ता, चाण्डाल या अन्य किसी में कोई भेदभाव नहीं बरतता। वह मनुष्य के भौतिक शरीर से प्रभावित नहीं होता, अपितु मनुष्य के आध्यात्मिक स्वरूप को देखता है। फलतः भवानन्द राय को श्री चैतन्य महाप्रभु का कथन अच्छा लगा, जिससे पता चलता है कि महाप्रभु ने भवानन्द राय की सामाजिक स्थिति की परवाह नहीं की कि वे सांसारिक कार्यों में व्यस्त रहने वाले शूद्र जाति के थे। बल्कि महाप्रभु ने भवानन्द राय, रामानन्द राय तथा उनके भाइयों की आध्यात्मिक स्थिति पर ही विचार किया। भगवान् का भक्त भी ऐसी ही मनोवृत्ति रखता है। वह किसी भी व्यक्ति को—किसी भी जीव को—आश्रय देता है, चाहे वह ब्राह्मण वंश का हो या चांडाल हो। गुरु सारे लोगों का उद्धार करके हर व्यक्ति को आध्यात्मिक जीवन की प्रेरणा देता है। ऐसे भक्त की शरण लेकर मनुष्य अपना जीवन सफल बना सकता है। जैसाकि *श्रीमद्भागवत* (२.४.१८) में पुष्टि की गई है :

किरात हूणान्ध्रपुलिन्द पुल्कशा
आभीरशुम्भा यवनाः खसादयः।
येऽन्ये च पापा यदपाश्रयाश्रयाः
शुद्ध्यन्ति तस्मै प्रभविष्णवे नमः॥

"किरात, हूण, आन्ध्र, पुलिन्द, पुल्कश, आभीर, शुम्भ, यवन तथा खस जातियाँ, यहाँ तक कि अन्य लोग भी जो पापकर्मों के अभ्यस्त हैं, भगवद्भक्त की शरण ग्रहण करके शुद्ध बन सकते हैं, क्योंकि भगवान् की भक्ति परम है। मैं उन्हें नमस्कार करता हूँ।"

जो कोई भी पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् या उनके शुद्ध भक्त की शरण लेता है, वह आध्यात्मिक पद को प्राप्त करता है और भौतिक कल्मष से शुद्ध हो जाता है। इसकी पुष्टि *भगवद्गीता* (९.३२) में कृष्ण भी करते हैं :

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम्॥

"हे पृथा-पुत्र, जो मेरी शरण लेते हैं, वे भले ही निम्न जन्म वाले—स्त्रियाँ, वैश्य और शूद्र क्यों न हो, मेरे परम धाम पहुँच सकते हैं।"

निज-गृह-वित्त-भृत्य-पञ्च-पुत्र-सने ।
आत्मा समर्पिलुँ आमि तोमार चरणे ॥५५॥

निज-गृह-वित्त-भृत्य-पञ्च-पुत्र-सने ।
आत्मा समर्पिलुँ आमि तोमार चरणे ॥५५॥

निज—अपना; **गृह**—घर; **वित्त**—धन; **भृत्य**—सेवक; **पञ्च-पुत्र**—पाँच पुत्र; **सने**—के साथ; **आत्मा**—स्वयं; **समर्पिलुँ**—समर्पित करता हूँ; **आमि**—मैं; **तोमार**—आपके; **चरणे**—चरणकमलों पर।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा की प्रशंसा करते हुए भवानन्द राय ने यह भी कहा, "मैं अपने घर, धन, नौकरों तथा पाँचों पुत्र समेत आपके चरणकमलों की शरण ग्रहण करता हूँ।

तात्पर्य

शरणागति की यही विधि है। श्रील भक्तिविनोद ठाकुर का गीत है :

मानस, देह, गेह, यो किछु मोर
अर्पिलुँ तुया पदे नन्दकिशोर!

(*शरणागति*)

जब कोई भगवान् के चरणकमलों की शरण लेता है, तो वह अपना सर्वस्व अर्पित करके—अपना घर, शरीर, मन, तथा जो भी उसके पास में होता है उसे अर्पित करके ऐसा करता है। यदि इस शरणागति में कोई व्यवधान पड़े, तो तुरन्त ही अनासक्त होकर उसका परित्याग कर देना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति अपने सारे परिवार के सदस्यों सहित शरण ग्रहण कर सके, तो उसे संन्यास लेने की कोई आवश्यकता नहीं है। किन्तु यदि तथाकथित पारिवारिक जनों के कारण शरणागति की प्रक्रिया में व्यवधान आता हो, तो शरणागति को पूरा करने के लिए उनका तुरन्त परित्याग कर देना चाहिए।

एइ वाणीनाथ रहिबे तोमर चरणे ।
यबे येइ आज्ञा, ताहा करिबे सेवने ॥५६॥

एइ वाणीनाथ रहिबे तोमर चरणे ।
यबे येइ आज्ञा, ताहा करिबे सेवने ॥५६॥

एइ वाणीनाथ—यह वाणीनाथ; **रहिबे**—रहेगा; **तोमार चरणे**—आपके चरणकमलों पर; **यबे**—जब; **येइ**—जो कुछ; **आज्ञा**—आज्ञा; **ताहा**—वह; **करिबे**—पूरी करेगा; **सेवने**—सेवा।

अनुवाद

"यह वाणीनाथ नामक मेरा पुत्र आपके चरणकमलों में रहकर आपके आदेशों का तुरन्त पालन करेगा और आपकी सेवा करता रहेगा।

आत्मीय-ज्ञाने मोरे सङ्कोच ना करिबे ।
येइ यबे इच्छा, तबे सेइ आज्ञा दिबे ॥५७॥

आत्मीय-ज्ञाने मोरे सङ्कोच ना करिबे ।
येइ यबे इच्छा, तबे सेइ आज्ञा दिबे ॥५७॥

आत्मीय-ज्ञाने—अपना सम्बन्धी समझने से; **मोरे**—मुझे; **सङ्कोच**—संकोच; **ना**—न; **करिबे**—करो; **याइ**—जो कुछ; **यबे**—जब कभी; **इच्छा**—आप इच्छा करें; **तबे**—तब; **सेइ**—वह; **आज्ञा**—आज्ञा; **दिबे**—दें।

अनुवाद

"हे प्रभु, कृपया आप मुझे अपना सम्बन्धी (आत्मीय) समझें। आप जब भी जो चाहें, उसके लिए आदेश देने में तनिक भी संकोच नहीं करें।"

प्रभु कहे,——कि सङ्कोच, तुमि नह पर ।
जन्मे जन्मे तुमि आमार सवंशे किङ्कर ॥ ५८॥

प्रभु कहे,——कि सङ्कोच, तुमि नह पर ।
जन्मे जन्मे तुमि आमार सवंशे किङ्कर ॥ ५८॥

प्रभु कहे—महाप्रभु ने उत्तर दिया; **कि सङ्कोच**—कैसा संकोच; **तुमि**—आप; **नह**—नहीं हो; **पर**—पराये; **जन्मे जन्मे**—जन्म-जन्मांतर में; **तुमि**—आप; **आमार**—मेरे; **स-वंशे**—परिवार के सदस्यों सहित; **किङ्कर**—सेवक।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने भवानन्द राय की बात यह कहते हुए मान ली, "मैं बिना संकोच के स्वीकार करता हूँ, क्योंकि आप पराये नहीं हैं। आप जन्म-जन्मांतर अपने परिवार सहित मेरे सेवक रहते आये हैं।

दिन-पाँच-सात भितरे आसिबे रामानन्द ।
ताँर सङ्गे पूर्ण हबे आमार आनन्द ॥ ५९॥

दिन-पाँच-सात भितरे आसिबे रामानन्द ।
ताँर सङ्गे पूर्ण हबे आमार आनन्द ॥ ५९॥

दिन-पाँच-सात—पाँच अथवा सात दिन; **भितरे**—के भीतर; **आसिबे**—आयेंगे; **रामानन्द**—रामानन्द; **ताँर सङ्गे**—उनके साथ; **पूर्ण हबे**—पूर्ण होगा; **आमार**—मेरा; **आनन्द**—आनन्द।

अनुवाद

"पाँच-सात दिनों के ही भीतर श्री रामानन्द आने वाले हैं। ज्यों ही वे

आ जायेंगे, हमारी सारी इच्छाएँ पूरी हो जायेंगी। मुझे उनके संग में अत्यन्त आनन्द प्राप्त होता है।"

এত বলি' প্রভু তাঁরে কৈল আলিঙ্গন ।
তাঁর পুত্র সব শিরে ধরিল চরণ ॥৬০॥

এত বলি' প্রভু তাঁরে কৈল আলিঙ্গন ।
তাঁর পুত্র সব শিরে ধরিল চরণ ॥ ৬০ ॥

এত বলি'—यह कहकर; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **তাঁরে**—उनका; **কৈল**—किया; **আলিঙ্গন**—गले लगाया; **তাঁর পুত্র**—उनके पुत्र; **সব**—सब; **শিরে**—सिर पर; **ধরিল**—रखे; **চরণ**—उनके चरण।

अनुवाद

यह कहकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने भवानन्द का आलिंगन किया। फिर उन्होंने उनके पुत्रों के सिरों पर अपने चरणकमल रखे।

তবে মহাপ্রভু তাঁরে ঘরে পাঠাইল ।
বাণীনাথ-পট্টনায়কে নিকটে রাখিল ॥৬১॥

তবে মহাপ্রভু তাঁরে ঘরে পাঠাইল ।
বাণীনাথ-পট্টনায়কে নিকটে রাখিল ॥ ৬১ ॥

তবে—तत्पश्चात्; **মহাপ্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **তাঁরে**—उनको (भवानन्द राय); **ঘরে**—घर; **পাঠাইল**—भेज दिया; **বাণীনাথ-পট্টনায়কে**—वाणीनाथ पट्टनायक को; **নিকটে**—पास; **রাখিল**—रखा।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने भवानन्द राय को उनके घर वापस भेज दिया और अपनी निजी सेवा में केवल वाणीनाथ पट्टनायक को रख लिया।

ভট্টাচার্য সব লোকে বিদায় করাইল ।
তবে প্রভু কালা-কৃষ্ণদাসে বোলাইল ॥৬২॥

भट्टाचार्य्र सब लोके विदाय कराइल ।
तबे प्रभु काला-कृष्णदासे बोलाइल ॥ ६२ ॥

भट्टाचार्य्र—सार्वभौम भट्टाचार्य; **सब लोके**—सब लोगों को; **विदाय कराइल**—जाने के लिए कहा; **तबे**—उस समय; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **काला-कृष्णदासे**—काला कृष्णदास को; **बोलाइल**—बुला भेजा।

अनुवाद

फिर सार्वभौम भट्टाचार्य ने सभी लोगों से विदा होने के लिए कहा। तत्पश्चात् श्री चैतन्य महाप्रभु ने काला कृष्णदास को बुलवाया, जो उनके साथ दक्षिण भारत की यात्रा में गया था।

প্রভু কহে,——ভট্টাচার্য, শুনহ ইঁহার চরিত ।
দক্ষিণ গিয়াছিল ইঁহ আমার সহিত ॥ ৬৩ ॥

प्रभु कहे,——भट्टाचार्य्र, शुनह इँहार चरित ।
दक्षिण गियाछिल इँह आमार सहित ॥ ६३ ॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **भट्टाचार्य्र**—हे भट्टाचार्य; **शुनह**—जरा सुनो; **इँहार चरित**—इसका चरित्र; **दक्षिण गियाछिल**—दक्षिण भारत गया था; **इँह**—यह; **आमार सहित**—मेरे साथ।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "हे भट्टाचार्य, जरा इस आदमी के चरित्र पर विचार कीजिये, जो मेरे साथ दक्षिण भारत गया था।

ভট্টথারি-কাছে গেলা আমারে ছাড়িয়া ।
ভট্টথারি হৈতে ইঁহারে আনিলুঁ উদ্ধারিয়া ॥ ৬৪ ॥

भट्टथारि-काछे गेला आमारे छाड़िया ।
भट्टथारि हैते इँहारे आनिलुँ उद्धारिया ॥ ६४ ॥

भट्टथारि-काछे—भट्टथारियों की संगति में; **गेला**—चला गया; **आमारे छाड़िया**—मुझे छोड़कर; **भट्टथारि हैते**—भट्टथारियों से; **इँहारे**—उसे; **आनिलुँ**—मैं ले आया; **उद्धारिया**—बचा करके।

अनुवाद

"इसने भट्टथारियों के साथ रहने के लिए मेरा संग छोड़ दिया था, किन्तु मैं उनकी संगति से बचाकर इसे यहाँ लाया हूँ।

एबे आमि इहाँ आनि' करिलाङ विदाय ।
याहाँ इच्छा, याह, आमा-सने नाहि आर दाय ॥ ६५ ॥

एबे आमि इहाँ आनि' करिलाङ विदाय ।
याहाँ इच्छा, याह, आमा-सने नाहि आर दाय ॥ ६५ ॥

एबे—अब; **आमि**—मैंने; **इहाँ**—यहाँ; **आनि'**—लाकर; **करिलाङ विदाय**—चले जाने को कहा है; **याहाँ इच्छा**—जहाँ भी वह चाहे; **याह**—जाना; **आमा-सने**—मेरे साथ; **नाहि आर**—नहीं है; **दाय**—जिम्मेदारी।

अनुवाद

"मैं इसे यहाँ लाया हूँ, अतएव मैं इसे अब विदा कर रहा हूँ। अब वह जहाँ चाहे जा सकता है, क्योंकि मैं आगे इसके लिए उत्तरदायी नहीं हूँ।"

तात्पर्य

काला कृष्णदास को खानाबदोश लोगों ने स्त्रियों का लालच देकर अपने वश में कर लिया था। *माया* इतनी प्रबल होती है कि काला कृष्णदास श्री चैतन्य महाप्रभु का साथ छोड़कर खानाबदोश स्त्रियों के साथ चला गया। कोई व्यक्ति श्री चैतन्य महाप्रभु की संगति में भी क्यों न रहे, वह माया से मोहित होकर अपनी तुच्छ स्वतन्त्रता के कारण महाप्रभु का संग छोड़ सकता है। माया से बूरी तरह वशीभूत व्यक्ति ही ऐसा अभागा हो सकता है कि वह महाप्रभु का संग त्याग दे। फिर भी जब तक मनुष्य अत्यन्त विवेकशील नहीं होता, उसे माया का प्रभाव खींच सकता है, भले ही वह श्री चैतन्य महाप्रभु का निजी सहायक क्यों न हो। तो फिर औरों का कहना ही क्या? भट्टथारी लोग अपनी संख्या बढ़ाने के उद्देश्य से बाहरी लोगों को आकृष्ट करने के लिए स्त्रियों का उपयोग करते थे। यह वास्तविक प्रमाण है, जो यह दिखलाता है कि महाप्रभु की संगति से किसी भी समय पतन हो सकता है। मनुष्य को केवल अपनी थोड़ी-सी स्वतन्त्रता का दुरुपयोग करने की देर है। एक बार पतन होने पर और

भगवान् की संगति से अलग होने पर मनुष्य भौतिक जगत् में कष्ट भोगने का पात्र बन जाता है। यद्यपि महाप्रभु काला कृष्णदास का परित्याग कर चुके थे, किन्तु उसे दूसरा अवसर प्रदान किया गया, जैसाकि अगले श्लोकों से प्रकट होता है।

এত শুনি' কৃষ্ণদাস কান্দিতে লাগিল ।
মধ্যাহ্ন করিতে মহাপ্রভু চলি' গেল ॥ ৬৬॥

এত শুনি' কৃষ্ণদাস কান্দিতে লাগিল ।
মধ্যাহ্ন করিতে মহাপ্রভু চলি' গেল ॥ ৬৬॥

এত শুনি'—यह सुनकर; **কৃষ্ণদাস**—काला कृष्णदास; **কান্দিতে লাগিল**—रोने लगा; **মধ্যাহ্ন**—दोपहर का भोजन; **করিতে**—करने के लिए; **মহাপ্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **চলি' গেল**—चले गये।

अनुवाद

यह सुनकर कि महाप्रभु ने उसका परित्याग कर दिया है, काला कृष्णदास रोने लगा। किन्तु महाप्रभु ने उसकी परवाह नहीं की और वे अपना दोपहर का भोजन करने तुरन्त चले गये।

নিত্যানন্দ, জগদানন্দ, মুকুন্দ, দামোদর ।
চারি-জনে যুক্তি তবে করিলা অন্তর ॥ ৬৭॥

নিত্যানন্দ, জগদানন্দ, মুকুন্দ, দামোদর ।
চারি-জনে যুক্তি তবে করিলা অন্তর ॥ ৬৭॥

নিত্যানন্দ—नित्यानन्द प्रभु; **জগদানন্দ**—जगदानन्द; **মুকুন্দ**—मुकुन्द; **দামোদর**—दामोदर; **চারি-জনে**—चारों व्यक्ति; **যুক্তি**—तरकीब; **তবে**—तब; **করিলা**—की; **অন্তর**—मन में।

अनुवाद

इसके बाद नित्यानन्द प्रभु, जगदानन्द, मुकुन्द तथा दामोदर आदि अन्य भक्त किसी युक्ति पर विचार करने लगे।

तात्पर्य

भले ही पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् किसी व्यक्ति का परित्याग कर दें, किन्तु

भक्त उसका परित्याग नहीं करते। अतएव भगवान् के भक्त भगवान् से भी अधिक कृपालु होते हैं। श्रील नरोत्तम दास का गीत है—*छाड़िया वैष्णव सेवा निस्तार पेयेछे केबा*—शुद्ध भक्तों की सेवा में लगे बिना भौतिक जाल से किसी का उद्धार नहीं हो सकता। कभी-कभी स्वयं भगवान् अत्यन्त कठोर हो सकते हैं, किन्तु भक्त सदैव दयालु रहते हैं। इस तरह काला कृष्णदास को उपर्युक्त चार भक्तों की कृपा प्राप्त हो सकी।

গৌড়-দেশে পাঠাইতে চাহি এক-জন ।
'আই'কে কহিবে যাই, প্রভুর আগমন ॥৬৮॥

গৌড়-দেশে পাঠাইতে চাহি এক-জন ।
'আই'কে কহিবে যাই, প্রভুর আগমন ॥ ৬৮ ॥

গৌড়-দেশে—बंगाल; **পাঠাইতে**—भेजने के लिए; **চাহি**—हम चाहते हैं; **এক-জন**—एक व्यक्ति को; **আইকে**—माता शचीदेवी को; **কহিবে**—सूचना देने के लिए; **যাই**—जाना; **প্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **আগমন**—वापसी।

अनुवाद

महाप्रभु के चारों भक्तों ने विचार किया, "हमें ऐसा एक व्यक्ति चाहिए, जो बंगाल जाकर शचीमाता को श्री चैतन्य महाप्रभु के जगन्नाथ पुरी आने की सूचना दे सके।

অদ্বৈত-শ্রীবাসাদি যত ভক্ত-গণ ।
সবেই আসিবে শুনি' প্রভুর আগমন ॥৬৯॥

অদ্বৈত-শ্রীবাসাদি যত ভক্ত-গণ ।
সবেই আসিবে শুনি' প্রভুর আগমন ॥ ৬৯ ॥

অদ্বৈত—अद्वैत प्रभु; **শ্রীবাস-আদি**—श्रीवास आदि सभी भक्त; **যত**—सब; **ভক্ত-গণ**—भक्त; **সবেই**—सभी; **আসিবে**—आयेंगे; **শুনি'**—सुनकर; **প্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **আগমন**—वापसी।

अनुवाद

"श्री चैतन्य महाप्रभु के आगमन का समाचार सुनकर अद्वैत तथा श्रीवास जैसे भक्त उन्हें मिलने के लिए निश्चित रूप से आना चाहेंगे।

এই কৃষ্ণদাসে দিব গৌড়ে পাঠাঞা ।
এত কহি' তারে রাখিলেন আশ্বাসিয়া ॥৭০॥

এइ কৃষ্ণদাসে দিব গৌড়ে পাঠাঞা ।
এত কহি' তারে রাখিলেন আশ্বাসিয়া ॥৭০॥

এइ—इस; **কৃষ্ণদাসে**—काला कृष्णदास को; **দিব**—दूर; **গৌড়ে**—बंगाल; **পাঠাঞা**—हम भेज दें; **এত কহি'**—यह कहकर; **তারে**—उसको; **রাখিলেন**—उन्होंने रख लिया; **আশ্বাসিয়া**—आश्वासन देकर।

अनुवाद

यह कहकर कि, "कृष्णदास को हम बंगाल क्यों न भेज दें" उन सबने कृष्णदास को महाप्रभु की सेवा में लगाये रखा और उसे आश्वस्त किया।

तात्पर्य

चूँकि श्री चैतन्य महाप्रभु ने काला कृष्णदास को निकाल दिया था, इसलिए वह अत्यन्त खिन्न होकर रोने लगा था। अतएव महाप्रभु के भक्तों ने उस पर दया दिखलाइ, उसे आश्वासन दिया और महाप्रभु की सेवा करते रहने के लिए प्रेरित किया।

আর দিনে প্রভু-স্থানে কৈল নিবেদন ।
আজ্ঞা দেহ' গৌড়-দেশে পাঠাই এক-জন ॥৭১॥

আর দিনে প্রভু-স্থানে কৈল নিবেদন ।
আজ্ঞা দেহ' গৌড়-দেশে পাঠাइ এক-জন ॥৭১॥

আর দিনে—अगले दिन; **প্রভু-স্থানে**—श्री चैतन्य महाप्रभु के समक्ष; **কৈল**—किया; **নিবেদন**—निवेदन; **আজ্ঞা দেহ'**—कृपया आज्ञा दें; **গৌড়-দেশে**—बंगाल को; **পাঠাइ**—हम भेज दें; **এক-জন**—एक व्यक्ति को।

अनुवाद

अगले दिन भक्तों ने श्री चैतन्य महाप्रभु से निवेदन किया, "कृपा करके एक व्यक्ति को बंगाल जाने की अनुमति प्रदान करें।

তোমার দক্ষিণ-গমন শুনি' শচী 'আই' ।
অদ্বৈতাদি ভক্ত সব আছে দুঃখ পাই' ॥৭২॥

তোমার দক্ষিণ-গমন শুনি' শচী 'আই' ।
অদ্বৈতাদি ভক্ত সব আছে দুঃখ পাই' ॥৭২॥

তোমার—आपकी; **দক্ষিণ-গমন**—दक्षिण भारत की यात्रा; **শুনি'**—सुनकर; **শচী আই**—माता शची; **অদ্বৈত-আদি**—श्री अद्वैत प्रभु तथा अन्य; **ভক্ত**—भक्त; **সব**—सब; **আছে**—रहते हैं; **দুঃখ পাই'**—अत्यन्त दुःखी।

अनुवाद

"माता शची तथा अद्वैत प्रभु आदि भक्तगण दक्षिण भारत भ्रमण से आपके पुनरागमन का समाचार न पाकर अत्यन्त दुःखी हैं।

এক-জন যাই' কহুক্শুভ সমাচার ।
প্রভু কহে,——সেই কর, যে ইচ্ছা তোমার ॥৭৩॥

এক-জন যাই' কহুক্শুভ সমাচার ।
প্রভু কহে,——সেই কর, যে ইচ্ছা তোমার ॥৭৩॥

এক-জন—एक व्यक्ति; **যাই'**—जाकर; **কহুক্**—सूचना दे; **শুভ সমাচার**—यह शुभ समाचार; **প্রভু কহে**—महाप्रभु ने उत्तर दिया; **সেই কর**—वही करो; **যে**—जो; **ইচ্ছা**—इच्छा; **তোমার**—आपकी।

अनुवाद

"एक व्यक्ति बंगाल जाकर उन्हें जगन्नाथ पुरी में आपके पुनरागमन का शुभ समाचार दे आये।" यह सुनकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "आप लोग जो चाहें तय करें।"

তবে সেই কৃষ্ণদাসে গৌড়ে পাঠাইল ।
বৈষ্ণব-সবাকে দিতে মহা-প্রসাদ দিল ॥৭৪॥

তবে সেই কৃষ্ণদাসে গৌড়ে পাঠাইল ।
বৈষ্ণব-সবাকে দিতে মহা-প্রসাদ দিল ॥৭৪॥

तबे—तत्पश्चात्; **सेइ**—वह; **कृष्णदासे**—कृष्णदास; **गौड़े**—बंगाल को; **पाठाइल**—भेजा; **वैष्णव-सबाके**—सब वैष्णवों को; **दिते**—देने के लिए; **महा-प्रसाद**—जगन्नाथ का महाप्रसाद; **दिल**—उन्होंने दिया।

अनुवाद

इस तरह काला कृष्णदास बंगाल भेज दिया गया और वहाँ बाँटे जाने के लिए उसे भगवान् जगन्नाथ का पर्याप्त प्रसाद दे दिया गया।

तबे गौड़-देशे आइला काला-कृष्णदास ।
नवद्वीपे गेल तेँह शची-आइ-पाश ॥७५॥

तबे गौड़-देशे आइला काला-कृष्णदास ।
नवद्वीपे गेल तेंह शची-आइ-पाश ॥७५॥

तबे—तब; **गौड़-देशे**—बंगाल; **आइला**—आया; **काला-कृष्णदास**—काला कृष्णदास; **नवद्वीपे**—नवद्वीप; **गेल**—गया; **तेंह**—वह; **शची-आइ-पाश**—माता शची के समक्ष।

अनुवाद

तब काला कृष्णदास बंगाल गया, जहाँ सर्वप्रथम वह माता शची को मिलने नवद्वीप पहुँचा।

महा-प्रसाद दिया ताँरे कैल नमस्कार ।
दक्षिण हैते आइला प्रभु,——कहे समाचार ॥७६॥

महा-प्रसाद दिया ताँरे कैल नमस्कार ।
दक्षिण हैते आइला प्रभु,——कहे समाचार ॥७६॥

महा-प्रसाद दिया—महाप्रसाद देकर; **ताँरे**—शची माता को; **कैल नमस्कार**—झुककर प्रणाम किया; **दक्षिण हैते**—दक्षिण भारत की यात्रा से; **आइला**—लौट आये; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कहे समाचार**—यह समाचार दिया।

अनुवाद

शची माता के पास पहुँचकर काला कृष्णदास ने प्रथम उन्हें नमस्कार किया और महाप्रसाद भेंट किया। फिर उसने यह शुभ समाचार दिया कि श्री चैतन्य महाप्रभु अपनी दक्षिण भारत की यात्रा से लौट आये हैं।

শুনিয়া আনন্দিত হৈল শচীমাতার মন ।
শ্রীবাসাদি আর যত যত ভক্ত-গণ ॥৭৭॥

শুনিয়া আনন্দিত হৈল শচীমাতার মন ।
শ্রীবাসাদি আর যত যত ভক্ত-গণ ॥ ৭৭ ॥

শুনিয়া—सुनकर; **আনন্দিত**—अत्यन्त आनन्दित; **হৈল**—हो गया; **শচী-মাতার**—शची माता का; **মন**—मन; **শ্রীবাস-আদি**—श्रीवास आदि; **আর**—तथा अन्य; **যত যত**—सभी; **ভক্ত-গণ**—भक्तगण।

अनुवाद

इस शुभ समाचार से माता शची तथा श्रीवास ठाकुर इत्यादि नवद्वीप के सारे भक्तों को परम आनन्द हुआ।

শুনিয়া সবার হৈল পরম উল্লাস ।
অদ্বৈত-আচার্য-গৃহে গেলা কৃষ্ণদাস ॥৭৮॥

শুনিয়া সবার হৈল পরম উল্লাস ।
অদ্বৈত-আচার্য্য-গৃহে গেলা কৃষ্ণদাস ॥ ৭৮ ॥

শুনিয়া—सुनकर; **সবার**—सबको; **হৈল**—हो गया; **পরম**—परम; **উল্লাস**—आनन्द; **অদ্বৈত-আচার্য্য**—अद्वैत आचार्य प्रभु के; **গৃহে**—घर में; **গেলা**--गया; **কৃষ্ণদাস**—कृष्णदास।

अनुवाद

महाप्रभु की पुरी में वापसी सुनकर सभी लोग अत्यन्त हर्षित हुए। इसके बाद कृष्णदास अद्वैत आचार्य के घर गया।

আচার্যেরে প্রসাদ দিয়া করি' নমস্কার ।
সম্যক্কহিল মহাপ্রভুর সমাচার ॥৭৯॥

আচার্য্যেরে প্রসাদ দিয়া করি' নমস্কার ।
সম্যক্কহিল মহাপ্রভুর সমাচার ॥ ৭৯ ॥

আচার্য্যেরে—श्री अद्वैत आचार्य को; **প্রসাদ**—भगवान् जगन्नाथ का प्रसाद; **দিয়া**—देकर; **করি'**—करके; **নমস্কার**—प्रणाम; **সম্যক্**—पूर्णतया; **কহিল**—सूचना दी; **মহাপ্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **সমাচার**—समाचार।

अनुवाद

नमस्कार करने के बाद कृष्णदास ने अद्वैत आचार्य को महाप्रसाद दिया। फिर उसने उनसे महाप्रभु का समाचार विस्तार में बतलाया।

শুনি' আচার্য-গোসাঞির আনন্দ হইল ।
প্রেমাবেশে হুঙ্কার বহু নৃত্য-গীত কৈল ॥ ৮০ ॥

शुनि' आचार्य-गोसाञिर आनन्द हइल ।
प्रेमावेशे हुङ्कार बहु नृत्य-गीत कैल ॥ ८० ॥

शुनि'—सुनकर; **आचार्य**—अद्वैत आचार्य; **गोसाञिर**—गुरु को; **आनन्द हइल**—आनन्द हुआ; **प्रेम-आवेशे**—प्रेमावेश; **हुङ्कार**—गर्जन; **बहु**—नाना प्रकार का; **नृत्य-गीत**—नृत्य तथा कीर्तन; **कैल**—किया।

अनुवाद

जब अद्वैत आचार्य ने श्री चैतन्य महाप्रभु के लौट आने का समाचार सुना, तो वे अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंने प्रेमावेश में आकर हुँकार की और बहुत देर तक नृत्य और कीर्तन करते रहे।

হরিদাস ঠাকুরের হৈল পরম আনন্দ ।
বাসুদেব দত্ত, গুপ্ত মুরারি, সেন শিবানন্দ ॥ ৮১ ॥

हरिदास ठाकुरेर हैल परम आनन्द ।
वासुदेव दत्त, गुप्त मुरारि, सेन शिवानन्द ॥ ८१ ॥

हरिदास ठाकुरेर—हरिदास ठाकुर को; **हैल**—हुआ; **परम**—अत्यन्त; **आनन्द**—आनन्द; **वासुदेव दत्त**—वासुदेव दत्त; **गुप्त मुरारि**—मुरारि गुप्त; **सेन शिवानन्द**—शिवानन्द सेन।

अनुवाद

यह शुभ समाचार पाकर हरिदास ठाकुर परम प्रसन्न हुए। इसी तरह वासुदेव दत्त, मुरारि गुप्त तथा शिवानन्द सेन भी प्रसन्न हुए।

আচার্যরত্ন, আর পণ্ডিত বক্রেশ্বর ।
আচার্যনিধি, আর পণ্ডিত গদাধর ॥ ৮২ ॥

आचार्य्यरत्न, आर पण्डित वक्रेश्वर ।
आचार्य्यनिधि, आर पण्डित गदाधर ॥ ८२ ॥

आचार्य्यरत्न—आचार्यरत्न; **आर**—और; **पण्डित वक्रेश्वर**—वक्रेश्वर पण्डित; **आचार्य्यनिधि**—आचार्यनिधि; **आर**—एवं; **पण्डित गदाधर**—गदाधर पण्डित।

अनुवाद

इस शुभ समाचार से आचार्यरत्न, वक्रेश्वर पण्डित, आचार्यनिधि तथा गदाधर पण्डित सभी अत्यन्त प्रसन्न हुए।

শ্রীরাম পণ্ডিত আর পণ্ডিত দামোদর ।
শ্রীমান্পণ্ডিত, আর বিজয়, শ্রীধর ॥ ৮৩ ॥

श्रीराम पण्डित आर पण्डित दामोदर ।
श्रीमान्पण्डित, आर विजय, श्रीधर ॥ ८३ ॥

श्री-राम पण्डित—श्रीराम पण्डित; **आर**—तथा; **पण्डित दामोदर**—दामोदर पण्डित; **श्रीमान् पण्डित**—श्रीमान् पण्डित; **आर**—और; **विजय**—विजय; **श्रीधर**—श्रीधर।

अनुवाद

श्रीराम पण्डित, दामोदर पण्डित, श्रीमान पण्डित, विजय तथा श्रीधर भी इस समाचार को सुनकर परम प्रसन्न हुए।

রাঘব-পণ্ডিত, আর আচার্য নন্দন ।
কতেক কহিব আর যত প্রভুর গণ ॥ ৮৪ ॥

राघव-पण्डित, आर आचार्य्य नन्दन ।
कतेक कहिब आर यत प्रभुर गण ॥ ८४ ॥

राघव-पण्डित—राधव पण्डित; **आर**—और; **आचार्य्य नन्दन**—अद्वैत आचार्य के पुत्र; **कतेक**—कितने; **कहिब**—मैं वर्णन करूँ; **आर**—अन्य; **यत**—सब; **प्रभुर गण**—श्री चैतन्य महाप्रभु के संगी।

अनुवाद

राघव पंडित, अद्वैत आचार्य का पुत्र तथा समस्त भक्तगण अत्यन्त प्रसन्न हुए। मैं कहाँ तक और भक्तों के नामों का वर्णन करूँ?

শুনিয়া সবার হৈল পরম উল্লাস ।
সবে মেলি' গেলা শ্রী-অদ্বৈতের পাশ ॥ ৮৫ ॥

শুনিয়া সবার হৈল পরম উল্লাস ।
সবে মেলি' গেলা শ্রী-অদ্বৈতের পাশ ॥ ৮৫ ॥

শুনিয়া—सुनकर; **সবার**—प्रत्येक को; **হৈল**—हुआ; **পরম উল্লাস**—परम आनन्द; **সবে মেলি'**—सब मिलकर; **গেলা**—गये; **শ্রী-অদ্বৈতের পাশ**—श्री अद्वैत आचार्य के घर।

अनुवाद

वे सभी अत्यन्त प्रसन्न थे, और सभी मिलकर अद्वैत आचार्य के घर आये।

আচার্যের সবে কৈল চরণ বন্দন ।
আচার্য-গোসাঞি সবারে কৈল আলিঙ্গন ॥ ৮৬ ॥

আচার্য্যের সবে কৈল চরণ বন্দন ।
আচার্য্য-গোসাঞি সবারে কৈল আলিঙ্গন ॥ ৮৬ ॥

আচার্য্যের—अद्वैत आचार्य का; **সবে**—सब; **কৈল**—किया; **চরণ বন্দন**—चरण वन्दन; **আচার্য্য-গোসাঞি**—अद्वैत आचार्य; **সবারে**—सबको; **কৈল**—किया; **আলিঙ্গন**—गले लगाया।

अनुवाद

सारे भक्तों ने अद्वैत आचार्य के चरणकमलों पर नमस्कार किया, और अद्वैत आचार्य ने उन सबका आलिंगन किया।

দিন দুই-তিন আচার্য মহোৎসব কৈল ।
নীলাচল যাইতে আচার্য যুক্তি দৃঢ় কৈল ॥ ৮৭ ॥

দিন দুই-তিন আচার্য্য মহোৎসব কৈল ।
নীলাচল য়াইতে আচার্য্য য়ুক্তি দৃঢ় কৈল ॥ ৮৭ ॥

দিন দুই-তিন—दो तीन दिन के लिए; **আচার্য্য**—अद्वैत आचार्य; **মহোৎসব**—महोत्सव; **কৈল**—किया; **নীলাচল**—जगन्नाथ पुरी; **য়াইতে**—जाने के लिए; **আচার্য্য**—अद्वैत आचार्य; **য়ুক্তি**—निर्णय; **দৃঢ়**—दृढ़; **কৈল**—किया।

अनुवाद

तब अद्वैत आचार्य ने एक उत्सव मनाया, जो दो-तीन दिनों तक चला। तत्पश्चात् उन सबने जगन्नाथ पुरी जाने का दृढ़ संकल्प किया।

সবে মেলি' নবদ্বীপে একত্র হঞা ।
নীলাদ্রি চলিল শচীমাতার আজ্ঞা লঞা ॥৮৮॥

सबे मेलि' नवद्वीपे एकत्र हञा ।
नीलाद्रि चलिल शचीमातार आज्ञा लञा ॥ ८८ ॥

सबे—सब; **मेलि'**—मिलकर; **नवद्वीपे**—नवद्वीप में; **एकत्र हञा**—इकट्ठे होकर; **नीलाद्रि**—जगन्नाथ पुरी को; **चलिल**—प्रस्थान किया; **शची-मातार**—माता शची की; **आज्ञा**—आज्ञा; **लञा**—लेकर।

अनुवाद

सारे भक्त नवद्वीप में एकत्र हुए और शची माता की आज्ञा लेकर नीलाद्रि अर्थात् जगन्नाथ पुरी के लिए चल दिये।

প্রভুর সমাচার শুনি' কুলীন-গ্রাম-বাসী ।
সত্যরাজ-রামানন্দ মিলিলা সবে আসি' ॥৮৯॥

प्रभुर समाचार शुनि' कुलीन-ग्राम-वासी ।
सत्यराज-रामानन्द मिलिला सबे आसि' ॥ ८९ ॥

प्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **समाचार**—समाचार; **शुनि'**—सुनकर; **कुलीन-ग्राम-वासी**—कुलीन ग्राम के निवासी; **सत्यराज**—सत्यराज; **रामानन्द**—रामानन्द; **मिलिला**—मिले; **सबे**—सब; **आसि'**—आकर।

अनुवाद

सत्यराज, रामानन्द तथा अन्य भक्त जो कुलीन ग्राम के निवासी थे, आकर अद्वैत आचार्य के साथ हो लिए।

মুকুন্দ, নরহরি, রঘুনন্দন খণ্ড হৈতে ।
আচার্যের ঠাঞি আইলা নীলাচল যাইতে ॥৯০॥

मुकुन्द, नरहरि, रघुनन्दन खण्ड हैते ।
आचार्येर ठाञि आइला नीलाचल याइते ॥ ९० ॥

मुकुन्द—मुकुन्द; **नरहरि**—नरहरि; **रघुनन्दन**—रघुनन्दन; **खण्ड हैते**—खण्ड नामक स्थान से; **आचार्येर ठाञि**—अद्वैत आचार्य के पास; **आइला**—आये; **नीलाचल याइते**—नीलाचल (जगन्नाथ पुरी) जाने के लिए।

अनुवाद

मुकुन्द, नरहरि, रघुनन्दन तथा अन्य सब लोग खण्ड नामक स्थान से अद्वैत आचार्य के घर आये, जिससे वे उनके साथ जगन्नाथ पुरी जा सकें।

সে-কালে দক্ষিণ হৈতে পরমানন্দ-পুরী ।
গঙ্গা-তীরে-তীরে আইলা নদীয়া নগরী ॥৯১॥

সে-কালে দক্ষিণ হৈতে পরমানন্দ-পুরী ।
গঙ্গা-তীরে-তীরে আইলা নদীয়া নগরী ॥ ৯১ ॥

সে-কালে—উস সময়; **দক্ষিণ হৈতে**—দক্ষিণ से; **পরমানন্দ-পুরী**—परमानन्द पुरी; **গঙ্গা-তীরে-তীরে**—गंगा के किनारे किनारे; **আইলা**—आये; **নদীয়া নগরী**—नदिया नगर को।

अनुवाद

उसी समय परमानन्द पुरी दक्षिण भारत से आ गये। वे गंगा नदी के किनारे-किनारे यात्रा करते हुए अन्ततः नदिया नगरी पहुँचे।

আইর মন্দিরে সুখে করিলা বিশ্রাম ।
আই তাঁরে ভিক্ষা দিলা করিয়া সম্মান ॥৯২॥

আইর মন্দিরে সুখে করিলা বিশ্রাম ।
আই তাঁরে ভিক্ষা দিলা করিয়া সম্মান ॥ ৯২ ॥

আইর মন্দিরে—शचीमाता के घर पर; **সুখে**—सुखपूर्वक; **করিলা**—लिया; **বিশ্রাম**—विश्राम; **আই**—माता शची; **তাঁরে**—उनको; **ভিক্ষা দিলা**—भोजन दिया; **করিয়া সম্মান**—सम्मानपूर्वक।

अनुवाद

नवद्वीप में परमानन्द पुरी ने शचीमाता के घर में ही अपना रहने और भोजन करने का स्थान बनाया। वे उन्हें हर वस्तु बड़े ही आदर के साथ देती थीं।

প্রভুর আগমন তেঁহ তাহাঁঞি শুনিল ।
শীঘ্র নীলাচল যাইতে তাঁর ইচ্ছা হৈল ॥৯৩॥

प्रभुर आगमन तेंह ताहाँञि शुनिल ।
शीघ्र नीलाचल याइते ताँर इच्छा हैल ॥ ९३ ॥

प्रभुर आगमन—श्री चैतन्य महाप्रभु की वापसी; **तेंह**—उन्होंने; **ताहाँञि**—वहाँ; **शुनिल**—सुना; **शीघ्र**—शीघ्र; **नीलाचल**—जगन्नाथ पुरी को; **याइते**—जाने के लिए; **ताँर**—उनकी; **इच्छा**—इच्छा; **हैल**—हो गई।

अनुवाद

जब परमानन्द पुरी शचीमाता के घर पर रह रहे थे, तभी उन्होंने श्री चैतन्य महाप्रभु के जगन्नाथ पुरी लौटने का समाचार सुना। अतएव उन्होंने शीघ्रातिशीघ्र वहाँ जाने का निश्चय किया।

प्रभुर एक भक्त—'द्विज कमलाकान्त' नाम ।
ताँरे लञा नीलाचले करिला प्रयाण ॥ ९४ ॥

प्रभुर एक भक्त—'द्विज कमलाकान्त' नाम ।
ताँरे लञा नीलाचले करिला प्रयाण ॥ ९४ ॥

प्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **एक भक्त**—एक भक्त; **द्विज कमलाकान्त**—द्विज कमलाकान्त; **नाम**—नामक; **ताँरे**—उसको; **लञा**—अपना साथी स्वीकार करके; **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी को; **करिला**—किया; **प्रयाण**—प्रस्थान।

अनुवाद

वहाँ पर श्री चैतन्य महाप्रभु का एक भक्त था, जिसका नाम द्विज कमलाकान्त था, जिसे परमानन्द पुरी अपने साथ जगन्नाथ पुरी लेते गये।

सत्वरे आसिया तेंह मिलिला प्रभुरे ।
प्रभुर आनन्द हैल पाञा ताँहारे ॥ ९५ ॥

सत्वरे आसिया तेंह मिलिला प्रभुरे ।
प्रभुर आनन्द हैल पाञा ताँहारे ॥ ९५ ॥

सत्वरे—अति शीघ्र; **आसिया**—आकर; **तेंह**—वे; **मिलिला**—मिले; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु से; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **आनन्द**—आनन्द; **हैल**—हुआ; **पाञा**—पाकर; **ताँहारे**—उनसे।

अनुवाद

परमानन्द पुरी शीघ्र ही श्री चैतन्य महाप्रभु के स्थान पर आ पहुँचे। महाप्रभु उन्हें देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए।

প্রেমাবেশে কৈল তাঁর চরণ বন্দন ।
তেঁহ প্রেমাবেশে কৈল প্রভুরে আলিঙ্গন ॥৯৬॥

প্রেমাবেশে কৈল তাঁর চরণ বন্দন ।
তেঁহ প্রেমাবেশে কৈল প্রভুরে আলিঙ্গন ॥ ৯৬ ॥

প্রেম-আবেশে—प्रेमावेश में; **কৈল**—किया; **তাঁর**—उनके; **চরণ বন্দন**—चरण वन्दन; **তেঁহ**—परमानन्द पुरी; **প্রেম-আবেশে**—प्रेमावेश में; **কৈল**—किया; **প্রভুরে**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **আলিঙ্গন**—गले लगाया।

अनुवाद

महाप्रभु ने अत्यन्त प्रेमावेश में परमानन्द पुरी के चरणकमलों की पूजा की और परमानन्द पुरी ने भी महाप्रभु का प्रेमावेश में आलिंगन किया।

প্রভু কহে,——তোমা-সঙ্গে রহিতে বাঞ্ছা হয় ।
মোরে কৃপা করি' কর নীলাদ্রি আশ্রয় ॥৯৭॥

প্রভু কহে,——তোমা-সঙ্গে রহিতে বাঞ্ছা হয় ।
মোরে কৃপা করি' কর নীলাদ্রি আশ্রয় ॥ ৯৭ ॥

প্রভু কহে—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **তোমা-সঙ্গে**—आपके साथ; **রহিতে**—रहने के लिए; **বাঞ্ছা হয়**—मेरी इच्छा है; **মোরে**—मुझ पर; **কৃপা করি'**—कृपा करके; **কর**—स्वीकार करें; **নীলাদ্রি**—जगन्नाथ पुरी में; **আশ্রয়**—आश्रय।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "कृपया मेरे साथ रुकें और जगन्नाथ पुरी की शरण ग्रहण करके मेरे ऊपर कृपा करें।"

পুরী কহে,——তোমা-সঙ্গে রহিতে বাঞ্ছা করি' ।
গৌড় হৈতে চলি' আইলাঙ নীলাচল-পুরী ॥৯৮॥

पुरी कहे,——तोमा-सङ्गे रहिते वाञ्छा करि' ।
गौड़ हैते चलि' आइलाङ नीलाचल-पुरी ॥ ९८ ॥

पुरी कहे—परमानन्द पुरी ने उत्तर दिया; **तोमा-सङ्गे**—आपके साथ; **रहिते**—रहने के लिए; **वाञ्छा करि'**—इच्छा करके; **गौड़ हैते**—बंगाल से; **चलि'**—यात्रा करके; **आइलाङ**—मैं आया हूँ; **नीलाचल-पुरी**—जगन्नाथ पुरी में।

अनुवाद

परमानन्द पुरी ने कहा, "मैं भी आप के साथ रहना चाहता हूँ। इसीलिए मैं गौड़ देश (बंगाल) से जगन्नाथ पुरी आया हूँ।

দক্ষিণ হৈতে শুনি' তোমার আগমন ।
শচী আনন্দিত, আর যত ভক্ত-গণ ॥ ৯৯ ॥

दक्षिण हैते शुनि' तोमार आगमन ।
शची आनन्दित, आर यत भक्त-गण ॥ ९९ ॥

दक्षिण हैते—दक्षिण भारत से; **शुनि'**—सुनकर; **तोमार आगमन**—आपकी वापसी; **शची**—माता शची; **आनन्दित**—अत्यन्त आनन्दित; **आर**—और; **यत**—सब; **भक्त-गण**—भक्त।

अनुवाद

"नवद्वीप में माता शची तथा अन्य सारे भक्त दक्षिण भारत से आपका पुनरागमन सुनकर अत्यन्त आनन्दित हुए।

সবে আসিতেছেন তোমারে দেখিতে ।
তাঁ-সবার বিলম্ব দেখি' আইলাঙ ত্বরিতে ॥ ১০০ ॥

सबे आसितेछेन तोमारे देखिते ।
ताँ-सबार विलम्ब देखि' आइलाङ त्वरिते ॥ १०० ॥

सबे—सब; **आसितेछेन**—आ रहे हैं; **तोमारे**—आपको; **देखिते**—देखने के लिए; **ताँ-सबार**—उन सबकी; **विलम्ब**—देरी; **देखि'**—देखकर; **आइलाङ**—मैं आया हूँ; **त्वरिते**—बहुत जल्दी।

अनुवाद

"वे सभी आपके दर्शन के लिए यहाँ आ रहे हैं। किन्तु जब मैंने देखा कि वे विलम्ब कर रहे हैं, तो मैं तुरन्त अकेले ही चला आया।"

কাশী-মিশ্রের আবাসে নিভৃতে এক ঘর ।
প্রভু তাঁরে দিল, আর সেবার কিঙ্কর ॥ ১০১ ॥

काशी-मिश्रेर आवासे निभृते एक घर ।
प्रभु ताँरे दिल, आर सेवार किङ्कर ॥ १०१ ॥

काशी-मिश्रेर—काशी मिश्र के; **आवासे**—घर पर; **निभृते**—एकान्त; **एक**—एक; **घर**—कमरा; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँरे**—परमानन्द पुरी को; **दिल**—दिया; **आर**—और; **सेवार**—उनकी सेवा के लिए; **किङ्कर**—एक सेवक।

अनुवाद

काशी मिश्र के घर में एक एकान्त कमरा था, जिसे श्री चैतन्य महाप्रभु ने परमानन्द पुरी को दे दिया। उन्होंने एक सेवक भी दिया।

আর দিনে আইলা স্বরূপ দামোদর ।
প্রভুর অত্যন্ত মর্মী, রসের সাগর ॥ ১০২ ॥

आर दिने आइला स्वरूप दामोदर ।
प्रभुर अत्यन्त मर्मी, रसेर सागर ॥ १०२ ॥

आर दिने—अगले दिन; **आइला**—आये; **स्वरूप दामोदर**—स्वरूप दामोदर; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **अत्यन्त**—बहुत; **मर्मी**—प्रगाढ़ मित्र; **रसेर**—दिव्य रसों का; **सागर**—सागर।

अनुवाद

अगले दिन स्वरूप दामोदर भी आ गये। वे श्री चैतन्य महाप्रभु के घनिष्ठ मित्र थे और दिव्य रसों के सागर थे।

तात्पर्य

शंकराचार्य की गुरु-शिष्य परम्परा में ब्रह्मचारी के नामों में एक नाम "स्वरूप" रहता है। वैदिक परम्परा में संन्यासियों के दस नाम होते हैं और यह प्रथा है कि जो ब्रह्मचारी तीर्थ या आश्रम पदवी वाले संन्यासी का सहायक होता है, उसे स्वरूप की पदवी प्राप्त होती है। दामोदर स्वरूप पहले नवद्वीप में रहते थे और उनका नाम पुरुषोत्तम आचार्य था। जब वे वाराणसी गये, तब उन्होंने तीर्थ पदवीधारी संन्यासी से संन्यास ग्रहण किया। यद्यपि उन्हें ब्रह्मचारी अवस्था में स्वरूप की पदवी मिली थी, किन्तु जब उन्होंने संन्यास लिया तब

भी उन्होंने अपना नाम नहीं बदला। वास्तव में संन्यासी होने पर उन्हें तीर्थ कहा जाना चाहिए था, किन्तु उन्होंने अपना पहला ब्रह्मचारी नाम स्वरूप नहीं बदला।

'पुरुषोत्तम आचार्य' तांर नाम पूर्वाश्रमे ।
नवद्वीपे छिला तेंह प्रभुर चरणे ॥ १०३॥

'पुरुषोत्तम आचार्य' ताँर नाम पूर्वाश्रमे ।
नवद्वीपे छिला तेंह प्रभुर चरणे ॥ १०३॥

पुरुषोत्तम आचार्य—पुरुषोत्तम आचार्य; **ताँर**—उनका; **नाम**—नाम; **पूर्व-आश्रमे**—पिछले आश्रम में; **नवद्वीपे**—नवद्वीप में; **छिला**—थे; **तेंह**—वे; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **चरणे**—चरणों में।

अनुवाद

जब स्वरूप दामोदर श्री चैतन्य महाप्रभु की शरण में नवद्वीप में निवास कर रहे थे, तब उनका नाम पुरुषोत्तम आचार्य था।

प्रभुर सन्न्यास देखि' उन्मत्त हञा ।
सन्न्यास ग्रहण कैल वाराणसी गिया ॥ १०४॥

प्रभुर सन्न्यास देखि' उन्मत्त हञा ।
सन्न्यास ग्रहण कैल वाराणसी गिया ॥ १०४॥

प्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **सन्न्यास देखि'**—संन्यास देखने पर; **उन्मत्त हञा**—उन्मत्त होकर; **सन्न्यास ग्रहण कैल**—उन्होंने भी संन्यास ग्रहण कर लिया; **वाराणसी**—वाराणसी; **गिया**—जाकर।

अनुवाद

जब उन्होंने देखा कि श्री चैतन्य महाप्रभु ने संन्यास ग्रहण कर लिया है, तो पुरुषोत्तम आचार्य उन्मत्त हो उठे और संन्यास ग्रहण करने तुरन्त वाराणसी गये।

'चैतन्यानन्द' गुरु ताँर आज्ञा दिलेन ताँरे ।
वेदान्त पड़िया पड़ाओ समस्त लोकेरे ॥ १०५॥

'चैतन्यानन्द' गुरु ताँर आज्ञा दिलेन ताँरे ।
वेदान्त पड़िया पड़ाओ समस्त लोकेरे ॥ १०५ ॥

चैतन्य-आनन्द—चैतन्यानन्द भारती के नाम के; **गुरु**—गुरु ने; **ताँर**—उनको; **आज्ञा**—आज्ञा; **दिलेन**—दी; **ताँरे**—उनको; **वेदान्त पड़िया**—*वेदान्त-सूत्र* पढ़कर; **पड़ाओ**—पढ़ाओ; **समस्त**—सब; **लोकेरे**—लोगों को।

अनुवाद

संन्यास के अन्त में उनके गुरु चैतन्यानन्द भारती ने उन्हें आदेश दिया, "*वेदान्त-सूत्र* पढ़ो और अन्यों को इसकी शिक्षा दो।"

परम विरक्त तेँह परम पण्डित ।
काय-मने आश्रियाछे श्री-कृष्ण-चरित ॥ १०६ ॥

परम विरक्त तेंह परम पण्डित ।
काय-मने आश्रियाछे श्री-कृष्ण-चरित ॥ १०६ ॥

परम—परम; **विरक्त**—विरक्त; **तेंह**—वे; **परम**—परम; **पण्डित**—पण्डित, विद्वान; **काय-मने**—तन तथा मन से; **आश्रियाछे**—आश्रय लिया; **श्री-कृष्ण-चरित**—श्रीकृष्ण के चरित्र का।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर परम विरक्त तथा महान् पण्डित थे। उन्होंने आत्मा तथा मन से पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण की शरण ग्रहण की।

'निश्चिन्ते कृष्ण भजिब' एई त' कारणे ।
उन्मादे करिल तेँह सन्न्यास ग्रहणे ॥ १०७ ॥

'निश्चिन्ते कृष्ण भजिब' एइ त' कारणे ।
उन्मादे करिल तेंह सन्न्यास ग्रहणे ॥ १०७ ॥

निश्चिन्ते—निश्चिन्त; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण की; **भजिब**—मैं पूजा करूँगा; **एइ**—इसके लिए; **त'**—निश्चित रूप से; **कारणे**—कारण; **उन्मादे**—उन्माद में; **करिल**—किया; **तेंह**—उन्होंने; **सन्न्यास**—संन्यास; **ग्रहणे**—ग्रहण।

अनुवाद

वे बिना किसी उपद्रव के श्रीकृष्ण की पूजा करने के लिए अत्यन्त

उत्सुक रहते थे, इसीलिए प्रायः उन्मादावस्था में उन्होंने संन्यास स्वीकार कर लिया।

सन्न्यास करिला शिखा-सूत्र-त्याग-रूप ।
योग-पट्ट ना निल, नाम हैल 'स्वरूप' ॥ १०८॥

सन्न्यास करिला शिखा-सूत्र-त्याग-रूप ।
योग-पट्ट ना निल, नाम हैल 'स्वरूप' ॥ १०८॥

सन्न्यास करिला—संन्यास ग्रहण किया; **शिखा**—बालों की शिखा; **सूत्र**—जनेऊ, यज्ञोपवीत; **त्याग**—त्यागकर; **रूप**—के रूप में; **योग-पट्ट**—गेरुए रंग की वेशभूषा; **ना निल**—स्वीकार नहीं किया; **नाम**—नाम; **हैल**—था; **स्वरूप**—स्वरूप।

अनुवाद

संन्यास ग्रहण करने के बाद पुरुषोत्तम आचार्य ने नियमानुसार अपनी चोटी तथा जनेऊ तो त्याग दिये, किन्तु उन्होंने गेरुवा वस्त्र नहीं स्वीकार किया। उन्होंने संन्यासी पदवी भी नहीं स्वीकार की, अपितु नैष्ठिक ब्रह्मचारी बने रहे।

तात्पर्य

संन्यास आश्रम के विधि-विधान होते हैं। मनुष्य को आठ प्रकार के श्राद्ध करने पड़ते हैं। उसे अपने पुरखों का तर्पण करना पड़ता है और *विरजा-होम* यज्ञ करना होता है। फिर उसे शिखा कटानी पड़ती है और जनेऊ भी त्याग देना पड़ता है। संन्यास ग्रहण करने के ये प्रारम्भिक कृत्य हैं। स्वरूप दामोदर ने इन सबको स्वीकार कर लिया। किन्तु पुरुषोत्तम आचार्य ने गेरुवा वस्त्र, संन्यासी नाम या दण्ड स्वीकार नहीं किया। इसलिए वे अपना ब्रह्मचारी नाम ही रखे रहे। वास्तव में पुरुषोत्तम आचार्य ने विधिवत् संन्यास नहीं लिया, अपितु उन्होंने सांसारिक जीवन से विरक्ति ले ली थी। वे संन्यास आश्रम की औपचारिकता से अपनी शान्ति भंग नहीं करना चाहते थे। वे शान्त भाव से श्रीकृष्ण की पूजा करना चाहते थे, इसीलिए उन्होंने मन और आत्मा से संन्यास ग्रहण कर लिया, किन्तु उसके दिखावे में नहीं पड़े। विरक्ति का अर्थ ही है कुछ न करके एकमात्र पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् कृष्ण की सेवा करना। जब कोई व्यक्ति इस पद पर

भगवान् को प्रसन्न करने का प्रयास करता है, तो वह संन्यासी तथा योगी दोनों होता है। इसकी पुष्टि *भगवद्गीता* (६.१) में की गई है :

श्रीभगवान् उवाच
अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः।
स संन्यासी च योगी च न निरग्निर्नचाक्रियः॥

"पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् ने कहा, 'जो अपने कर्मफल से विरक्त है और जो नियत कर्म करता है, वह संन्यासी है और वास्तविक योगी है; न कि वह जो न तो अग्नि जलाता है और न कोई कर्म करता है।'"

গুরু-ঠাঞি আজ্ঞা মাগি' আইলা নীলাচলে ।
রাত্রি-দিনে কৃষ্ণ-প্রেম-আনন্দ-বিহ্বলে ॥ ১০৯॥

गुरु-ठाञि आज्ञा मागि' आइला नीलाचले ।
रात्रि-दिने कृष्ण-प्रेम-आनन्द-विह्वले ॥ १०९॥

गुरु-ठाञि—अपने गुरु से; **आज्ञा मागि'**—आज्ञा माँगकर; **आइला**—आ गये; **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी; **रात्रि-दिने**—दिन रात; **कृष्ण-प्रेम-आनन्द**—कृष्ण-प्रेम के आनन्द में; **विह्वले**—विह्वल होकर।

अनुवाद

अपने संन्यास-गुरु से आज्ञा लेकर स्वरूप दामोदर नीलाचल गये और वहाँ उन्होंने श्री चैतन्य महाप्रभु की शरण ग्रहण की। फिर वे अहर्निश कृष्ण के प्रेम में आनन्दविह्वल होकर भगवान् की प्रेममयी सेवा में दिव्य रस का आस्वादन करने लगे।

পাণ্ডিত্যের অবধি, বাক্য নাহি কারো সনে ।
নির্জনে রহয়ে, লোক সব নাহি জানে ॥ ১১০॥

पाण्डित्येर अवधि, वाक्य नाहि कारो सने ।
निर्जने रहये, लोक सब नाहि जाने ॥ ११०॥

पाण्डित्येर अवधि—ज्ञान की पराकाष्ठा; **वाक्य नाहि**—शब्द नहीं; **कारो सने**—किसी से; **निर्जने**—किसी एकान्त स्थान में; **रहये**—रहने लगे; **लोक**—सामान्य लोग; **सब**—सब; **नाहि जाने**—नहीं जान सके।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर पाण्डित्य की पराकाष्ठा थे, किन्तु वे किसी से एक शब्द भी नहीं बोलते थे। वे निर्जन स्थान में रहते थे और कोई यह नहीं जान सका कि वे कहाँ थे।

कृष्ण-रस-तत्त्व-वेत्ता, देह——प्रेम-रूप ।
साक्षात्महाप्रभुर द्वितीय स्वरूप ॥ १११॥

कृष्ण-रस-तत्त्व-वेत्ता, देह——प्रेम-रूप ।
साक्षात्महाप्रभुर द्वितीय स्वरूप ॥ १११॥

कृष्ण-रस—कृष्ण सम्बन्धी दिव्य रस; **तत्त्व**—तत्त्व के; **वेत्ता**—जानकार; **देह**—शरीर; **प्रेम-रूप**—प्रेम का रूप; **साक्षात्**—साक्षात्; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **द्वितीय**—दूसरा; **स्वरूप**—रूप।

अनुवाद

श्री स्वरूप दामोदर साक्षात् प्रेमस्वरूप थे और कृष्ण-रस के ज्ञान को पूर्णतया जानने वाले थे। वे श्री चैतन्य महाप्रभु के द्वितीय विस्तार के प्रत्यक्ष प्रतिनिधि-रूप थे।

ग्रन्थ, श्लोक, गीत केह प्रभु-पाशे आने ।
स्वरूप परीक्षा कैले, पाछे प्रभु शुने ॥ ११२॥

ग्रन्थ, श्लोक, गीत केह प्रभु-पाशे आने ।
स्वरूप परीक्षा कैले, पाछे प्रभु शुने ॥ ११२॥

ग्रन्थ—शास्त्र; **श्लोक**—श्लोक; **गीत**—गीत; **केह**—कोई भी; **प्रभु-पाशे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के पास; **आने**—लाता है; **स्वरूप**—स्वरूप दामोदर; **परीक्षा कैले**—परीक्षा करने के बाद; **पाछे**—बाद में; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **शुने**—सुनते।

अनुवाद

यदि कोई पुस्तक लिखता, श्लोक तथा गीत बनाता और उन्हें श्री चैतन्य महाप्रभु के समक्ष सुनाना चाहता, तो सर्वप्रथम स्वरूप दामोदर उनकी परीक्षा करते और फिर शुद्ध रूप में उसे महाप्रभु के सामने रखते। केवल तभी श्री चैतन्य महाप्रभु सुनने के लिए राजी होते।

ভক্তি-সিদ্ধান্ত-বিরুদ্ধ, আর রসাভাস ।
শুনিতে না হয় প্রভুর চিত্তের উল্লাস ॥১১৩॥

भक्ति-सिद्धान्त-विरुद्ध, आर रसाभास ।
शुनिते ना हय प्रभुर चित्तेर उल्लास ॥ ११३ ॥

भक्ति-सिद्धान्त—भक्ति के निष्कर्ष (सिद्धान्त); **विरुद्ध**—विरुद्ध; **आर**—और; **रस-आभास**—दिव्य रसों का अतिक्रमण; **शुनिते**—सुनने से; **ना**—नहीं; **हय**—होता; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **चित्तेर**—हृदय में; **उल्लास**—आनन्द।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु कभी-भी भक्ति के सिद्धान्तों के विरुद्ध पुस्तकें या श्लोक नहीं सुनना चाहते थे। वे रसाभास अर्थात् दिव्य रसों का अतिक्रमण भी नहीं सुनना चाहते थे।

तात्पर्य

भक्तिसिद्धान्त-विरुद्ध उस सिद्धान्त का निर्देश करता है, जो विविधता में एकता के सिद्धान्त का विरुद्ध हो और यह सिद्धान्त *अचिन्त्य भेदाभेद तत्त्व* अर्थात् एक साथ ऐक्य एवं भिन्नता के रूप में जाना जाता है, जबकि *रसाभास* वह है, जो कुछ दिव्य सर जैसा प्रतीत होता है, किन्तु वास्तव में ऐसा होता नहीं है। शुद्ध वैष्णवों को भक्ति-विरुद्ध की इन दोनों बातों से बचना चाहिए। ये गलत धारणाएँ मायावाद दर्शन के समानान्तर चलती हैं। जो कोई मायावाद दर्शन में लगा रहता है, वह धीरे-धीरे भक्ति-पद से नीचे गिर जाता है। रसों के अतिक्रमण (रसाभास) द्वारा मनुष्य अन्ततोगत्वा *प्राकृत सहजिया* बन जाता है और हर बात को सस्ती मानने लगता है। वह बाउल सम्प्रदाय का सदस्य भी बन सकता है, और क्रमशः भौतिक कार्यकलापों के प्रति आकृष्ट हो सकता है। इसीलिए श्री चैतन्य महाप्रभु ने *भक्तिसिद्धान्त-विरुद्ध* तथा *रसाभास* से बचने की सलाह दी है। इस तरह भक्त शुद्ध बना रह सकता है और पतन से बच सकता है। हर एक प्राणी को *भक्ति-सिद्धान्त-विरुद्ध* तथा *रसाभास* से दूर रहने की चेष्टा करनी चाहिए।

অতএব স্বরূপ আগে করে পরীক্ষণ ।
শুদ্ধ হয় যদি, প্রভুরে করা'ন শ্রবণ ॥১১৪॥

अतएव स्वरूप आगे करे परीक्षण ।
शुद्ध हय यदि, प्रभुरे करा'न श्रवण ॥ ११४॥

अतएव—अतएव; **स्वरूप**—स्वरूप दामोदर; **आगे**—पहले; **करे**—करते; **परीक्षण**—परीक्षा; **शुद्ध**—शुद्ध; **हय**—हो; **यदि**—यदि; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **करा'न**—कराते; **श्रवण**—श्रवण।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर गोस्वामी सारे साहित्य का परीक्षण यह जानने के लिए करते थे कि उनके निष्कर्ष सही हैं या नहीं। केवल तभी वे उसे श्री चैतन्य महाप्रभु को सुनाये जाने की अनुमति देते थे।

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर कहते हैं कि यदि कोई वस्तु से भक्ति सम्पन्न करने में बाधा आती हो, तो उसे अशुद्ध समझनी चाहिए। भगवान् के शुद्ध भक्त अशुद्ध सिद्धान्तों को स्वीकार नहीं करते। अशुद्ध भक्त ही रसाभास तथा भक्ति-मार्ग के विरुद्ध अन्य सिद्धान्तों को मानते हैं। ऐसे अशुद्ध सिद्धन्तों के अनुयायी कभी-भी शुद्ध भक्त नहीं माने जाते। रसाभास मार्ग का अनुसरण करने वाले अनेक दल हैं, जिनके अनुयायी कभी-कभी सामान्य व्यक्तियों द्वारा पूज्य माने जाते हैं। जो लोग *रसाभास* तथा *भक्तिसिद्धान्त-विरुद्ध* सिद्धान्तों को ग्रहण करते हैं, उन्हें श्री चैतन्य महाप्रभु के भक्त कभी नहीं माने जा सकते। स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने कभी-भी ऐसे अनुयायियों को गौड़ीय वैष्णव की मान्यता नहीं प्रदान की, न ही उन्हें कभी परम भगवान्, श्री चैतन्य महाप्रभु से मिलने तक दिया।

विद्यापति, चण्डीदास, श्री-गीत-गोविन्द ।
एइ तिन गीते करा'न प्रभुर आनन्द ॥ ११५॥
विद्यापति, चण्डीदास, श्री-गीत-गोविन्द ।
एइ तिन गीते करा'न प्रभुर आनन्द ॥ ११५॥

विद्यापति—मिथिला प्रान्त के प्राचीन वैष्णव कवि; **चण्डीदास**—बीरभूम जिले के नान्नुर गाँव में जन्मे बंगाली वैष्णव कवि चण्डीदास; **श्री-गीत-गोविन्द**—जयदेव गोस्वामी का

एक प्रसिद्ध काव्य, गीत गोविन्द; **एइ**—ये; **तिन**—तीन; **गीते**—गीत; **करा'न**—देते; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **आनन्द**—आनन्द।

अनुवाद

श्री स्वरूप दामोदर विद्यापति तथा चण्डीदास के गीत तथा जयदेव गोस्वामी कृत श्री गीत गोविन्द पढ़ा करते थे। वे इन गीतों को गाकर श्री चैतन्य महाप्रभु को अत्यन्त आनन्दित किया करते थे।

সঙ্গীতে——গন্ধর্ব-সম, শাস্ত্রে বৃহস্পতি ।
দামোদর-সম আর নাহি মহা-মতি ॥ ১১৬॥

সঙ্গীতে——গন্ধর্ব-সম, শাস্ত্রে বৃহস্পতি ।
দামোদর-সম আর নাহি মহা-মতি ॥ ১১৬॥

সঙ্গীতে—संगीत में; **গন্ধর্ব-সম**—गन्धर्वों के समान; **শাস্ত্রে**—प्रामाणिक शास्त्रों में; **বৃহস্পতি**—(देवताओं के पुरोहित) बृहस्पति के समान; **দামোদর-সম**—स्वरूप दामोदर के समान; **আর**—कोई अन्य; **নাহি**—नहीं; **মহা-মতি**—महान् व्यक्ति।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर गन्धर्वों के तुल्य दक्ष गायक थे और शास्त्र चर्चा में वे देवताओं के पुरोहित बृहस्पति के समान थे। अतएव यह निष्कर्ष निकलता है कि स्वरूप दामोदर जैसा कोई अन्य महापुरुष नहीं था।

तात्पर्य

स्वरूप दामोदर गोस्वामी संगीत तथा वैदिक शास्त्रों में अत्यन्त निपुण थे। श्री चैतन्य महाप्रभु उन्हें उनके पटु गायन तथा संगीत-निपुणता के कारण दामोदर कहा करते थे। यह दामोदर नाम श्री चैतन्य महाप्रभु का दिया हुआ था, जिसे उन्होंने अपने संन्यास-गुरु द्वारा दिये गये नाम के साथ जोड़ लिया था। इसीलिए वे स्वरूप दामोदर या दामोदर स्वरूप कहलाते थे। उन्होंने *संगीत दामोदर* नामक संगीत ग्रंथ की रचना की।

অদ্বৈত-নিত্যানন্দের পরম প্রিয়তম ।
শ্রীবাসাদি ভক্ত-গণের হয় প্রাণ-সম ॥ ১১৭॥

अद्वैत-नित्यानन्देर परम प्रियतम ।
श्रीवासादि भक्त-गणेर हय प्राण-सम ॥ ११७॥

अद्वैत—अद्वैत आचार्य के; **नित्यानन्देर**—नित्यानन्द प्रभु के; **परम**—अत्यन्त; **प्रिय-तम**—प्रिय; **श्रीवास-आदि**—श्रीवास आदि; **भक्त-गणेर**—भक्तों के; **हय**—हैं; **प्राण-सम**—प्राणों के समान।

अनुवाद

श्री स्वरूप दामोदर अद्वैत आचार्य तथा नित्यानन्द प्रभु को परम प्रिय थे, और वे श्रीवास ठाकुर आदि सभी भक्तजनों के प्राणों के तुल्य थे।

सेइ दामोदर आसि' दण्डवत् हैला ।
चरणे पड़िया श्लोक पड़िते लागिला ॥ ११८॥

सेइ दामोदर आसि' दण्डवत् हैला ।
चरणे पड़िया श्लोक पड़िते लागिला ॥ ११८॥

सेइ दामोदर—वे स्वरूप दामोदर; **आसि'**—आकर; **दण्ड-वत् हैला**—दण्डवत् प्रणाम करने के लिए गिर गये; **चरणे पड़िया**—चरणकमलों पर गिरकर; **श्लोक**—एक श्लोक; **पड़िते लागिला**—पढ़ने लगे।

अनुवाद

वही स्वरूप दामोदर जगन्नाथ पुरी आकर श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों पर गिर पड़े और नमस्कार करने के बाद उन्होंने एक श्लोक सुनाया।

हेलोद्धूनित-खेदया विशदया प्रोन्मीलदामोदया
शाम्यच्छास्त्र-विवादया रस-दया चित्तार्पितोन्मादया ।
शश्वद्भक्ति-विनोदया स-मदया माधुर्य-मर्यादया
श्री-चैतन्य दया-निधे तव दया भूयादमन्दोदया ॥ ११९॥

हेलोद्धूनित-खेदया विशदया प्रोन्मीलदामोदया
शाम्यच्छास्त्र-विवादया रस-दया चित्तार्पितोन्मादया ।
शश्वद्भक्ति-विनोदया स-मदया माधुर्य-मर्यादया
श्री-चैतन्य दया-निधे तव दया भूयादमन्दोदया ॥ ११९॥

हेला—बहुत आसानी से; **उद्धूनित**—दूर कर देती है; **खेदया**—शोक; **विशदया**—जो प्रत्येक वस्तु को शुद्ध कर देता है; **प्रोन्मीलत्**—जागृत करके; **आमोदया**—दिव्य आनन्द; **शाम्यत्**—नष्ट करके; **शास्त्र**—प्रामाणिक शास्त्रों का; **विवादया**—विवाद; **रस-दया**—सभी दिव्य रसों को प्रदान करके; **चित्त**—हृदय में; **अर्पित**—स्थिर; **उन्मादया**—आनन्द; **शश्वत्**—सदैव; **भक्ति**—भक्ति; **विनोदया**—उत्तेजित करने वाली; **स-मदया**—भावपूर्ण; **माधुर्य**—प्रेम रस के; **मर्य्यादया**—सीमा; **श्री-चैतन्य**—हे श्री चैतन्य महाप्रभु; **दया-निधे**—दया के सागर; **तव**—आपकी; **दया**—दया; **भूयात्**—हो; **अमन्द**—सौभाग्य का; **उदया**—जिसमें उदय हो।

अनुवाद

"हे कृपा के सागर श्री चैतन्य महाप्रभु! आपकी शुभ कृपा जाग्रत हो, जो सभी प्रकार के भौतिक दुःखों को आसानी से भगाने वाली है। आपकी कृपा से हर वस्तु शुद्ध तथा आनन्दमय बन जाती है। निस्सन्देह, आपकी कृपा दिव्य आनन्द को जगाती है और भौतिक सुख को आच्छादित कर देती है। आपकी शुभ कृपा से विभिन्न शास्त्रों के मतभेद विनष्ट हो जाते हैं। आपकी शुभ कृपा दिव्य रसों को उंडेलती है, जिससे हृदय आनन्द-मग्न हो जाता है। आपकी हर्ष से युक्त कृपा सदैव भक्ति को उद्दीप्त करती है और माधुर्य प्रेम को महिमान्वित करती है। आपकी अहैतुकी कृपा मेरे हृदय में दिव्य आनन्द को जाग्रत करे।"

तात्पर्य

यह महत्त्वपूर्ण श्लोक *श्री चैतन्य-चन्द्रोदय-नाटक* (८.१०) का है, जिसमें महाप्रभु की अहैतुकी कृपा का वर्णन किया गया है। श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर बतलाते हैं कि सर्वादिक वदान्य पुरुषोत्तम भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु बद्धजीव को तीन प्रकार से अपनी अहैतुकी कृपा वितरित करते हैं। भौतिक जगत् में हर प्राणी इसलिए खिन्न रहता है, क्योंकि उसे अभाव सदैव सताता रहता है। वह अपने अस्तित्व को टिकाये रखने के लिए महान् संघर्ष करता है और इस जगत् से अधिकाधिक आनन्द निचोड़कर अपनी कष्टप्रद स्थिति को न्यूनतम बनाने का प्रयास करता है। किन्तु जीव को अपने इस प्रयास में कभी भी सफलता प्राप्त नहीं होती। कभी-कभी कष्टमय स्थिति में रहते हुए वह पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् की कृपा की आकांक्षा करता है, जो भौतिकतावादी लोगों को मिलना अत्यन्त कठिन है। जब मनुष्य भगवान् की

कृपा से कृष्णभावनाभावित हो जाता है, तब भगवान् के चरणकमलों की सुगन्ध का विस्तार होता है और इस तरह भौतिकतावादी व्यक्ति को उसके कष्ट से छुटकारा मिल जाता है। वस्तुतः भगवान् के चरणकमलों से दिव्य सम्बन्ध होने से उसका मन निर्मल हो जाता है। ऐसे अवसर पर उसे भगवान् की प्रेमाभक्ति का प्रकाश प्राप्त होता है।

शास्त्र अनेक प्रकार के हैं और उन्हें पढ़ने से मनुष्य कभी-कभी उलझन में पड़ जाता है। किन्तु जब मनुष्य को भगवान् की कृपा प्राप्त हो जाती है, तब उसका संशय दूर हो जाता है। न केवल शास्त्र सम्बन्धी भेदभाव दूर हो जाता है, अपितु एक प्रकार का दिव्य आनन्द उत्पन्न होता है। इस तरह मनुष्य पूर्णतया सन्तुष्ट हो जाता है। भगवान् की दिव्य प्रेमाभक्ति बद्धजीव को भगवान् के चरणकमलों की सेवा में निरन्तर लगाये रखती है। ऐसी भाग्यशाली लगन से कृष्ण के प्रति दिव्य प्रेम बढ़ जाता है। इस तरह मनुष्य की स्थिति निर्मल हो जाती है और दिव्य आनन्द के साथ ही उसका आत्मा हर्ष से पूरित हो जाता है।

इस तरह भक्त के हृदय में भगवान् कृष्ण की अहैतुकी कृपा व्यक्त होती है। ऐसी दशा में भौतिक आवश्यकताएँ मिट जाती हैं। भौतिक इच्छाओं के साथ सदैव रहने वाला क्लेश भी मिट जाता है। भगवान् की कृपा से वह दिव्य पद तक ऊपर उठ जाता है और तब उसमें वैकुण्ठ लोक के दिव्य रस प्रकट होते हैं। तब मनुष्य की भक्ति दृढ़ होती है और वह दृढ़ संकल्प के साथ भगवान् की दिव्य प्रेमाभक्ति में लगता है। ये सब मिलकर भक्त के हृदय में कृष्ण-प्रेम को जाग्रत करते हैं।

प्रारम्भ में बद्धजीव कृष्णभावना से विहीन होता है और भौतिक कार्यकलापों से सदैव खिन्न रहता है। बाद में शुद्ध भक्तों की संगति से वह परम सत्य को जानने के लिए उत्सुक हो उठता है। इस तरह वह भगवान् की दिव्य सेवा करने लगता है। फिर भगवान् की कृपा से सारी भ्रान्तियाँ दूर हो जाती हैं और हृदय सारे भौतिक मल से निर्मल हो जाता है। तभी दिव्य आनन्द जागृत होता है। भगवान् की कृपा से ही मनुष्य भक्ति के महत्त्व को पूरी तरह समझ जाता है। जब मनुष्य भगवान् की लीलाओं को सर्वत्र देखता है, तो उसे दिव्य

आनन्द की स्थाई रूप से प्राप्ति होती है। ऐसे भक्त की सारी भौतिक इच्छाएँ नष्ट हो जाती हैं और वह संसार-भर में भगवान् की महिमा का प्रचार करता है। ये कृष्णभावनाभावित कर्म उसे भौतिक कर्मों तथा मुक्ति की इच्छा से विलग करते हैं, क्योंकि पग-पग पर भक्त अपने आपको पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् से सम्बन्धित अनुभव करता है। ऐसा भक्त कभी-कभी गृहस्थ जीवन में ही क्यों न फँसा हो, भक्ति में लगे रहने के कारण वह भौतिक जगत् से अछूता रहता है। अतएव सुखी तथा मुक्त बनने के लिए हर एक को सलाह दी जाती है कि वह भक्ति की शरण ले।

उठाञा महाप्रभु कैल आलिङ्गन ।
दुइ-जने प्रेमावेशे हैल अचेतन ॥ १२० ॥

उठाञा महाप्रभु कैल आलिङ्गन ।
दुइ-जने प्रेमावेशे हैल अचेतन ॥ १२० ॥

उठाञा—उन्हें उठाकर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कैल**—किया; **आलिङ्गन**—गले लगाया; **दुइ-जने**—दोनों व्यक्ति; **प्रेम-आवेशे**—प्रेमावेश में; **हैल**—हो गये; **अचेतन**—अचेत।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने स्वरूप दामोदर को उनके पैरों पर खड़ा कर उनका आलिगंन किया। वे दोनों ही प्रेमावेश में अचेत हो गये।

कत-क्षणे दुइ जने स्थिर यबे हैला ।
तबे महाप्रभु ताँरे कहिते लागिला ॥ १२१ ॥

कत-क्षणे दुइ जने स्थिर ग्रबे हैला ।
तबे महाप्रभु ताँरे कहिते लागिला ॥ १२१ ॥

कत-क्षणे—कुछ समय के बाद; **दुइ जने**—दोनों व्यक्ति; **स्थिर**—शान्त; **ग्रबे**—जब; **हैला**—हो गये; **तबे**—तब; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँरे**—उनको; **कहिते**—कहने; **लागिला**—लगे।

अनुवाद

जब दोनों ने धैर्य-धारण किया, तो श्री चैतन्य महाप्रभु कहने लगे।

तुमि ये आसिबे, आजि स्वप्नेते देखिल ।
भाल हैल, अन्ध येन दुई नेत्र पाइल ॥ १२२॥

तुमि ग्रे आसिबे, आजि स्वप्नेते देखिल ।
भाल हैल, अन्ध ग्रेन दुइ नेत्र पाइल ॥ १२२॥

तुमि—तुम; **ग्रे**—कि; **आसिबे**—आओगे; **आजि**—आज; **स्वप्नेते**—स्वप्न में; **देखिल**—मैंने देखा; **भाल हैल**—यह बहुत अच्छा है; **अन्ध**—एक अन्धे आदमी को; **ग्रेन**—जैसे; **दुइ**—दो; **नेत्र**—आँखें; **पाइल**—वापस मिल गई हों।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "मैंने सपने में देखा कि तुम आ रहे हो, अतएव यह अत्यन्त शुभ है। मैं तो अंधे व्यक्ति के समान था, किन्तु तुम्हारे आने से मुझे फिर से दृष्टि मिल गई है।"

स्वरूप कहे,——प्रभु, मोर क्षम' अपराध ।
तोमा छाड़ि' अन्यत्र गेनु, करिनु प्रमाद ॥ १२३॥

स्वरूप कहे,——प्रभु, मोर क्षम' अपराध ।
तोमा छाड़ि' अन्यत्र गेनु, करिनु प्रमाद ॥ १२३॥

स्वरूप कहे—स्वरूप दामोदर ने कहा; **प्रभु**—मेरे प्रभु; **मोर**—मेरा; **क्षम'**—क्षमा करें; **अपराध**—अपराध; **तोमा**—आपको; **छाड़ि'**—छोड़कर; **अन्यत्र**—कहीं ओर; **गेनु**—मैं चला गया; **करिनु**—मैंने की है; **प्रमाद**—बड़ी गलती।

अनुवाद

स्वरूप ने कहा, "हे प्रभु, कृपया आप मेरा अपराध क्षमा करें। मैंने अन्यत्र जाने के लिए आपका संग छोड़ दिया था, और यही मेरी सबसे बड़ी भूल थी।

तोमार चरणे मोर नाहि प्रेम-लेश ।
तोमा छाड़ि' पापी मुञि गेनु अन्य देश ॥ १२४॥

तोमार चरणे मोर नाहि प्रेम-लेश ।
तोमा छाड़ि' पापी मुञि गेनु अन्य देश ॥ १२४॥

तोमार चरणे—आपके चरणकमलों में; **मोर**—मेरा; **नाहि**—नहीं है; **प्रेम-लेश**—जरा सा भी प्रेम; **तोमा**—आपको; **छाड़ि'**—छोड़कर; **पापी**—पापी; **मुञि**—मैं; **गेनु**—चला गया; **अन्य देश**—दूसरे देश को।

अनुवाद

"हे प्रभु, आपके चरणकमलों के प्रति मेरा रंचमात्र भी प्रेम नहीं है। यदि ऐसा होता, तो मैं दूसरे देश क्यों जाता? अतएव मैं सबसे बड़ा पापी व्यक्ति हूँ।

मुञि तोमा छाड़िल, तुमि मोरे ना छाड़िला ।
कृपा-पाश गले बान्धि' चरणे आनिला ॥ १२५॥

मुञि तोमा छाड़िल, तुमि मोरे ना छाड़िला ।
कृपा-पाश गले बान्धि' चरणे आनिला ॥ १२५॥

मुञि—मैंने; **तोमा**—आपको; **छाड़िल**—छोड़ दिया; **तुमि**—आपने; **मोरे**—मुझे; **ना**—नहीं; **छाड़िला**—छोड़ा; **कृपा**—कृपा की; **पाश**—रस्सी; **गले**—गले से; **बान्धि'**—बाँधकर; **चरणे**—अपने चरणकमलों पर; **आनिला**—आप वापस ले आये।

अनुवाद

"मैंने तो आपका साथ छोड़ दिया, किन्तु आपने मुझे नहीं छोड़ा। आपने अपनी कृपारूपी रस्सी से मेरे गले को बाँधकर पुनः मुझे अपने चरणकमलों पर वापस ला दिया है।"

तबे स्वरूप कैल निताइर चरण वन्दन ।
नित्यानन्द-प्रभु कैल प्रेम-आलिङ्गन ॥ १२६॥

तबे स्वरूप कैल निताइर चरण वन्दन ।
नित्यानन्द-प्रभु कैल प्रेम-आलिङ्गन ॥ १२६॥

तबे—तत्पश्चात्; **स्वरूप**—स्वरूप दामोदर; **कैल**—किया; **निताइर**—नित्यानन्द प्रभु के; **चरण**—चरणकमल की; **वन्दन**—पूजा; **नित्यानन्द-प्रभु**—नित्यानन्द प्रभु ने; **कैल**—किया; **प्रेम-आलिङ्गन**—प्रेम से आलिंगन।

अनुवाद

तब स्वरूप दामोदर ने नित्यानन्द प्रभु के चरणकमलों की वन्दना की और नित्यानन्द प्रभु ने प्रेमवश उनका आलिंगन किया।

জগদানন্দ, মুকুন্দ, শঙ্কর, সার্বভৌম ।
সবা-সঙ্গে যথা-যোগ্য করিল মিলন ॥ ১২৭ ॥

जगदानन्द, मुकुन्द, शङ्कर, सार्वभौम ।
सबा-सङ्गे यथा-योग्य करिल मिलन ॥ १२७ ॥

जगदानन्द—जगदानन्द; **मुकुन्द**—मुकुन्द; **शङ्कर**—शंकर; **सार्वभौम**—सार्वभौम; **सबा-सङ्गे**—सबके साथ; **यथा-योग्य**—उचित प्रकार से; **करिल**—किया; **मिलन**—मेल।

अनुवाद

नित्यानन्द प्रभु की वन्दना करने के बाद स्वरूप दामोदर जगदानन्द, मुकुन्द, शंकर तथा सार्वभौम से यथायोग्य रीति से मिले।

পরমানন্দ পুরীর কৈল চরণ বন্দন ।
পুরী-গোসাঞি তাঁরে কৈল প্রেম-আলিঙ্গন ॥ ১২৮ ॥

परमानन्द पुरीर कैल चरण वन्दन ।
पुरी-गोसाञि ताँरे कैल प्रेम-आलिङ्गन ॥ १२८ ॥

परमानन्द पुरीर—परमानन्द पुरी का; **कैल**—उन्होंने की; **चरण वन्दन**—चरण वन्दना; **पुरी-गोसाञि**—परमानन्द पुरी ; **ताँरे**—उनको; **कैल**—किया; **प्रेम-आलिङ्गन**—प्रेम से आलिंगन।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर ने परमानन्द पुरी के चरणकमलों की भी वन्दना की और परमानन्द पुरी ने उलटकर प्रेमवश उनका आलिंगन किया।

মহাপ্রভু দিল তাঁরে নিভৃতে বাসা-ঘর ।
জলাদি-পরিচর্যা লাগি' দিল এক কিঙ্কর ॥ ১২৯ ॥

महाप्रभु दिल ताँरे निभृते वासा-घर ।
जलादि-परिचर्य्या लागि' दिल एक किङ्कर ॥ १२९ ॥

महाप्रभु—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **दिल**—दिया; **ताँरे**—उनको; **निभृते**—एक एकान्त स्थान में; **वासा-घर**—रहने के लिए स्थान; **जल-आदि**—जलपूर्ति आदि; **परिचर्य्या**—सेवा; **लागि'**—के लिए; **दिल**—दिया; **एक**—एक; **किङ्कर**—सेवक।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने स्वरूप दामोदर को एक एकान्त निवासस्थान दे दिया और एक सेवक से कहा कि वह उन्हें पानी तथा अन्य आवश्यक वस्तुएँ देता रहे।

आर दिन सार्वभौम-आदि भक्त-सङ्गे ।
वसिया आछेन महाप्रभु कृष्ण-कथा-रङ्गे ॥ १३० ॥

आर दिन सार्वभौम-आदि भक्त-सङ्गे ।
वसिया आछेन महाप्रभु कृष्ण-कथा-रङ्गे ॥ १३० ॥

आर दिन—अगले दिन; **सार्वभौम-आदि**—सार्वभौम भट्टाचार्य आदि; **भक्त-सङ्गे**—भक्तों के साथ; **वसिया आछेन**—बैठे थे; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कृष्ण-कथा-रङ्गे**—कृष्ण कथाओं की चर्चा में व्यस्त।

अनुवाद

अगले दिन श्री चैतन्य महाप्रभु सार्वभौम भट्टाचार्य इत्यादि भक्तों के साथ बैठकर कृष्ण-लीलाओं की चर्चाएँ करते रहे।

हेन-काले गोविन्देर हैल आगमन ।
दण्डवत्करि' कहे विनय-वचन ॥ १३१ ॥

हेन-काले गोविन्देर हैल आगमन ।
दण्डवत्करि' कहे विनय-वचन ॥ १३१ ॥

हेन-काले—उस समय; **गोविन्देर**—गोविन्द का; **हैल**—हुआ; **आगमन**—आगमन; **दण्डवत् करि'**—दण्डवत् प्रणाम करके; **कहे**—कहा; **विनय-वचन**—विनयपूर्वक।

अनुवाद

उसी समय गोविन्द वहाँ आ गये। उन्होंने प्रणाम करने के बाद विनीत होकर इस प्रकार कहा।

ईश्वर-पुरीर भृत्य,—'गोविन्द' मोर नाम ।
पुरी-गोसाञिर आज्ञाय आइनु तोमार स्थान ॥ १३२ ॥

ईश्वर-पुरीर भृत्य,—'गोविन्द' मोर नाम ।
पुरी-गोसाञिर आज्ञाय आइनु तोमार स्थान ॥ १३२॥

ईश्वर-पुरीर भृत्य—ईश्वर पुरी का सेवक; **गोविन्द मोर नाम**—मेरा नाम गोविन्द है; **पुरी-गोसाञिर**—ईश्वर पुरी की; **आज्ञाय**—आज्ञा से; **आइनु**—मैं आया हूँ; **तोमार**—आपके; **स्थान**—स्थान पर।

अनुवाद

"मैं ईश्वर पुरी का सेवक हूँ। मेरा नाम गोविन्द है। मैं अपने गुरु की आज्ञा का पालन करके यहाँ आया हूँ।

सिद्ध-प्राप्ति-काले गोसाञि आज्ञा कैल मोरे ।
कृष्ण-चैतन्य-निकटे रहि सेविह ताँहारे ॥ १३३॥
सिद्ध-प्राप्ति-काले गोसाञि आज्ञा कैल मोरे ।
कृष्ण-चैतन्य-निकटे रहि सेविह ताँहारे ॥ १३३॥

सिद्धि-प्राप्ति-काले—जीवन की सर्वोच्च सिद्धि प्राप्त करने के लिए इस नश्वर जगत् से प्रस्थान के समय; **गोसाञि**—मेरे गुरु ने; **आज्ञा**—आज्ञा; **कैल**—दी थी; **मोरे**—मुझे; **कृष्ण-चैतन्य-निकटे**—श्रीकृष्ण चैतन्य के पास; **रहि**—रहकर; **सेविह**—सेवा करो; **ताँहारे**—उनकी।

अनुवाद

"सर्वोच्च सिद्धि प्राप्त करने के लिए इस मर्त्यलोक से विदा होने के पूर्व ईश्वर पुरी ने मुझसे कहा कि मुझे श्री चैतन्य महाप्रभु के पास जाना चाहिए और उनकी सेवा करनी चाहिए।

काशीश्वर आसिबेन सब तीर्थ देखिया ।
प्रभु-आज्ञाय मुञि आइनु तोमा-पदे धाञा ॥ १३४॥
काशीश्वर आसिबेन सब तीर्थ देखिया ।
प्रभु-आज्ञाय मुञि आइनु तोमा-पदे धाञा ॥ १३४॥

काशीश्वर—काशीश्वर; **आसिबेन**—आयेगा; **सब**—सब; **तीर्थ**—तीर्थस्थानों के; **देखिया**—दर्शन करके; **प्रभु-आज्ञाय**—मेरे गुरु की आज्ञा से; **मुञि**—मैं; **आइनु**—आया हूँ; **तोमा**—आपके; **पदे**—चरणकमलों पर; **धाञा**—भागा भागा।

अनुवाद

"काशीश्वर भी सारे तीर्थों का भ्रमण करने के बाद यहाँ आयेगा। किन्तु मैं तो अपने गुरु की आज्ञानुसार आपके चरणकमलों पर उपस्थित होने के लिए शीघ्र चला आया।"

গোসাঞি কহিল, 'পুরীশ্বর' বাৎসল্য করে মোরে ।
কৃপা করি' মোর ঠাঞি পাঠাইলা তোমারে ॥১৩৫॥

গোসাঞি কহিল, 'পুরীশ্বর' বাৎসল্য করে মোরে ।
কৃপা করি' মোর ঠাঞি পাঠাইলা তোমারে ॥ ১৩৫ ॥

গোসাঞি কহিল—श्री चैतन्य महाप्रभु ने उत्तर दिया; **পুরীশ্বর**—ईश्वर पुरी; **বাৎসল্য**—पिता का स्नेह; **করে**—करते हैं; **মোরে**—मुझ पर; **কৃপা করি'**—कृपा करके; **মোর ঠাঞি**—मेरे पास; **পাঠাইলা**—भेजा; **তোমারে**—तुम्हें।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने उत्तर दिया, "मेरे गुरु ईश्वर पुरी मुझ पर सदैव पिता जैसा स्नेह करते थे। इसीलिए उन्होंने अपनी अहैतुकी कृपावश तुम्हें यहाँ भेजा है।"

এত শুনি' সার্বভৌম প্রভুরে পুছিল ।
পুরী-গোসাঞি শূদ্র-সেবক কাঁহে ত' রাখিল ॥১৩৬॥

এত শুনি' সার্বভৌম প্রভুরে পুছিল ।
পুরী-গোসাঞি শূদ্র-সেবক কাঁহে ত' রাখিল ॥ ১৩৬ ॥

এত শুনি'—यह सुनकर; **সার্বভৌম**—सावभौम भट्टाचार्य; **প্রভুরে**—महाप्रभु को; **পুছিল**—पूछा; **পুরী-গোসাঞি**—ईश्वर पुरी; **শূদ্র-সেবক**—शूद्र सेवक; **কাঁহে ত'**—क्यों; **রাখিল**—रखा।

अनुवाद

यह सुनकर सार्वभौम भट्टाचार्य ने श्री चैतन्य महाप्रभु से पूछा, "ईश्वर पुरी ने शूद्र को सेवक के रूप में क्यों रखा?"

तात्पर्य

काशीश्वर तथा गोविन्द दोनों ही ईश्वर पुरी के सेवक थे। ईश्वर पुरी के तिरोधान के बाद काशीश्वर भारत के समस्त तीर्थों का भ्रमण करने चला गया, किन्तु गोविन्द अपने गुरु की आज्ञा का पालन करने के लिए तुरन्त ही श्री चैतन्य महाप्रभु की शरण में चला आया। यद्यपि गोविन्द शूद्र कुल में जन्मा था, किन्तु ईश्वर पुरी ने उसे दीक्षा दी थी, इसलिए वह निश्चित रूप से ब्राह्मण बन चुका था। यहाँ पर सार्वभौम भट्टाचार्य ने श्री चैतन्य महाप्रभु से पूछा कि ईश्वर पुरी ने शूद्र परिवार का शिष्य क्यों बनाया। *स्मृति-शास्त्र* के अनुसार, जो वर्णाश्रम संस्थाओं की व्यवस्था के प्रति आदेश देता है, ब्राह्मण निम्न जातियों से शिष्य नहीं बना सकता। दूसरे शब्दों में, एक क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र को सेवक नहीं बनाया जा सकता। यदि गुरु ऐसे व्यक्ति को स्वीकार करता है, तो वह दूषित हो जाता है। इसलिए सार्वभौम भट्टाचार्य ने पूछा कि ईश्वर पुरी ने शूद्र जाति का सेवक या शिष्य क्यों स्वीकार किया।

इस प्रश्न के उत्तर में श्री चैतन्य महाप्रभु ने उत्तर दिया कि उनके गुरु ईश्वर पुरी इतने शक्ति-सम्पन्न थे कि वे भगवान् जैसे थे। इस तरह ईश्वर पुरी समस्त जगत् के गुरु थे। वे सांसारिक शासन या नियमों से बद्ध नहीं थे। ईश्वर पुरी जैसा शक्ति-सम्पन्न गुरु जाति-पाँति का विचार किये बिना किसी को भी अपनी कृपा प्रदान कर सकता है। निष्कर्ष यह है कि शक्ति-संचारित गुरु कृष्ण तथा अपने स्वयं के गुरु द्वारा अधिकृत होता है और इसलिए उसे भगवान् जैसा ही अच्छा समझा जाना चाहिए। विश्वनाथ चक्रवर्ती का यही मत है—*साक्षात्-धरित्वेन* । अधिकृत गुरु हरि अर्थात् भगवान् के तुल्य है। जैसे हरि इच्छानुसार कार्य कर सकते हैं, वैसे शक्ति-संचारित गुरु भी स्वतन्त्र होता है। जिस तरह हरि सांसारिक नियमों से बद्ध नहीं होते, उसी प्रकार हरि द्वारा शक्ति से आवेशित गुरु भी बद्ध नहीं होता। *चैतन्य-चरितामृत* (अन्त्य लीला ७.११) के अनुसार—*कृष्णशक्ति विना नहे तार प्रवर्तन।* कृष्ण द्वारा शक्ति से आवेशित गुरु भगवान् के नाम की महिमा का प्रसार कर सकता है, क्योंकि उसे भगवान् से अधिकार मिला होता है। लौकिक जगत् में अपने गुरु से अधिकार प्राप्त व्यक्ति अपने गुरु की ओर से कार्य कर सकता है। इसी प्रकार अपने गुरु के माध्यम से

कृष्ण द्वारा शक्ति-प्राप्त गुरु को साक्षात् भगवान् के तुल्य मानना चाहिए। *साक्षात् धरित्वेन* का यही अर्थ है। इसीलिए श्री चैतन्य महाप्रभु भगवान् तथा प्रामाणिक गुरु के कार्यों का वर्णन इस प्रकार करते हैं।

प्रभु कहे,——ईश्वर हय परम स्वतन्त्र ।
ईश्वरेर कृपा नहे वेद-परतन्त्र ॥ १३७॥

प्रभु कहे,——ईश्वर हय परम स्वतन्त्र ।
ईश्वरेर कृपा नहे वेद-परतन्त्र ॥ १३७॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **ईश्वर**—परम भगवान् या ईश्वर पुरी; **हय**—हैं; **परम**—पूर्णतः; **स्वतन्त्र**—स्वतंत्र; **ईश्वरेर**—परम भगवान् या ईश्वरपुरी की; **कृपा**—कृपा; **नहे**—नहीं है; **वेद-परतन्त्र**—वैदिक विधि विधान के अन्तर्गत।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "भगवान् तथा मेरे गुरु ईश्वर पुरी दोनों ही पूर्ण स्वतन्त्र हैं। अतएव भगवान् तथा ईश्वर पुरी दोनों की कृपा किसी वैदिक नियम के अधीन नहीं है।

ईश्वरेर कृपा जाति-कुलादि ना माने ।
विदुरेर घरे कृष्ण करिला भोजने ॥ १३८॥

ईश्वरेर कृपा जाति-कुलादि ना माने ।
विदुरेर घरे कृष्ण करिला भोजने ॥ १३८॥

ईश्वरेर कृपा—प्रभु की कृपा; **जाति**—जाति; **कुल-आदि**—वंश आदि; **ना माने**—नहीं मानती; **विदुरेर**—विदुर के; **घरे**—घर पर; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण ने; **करिला**—किया; **भोजने**—भोजन।

अनुवाद

"पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् की कृपा जाति-पाँति के बन्धन से सीमित नहीं रहती। यद्यपि विदुर शूद्र थे, किन्तु कृष्ण ने उनके घर भोजन किया।

स्नेह-लेशापेक्षा मात्र श्री-कृष्ण-कृपार ।
स्नेह-वश हञा करे स्वतन्त्र आचार ॥ १३९॥

स्नेह-लेशापेक्षा मात्र श्री-कृष्ण-कृपार ।
स्नेह-वश हञा करे स्वतन्त्र आचार ॥ १३९ ॥

स्नेह—स्नेह की; **लेश**—लेशमात्र; **अपेक्षा**—अपेक्षा; **मात्र**—मात्र; **श्री-कृष्ण**—भगवान् श्रीकृष्ण की; **कृपार**—कृपा का; **स्नेह-वश**—स्नेह वश; **हञा**—होकर; **करे**—करते हैं; **स्वतन्त्र**—स्वतंत्र; **आचार**—व्यवहार।

अनुवाद

"भगवान् कृष्ण की कृपा एकमात्र स्नेह पर निर्भर है। केवल स्नेह के वशीभूत होकर कृष्ण स्वतन्त्र रूप से आचरण करते हैं।

तात्पर्य

पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण कृपालु हैं, किन्तु उनकी कृपा संसारी नियमों के अधीन नहीं है। वे तो केवल स्नेह के अधीन हैं, अन्य किसी के नहीं। भगवान् कृष्ण की सेवा दो प्रकार से की जा सकती है—स्नेह से या आदर (सम्मान) से। जब सेवा स्नेह से की जाती है, तब यह भगवान् की विशेष कृपा होती है। जब सेवा आदरवश की जाती है, तब सन्देह रहता है कि कृष्ण की कृपा निहित है अथवा नहीं। यदि कृष्ण की कृपा निहित रहती है, तो यह किसी जाति-पाँति पर निर्भर नहीं रहती। श्री चैतन्य महाप्रभु सार्वभौम भट्टाचार्य को बताना चाह रहे थे कि भगवान् कृष्ण हर एक के गुरु हैं, और वे सांसारिक जाति-पाँति की परवाह नहीं करते। इसीलिए चैतन्य महाप्रभु ने विदुर के घर कृष्ण द्वारा भोजन करने का दृष्टान्त रखा, जो जन्म से शूद्र थे। उसी तरह ईश्वर पुरी, शक्त्याविष्ट गुरु होने के नाते किसी पर भी कृपा कर सकते थे। इसीलिए उन्होंने गोविन्द को अपना सेवक बनाया, यद्यपि वह शूद्र कुल में जन्मा था। जब गोविन्द को दीक्षा दे दी गई, तो वह ब्राह्मण बन गया और तब ईश्वर पुरी ने उसे अपना निजी सेवक बना लिया। *हरिभक्ति-विलास* में श्री सनातन गोस्वामी कहते हैं कि यदि प्रामाणिक गुरु किसी को दीक्षा दे दे, तो वह तुरन्त ब्राह्मण बन जाता है। छद्म गुरु किसी व्यक्ति को ब्राह्मण नहीं बना सकता, जबकि प्रामाणिक गुरु ऐसा कर सकता है। यह शास्त्र का, श्री चैतन्य महाप्रभु का तथा समस्त गोस्वामियों का निर्णय है।

মর্যাদা হৈতে কোটি সুখ স্নেহ-আচরণে ।
পরমানন্দ হয় যার নাম-শ্রবণে ॥ ১৪০ ॥

মর্য্যাদা হৈতে কোটি সুখ স্নেহ-আচরণে ।
পরমানন্দ হয় য়ার নাম-শ্রবণে ॥ ১৪০ ॥

মর্য্যাদা হৈতে—मर्यादा से अधिक; **कोटि**—करोड़ों गुना; **सुख**—सुख; **स्नेह**—स्नेहपूर्वक; **आचरणे**—व्यवहार में; **परम-आनन्द**—परमानन्द; **हय**—है; **य़ार**—जिसका; **नाम**—पावन नाम; **श्रवणे**—सुनने से।

अनुवाद

"फलस्वरूप पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के साथ स्नेह-आचरण मर्यादा-आचरण की अपेक्षा लाखों गुना सुख प्रदान करने वाला है। भक्त भगवान् का पवित्र नाम सुनकर ही दिव्य आनन्द में मग्न हो जाता है।"

এত বলি' গোবিন্দেরে কৈল আলিঙ্গন ।
গোবিন্দ করিল প্রভুর চরণ বন্দন ॥ ১৪১ ॥

এত বলি' গোবিন্দেরে কৈল আলিঙ্গন ।
গোবিন্দ করিল প্রভুর চরণ বন্দন ॥ ১৪১ ॥

এত বলি'—यह कहकर; **गोविन्देरे**—गोविन्द को; **कैल**—किया; **आलिङ्गन**—आलिंगन; **गोविन्द**—गोविन्द; **करिल**—किया; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **चरण वन्दन**—चरण वन्दना।

अनुवाद

यह कहकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने गोविन्द का आलिंगन किया और गोविन्द ने भी महाप्रभु के चरणकमलों की वन्दना की।

প্রভু কহে,—ভট্টাচার্য, করহ বিচার ।
গুরুর কিঙ্কর হয় মান্য সে আমার ॥ ১৪২ ॥

প্রভু কহে,—ভট্টাচার্য, করহ বিচার ।
গুরুর কিঙ্কর হয় মান্য সে আমার ॥ ১৪২ ॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **भट्टाचार्य**—मेरे प्रिय भट्टाचार्य; **करह विचार**—

जरा विचार करो; **गुरुर किङ्कर**—गुरु का सेवक; **हय**—होता है; **मान्य**—पूज्य; **से**—वह; **आमार**—मेरे लिए।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने सार्वभौम भट्टाचार्य से आगे कहा, "आप इस पर विचार करें। गुरु का सेवक मेरे लिए सदैव आदरणीय है।

তাঁহারে আপন-সেবা করাইতে না যুয়ায় ।
গুরু আজ্ঞা দিয়াছেন, কি করি উপায় ॥ ১৪৩ ॥

তাঁহারে আপন-সেবা করাইতে না য়ুয়ায় ।
গুরু আজ্ঞা দিয়াছেন, কি করি উপায় ॥ ১৪৩ ॥

তাঁহারে—उससे; **আপন-সেবা**—अपनी सेवा; **করাইতে**—कराना; **না য়ুয়ায়**—उचित नहीं है; **গুরু**—गुरु; **আজ্ঞা**—आज्ञा; **দিয়াছেন**—दी है; **কি**—क्या; **করি**—मैं कर सकता हूँ; **উপায়**—उपाय।

अनुवाद

"अतएव यह उचित नहीं होगा कि गुरु का सेवक मेरी निजी सेवा करे। फिर भी मेरे गुरु ने यह आदेश दिया है। तो मैं क्या करूँ?"

तात्पर्य

गुरु के सेवक या शिष्य किसी एक-दूसरे के गुरु-भाई होते हैं; अत: उन्हें एक-दूसरे का आदर *प्रभु* अर्थात् स्वामी के रूप में करना चाहिए। किसी को गुरु-भाई का अनादर नहीं करना चाहिए। इसीलिए श्री चैतन्य महाप्रभु ने सार्वभौम भट्टाचार्य से पूछा कि गोविन्द के बारे में क्या किया जाए। गोविन्द श्री चैतन्य महाप्रभु के गुरु ईश्वर पुरी का निजी सेवक था और अब ईश्वर पुरी ने गोविन्द को आज्ञा दी थी कि वह चैतन্য महाप्रभु का निजी सेवक बने अत: प्रश्न था कि ऐसी स्थिति में क्या किया जाए? इसीलिए श्री चैतन्य महाप्रभु अपने अनुभवी मित्र सार्वभौम भट्टाचार्य से पूछ रहे थे।

ভট্ট কহে,——গুরুর আজ্ঞা হয় বলবান্ ।
গুরু-আজ্ঞা না লঙ্ঘিয়ে, শাস্ত্র——প্রমাণ ॥ ১৪৪ ॥

भट्ट कहे,—गुरुर आज्ञा हय बलवान् ।
गुरु-आज्ञा ना लङ्घिये, शास्त्र—प्रमाण ॥ १४४॥

भट्ट कहे—सार्वभौम भट्टाचार्य ने कहा; **गुरुर आज्ञा**—गुरु की आज्ञा; **हय**—है; **बलवान्**—बलवती; **गुरु-आज्ञा**—गुरु की आज्ञा का; **ना**—नहीं; **लङ्घिये**—उल्लंघन हो सकता; **शास्त्र**—शास्त्रीय; **प्रमाण**—आदेश।

अनुवाद

सार्वभौम भट्टाचार्य ने कहा, "गुरु का आदेश अत्यन्त बलवान होता है और उसका उल्लंघन नहीं किया जा सकता। यही प्रामाणिक शास्त्रों का आदेश है।

স শুশ্রুবান্মাতরি ভার্গবেণ
পিতুর্নিয়োগাৎপ্রহৃতং দ্বিষদ্বৎ ।
প্রত্যগৃহীদগ্রজ-শাসনং তদ্
আজ্ঞা গুরূণাং হ্যবিচারণীয়া ॥ ১৪৫॥

स शुश्रुवान्मातरि भार्गवेण
पितुर्नियोगात्प्रहृतं द्विषद्वत् ।
प्रत्यगृहीदग्रज-शासनं तद्
आज्ञा गुरूणां ह्यविचारणीया ॥ १४५॥

सः—वे (लक्ष्मण, भगवान् रामचन्द्र के भाई); **शुश्रुवान्**—सुनकर; **मातरि**—माता को; **भार्गवेण**—परशुराम; **पितुः**—पिता की; **नियोगात्**—आज्ञा से; **प्रहृतम्**—हत्या करना; **द्विषत्-वत्**—शत्रु की भाँति; **प्रत्यगृहीत्**—मान लिया; **अग्रज-शासनम्**—बड़े भाई का आदेश; **तत्**—वह; **आज्ञा**—आदेश; **गुरूणाम्**—गुरूओं का (बुजुर्गों का), जैसे गुरु अथवा पिता का; **हि**—क्योंकि; **अविचारणीया**—बिना सोचे समझे पालनीय।

अनुवाद

"'अपने पिता की आज्ञा पाकर परशुराम ने अपनी माता रेणुका को मार डाला, मानो वह कोई शत्रु रही हो। भगवान् रामचन्द्र के छोटे भाई लक्ष्मण यह सुनकर तुरन्त अपने बड़े भाई की सेवा में लगकर उनके आदेशों का पालन करने लगे। गुरु की आज्ञा का बिना किसी विचार के पालन किया जाना चाहिए।'

तात्पर्य

यह श्लोक *रघुवंश* (१४.४६) का है। आगे के श्लोक में सीता के प्रति भगवान् रामचन्द्र के वचन हैं, जो *रामायण* (अयोध्या-काण्ड २२.९) से लिये गये हैं।

निर्विचारं गुरोराज्ञा मया कार्या महात्मनः ।
श्रेयो ह्येवं भवत्याश्च मम चैव विशेषतः ॥१४६॥

निर्विचारं गुरोराज्ञा मया कार्या महात्मनः ।
श्रेयो ह्येवं भवत्याश्च मम चैव विशेषतः ॥ १४६ ॥

निर्विचारम्—बिना विचारों के पालनीय; **गुरोः**—गुरु की; **आज्ञा**—आज्ञा; **मया**—मुझे; **कार्या**—करना चाहिए; **महा-आत्मनः**—महात्मा का; **श्रेयः**—सौभाग्य; **हि**—निस्सन्देह; **एवम्**—इस प्रकार; **भवत्याः**—आपके लिए; **च**—और; **मम**—मेरे लिए; **च**—भी; **एव**—अवश्य; **विशेषतः**—विशेषकर।

अनुवाद

"'पिता जैसे महान् व्यक्ति की आज्ञा का पालन बिना विचारे करना चाहिए, क्योंकि ऐसी आज्ञा हम दोनों का सौभाग्य है। विशेषतया मेरे लिए सौभाग्य है।"

तबे महाप्रभु ताँरे कैल अङ्गीकार ।
आपन-श्री-अङ्ग-सेवाय दिल अधिकार ॥१४७॥

तबे महाप्रभु ताँरे कैल अङ्गीकार ।
आपन-श्री-अङ्ग-सेवाय दिल अधिकार ॥ १४७ ॥

तबे—इसके बाद; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **ताँरे**—गोविन्द को; **कैल**—किया; **अङ्गीकार**—स्वीकार; **आपन**—अपने; **श्री-अङ्ग**—दिव्य शरीर की; **सेवाय**—सेवा में; **दिल**—दी; **अधिकार**—जिम्मेदारी।

अनुवाद

सार्वभौम भट्टाचार्य के ऐसा कहने पर श्री चैतन्य महाप्रभु ने गोविन्द का आलिंगन किया और उसे अपने शरीर की सेवा करने के लिए लगा लिया।

প্রভুর প্রিয় ভৃত্য করি' সবে করে মান ।
সকল বৈষ্ণবের গোবিন্দ করে সমাধান ॥ ১৪৮॥

প্রভুর প্রিয় ভৃত্য করি' সবে করে মান ।
সকল বৈষ্ণবের গোবিন্দ করে সমাধান ॥ ১৪৮॥

प्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **प्रिय**—प्रिय; **भृत्य**—सेवक; **करि'**—समझकर; **सबे**—सबने; **करे**—किया; **मान**—सम्मान; **सकल**—सब; **वैष्णवेर**—भक्तों की; **गोविन्द**—गोविन्द ने; **करे**—की; **समाधान**—सेवा।

अनुवाद

सभी व्यक्ति गोविन्द को श्री चैतन्य महाप्रभु का प्रियतम दास समझकर उसका सम्मान करते थे और गोविन्द सारे वैष्णवों की सेवा करता था तथा उनकी आवश्यकताओं का ध्यान रखता था।

ছোট-বড়-কীর্তনীয়া——দুই হরিদাস ।
রামাই, নন্দাই রহে গোবিন্দের পাশ ॥ ১৪৯॥

ছোট-বড়-কীর্তনীয়া——দুই হরিদাস ।
রামাই, নন্দাই রহে গোবিন্দের পাশ ॥ ১৪৯॥

छोट-बड़—छोटा तथा बड़ा; **कीर्तनीया**—कीर्तन गायक; **दुइ**—दो; **हरिदास**—हरिदास; **रामाइ**—रामाइ; **नन्दाइ**—नन्दाइ; **रहे**—रहने लगे; **गोविन्देर पाश**—गोविन्द के साथ।

अनुवाद

बड़ा हरिदास तथा छोटा हरिदास, दोनों जो गायक (कीर्तनिये) थे तथा रामाइ और नन्दाइ भी गोविन्द के साथ रहते थे।

গোবিন্দের সঙ্গে করে প্রভুর সেবন ।
গোবিন্দের ভাগ্য-সীমা না যায় বর্ণন ॥ ১৫০॥

গোবিন্দের সঙ্গে করে প্রভুর সেবন ।
গোবিন্দের ভাগ্য-সীমা না যায় বর্ণন ॥ ১৫০॥

गोविन्देर सङ्गे—गोविन्द के साथ; **करे**—करते; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **सेवन**—सेवा; **गोविन्देर**—गोविन्द के; **भाग्य-सीमा**—सौभाग्य की सीमा; **ना**—नहीं; **याय वर्णन**—वर्णन की जा सकती।

अनुवाद

वे सभी श्री चैतन्य महाप्रभु की सेवा करने के लिए गोविन्द के साथ रहते थे। अतः कोई भी गोविन्द के सौभाग्य का अनुमान नहीं लगा सकता था।

আর দিনে মুকুন্দ-দত্ত কহে প্রভুর স্থানে ।
ব্রহ্মানন্দ-ভারতী আইলা তোমার দরশনে ॥১৫১॥

आर दिने मुकुन्द-दत्त कहे प्रभुर स्थाने ।
ब्रह्मानन्द-भारती आइला तोमार दरशने ॥ १५१ ॥

आर दिने—अगले दिन; **मुकुन्द-दत्त**—मुकुन्द दत्त ने; **कहे**—कहा; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **स्थाने**—निवासस्थान पर; **ब्रह्मानन्द-भारती**—ब्रह्मानन्द भारती; **आइला**—आये हैं; **तोमार दरशने**—आपका दर्शन करने।

अनुवाद

अगले दिन मुकुन्द दत्त ने श्री चैतन्य महाप्रभु को सूचना दी, "आपके दर्शन हेतु ब्रह्मानन्द भारती आये हैं।"

আজ্ঞা দেহ' যদি তাঁরে আনিয়ে এথাই ।
প্রভু কহে,——গুরু তেঁহ, যাব তাঁর ঠাঞি ॥১৫২॥

आज्ञा देह' यदि ताँरे आनिये एथाइ ।
प्रभु कहे,——गुरु तेंह, याब ताँर ठाञि ॥ १५२ ॥

आज्ञा देह'—आज्ञा दो; **यदि**—यदि; **ताँरे**—उनको; **आनिये**—मैं ला सकता हूँ; **एथाइ**—यहाँ; **प्रभु कहे**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **गुरु तेंह**—वे मेरे गुरु हैं; **याब**—मैं जाऊँगा; **ताँर ठाञि**—उनके पास।

अनुवाद

फिर मुकुन्द दत्त ने महाप्रभु से पूछा, "क्या मैं उन्हें यहाँ ले आऊँ?" तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "ब्रह्मानन्द भारती मेरे गुरुतुल्य हैं। अच्छा यही होगा कि मैं उनके पास जाऊँ।"

এত বলি' মহাপ্রভু ভক্ত-গণ-সঙ্গে ।
চলি' আইলা ব্রহ্মানন্দ-ভারতীর আগে ॥১৫৩॥

एत बलि' महाप्रभु भक्त-गण-सङ्गे ।
चलि' आइला ब्रह्मानन्द-भारतीर आगे ॥ १५३ ॥

एत बलि'—यह कहकर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **भक्त-गण-सङ्गे**—भक्तों के साथ; **चलि'**—चलकर; **आइला**—आये; **ब्रह्मानन्द-भारतीर**—ब्रह्मानन्द भारती; **आगे**—के समक्ष।

अनुवाद

यह कहकर श्री चैतन्य महाप्रभु तथा उनके भक्तगण ब्रह्मानन्द भारती के समक्ष आये।

ब्रह्मानन्द परियाछे मृग-चर्माम्बर ।
ताहा देखि' प्रभु दुःख पाइला अन्तर ॥ १५४ ॥
ब्रह्मानन्द परियाछे मृग-चर्माम्बर ।
ताहा देखि' प्रभु दुःख पाइला अन्तर ॥ १५४ ॥

ब्रह्मानन्द—ब्रह्मानन्द; **परियाछे**—पहने थे; **मृग-चर्म-अम्बर**—मृगचर्म की पोशाक; **ताहा देखि'**—उसे देखकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **दुःख**—दुःख; **पाइला**—अनुभव किया; **अन्तर**—अपने मन में।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु तथा उनके भक्त उनके निकट पहुँचे, तो उन्होंने देखा कि वे मृगचर्म पहने थे। यह देखकर श्री चैतन्य महाप्रभु अत्यन्त दुःखी हुए।

तात्पर्य

ब्रह्मानन्द भारती शंकर सम्प्रदाय के थे। (*भारती* उपाधि शंकर सम्प्रदाय में दस प्रकार के संन्यासियों की उपाधियों में से एक है।) संसार से विरक्त होने वाले व्यक्ति के लिए यह प्रथा बनी हुई है कि वह अपने शरीर को मृगचर्म या वृक्ष की छाल से ढके। ऐसा *मनु-संहिता* का आदेश है। किन्तु यदि संसार से विरक्त संन्यासी केवल मृगचर्म पहनता है और आध्यात्मिक प्रगति नहीं करता, तो वह मिथ्या सम्मान से भ्रमित होता है। श्री चैतन्य महाप्रभु को ब्रह्मानन्द भारती द्वारा मृगचर्म पहनना अच्छा नहीं लगा।

देखिया त' छद्म कैल येन देखे नाञि ।
मुकुन्देरे पुछे,——काहाँ भारती-गोसाञि ॥ १५५ ॥
देखिया त' छद्म कैल ग्रेन देखे नाञि ।
मुकुन्देरे पुछे,——काहाँ भारती-गोसाञि ॥ १५५ ॥

देखिया—देखकर; **त'**—अवश्य; **छद्म कैल**—अभिनय किया; **ग्रेन**—जैसे; **देखे**—देखा; **नाञि**—न हो; **मुकुन्देरे पुछे**—मुकुन्द से पूछा; **काहाँ**—कहाँ हैं; **भारती-गोसाञि**—ब्रह्मानन्द भारती, मेरे आध्यात्मिक गुरु।

अनुवाद

ब्रह्मानन्द भारती को मृगचर्म के वेश में देखकर चैतन्य महाप्रभु ने ऐसा बहाना बनाया मानों वे उन्हें नहीं देख रहे हैं। इसके विपरीत उन्होंने मुकुन्द दत्त से कहा, "मेरे गुरु ब्रह्मानन्द भारती कहाँ हैं?"

मुकुन्द कहे,——एइ आगे देख विद्यमान ।
प्रभु कहे,——तेंह नहेन, तुमि अगेयान ॥ १५६ ॥
मुकुन्द कहे,——एइ आगे देख विद्यमान ।
प्रभु कहे,——तेंह नहेन, तुमि अगेयान ॥ १५६ ॥

मुकुन्द कहे—मुकुन्द ने कहा; **एइ आगे**—यहाँ सामने; **देख**—देखो; **विद्यमान**—उपस्थित; **प्रभु कहे**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने उत्तर दिया; **तेंह नहेन**—वे नहीं हैं; **तुमि अगेयान**—तुम गलत हो।

अनुवाद

मुकुन्द दत्त ने उत्तर दिया, "ये ब्रह्मानन्द भारती आपके समक्ष हैं।" महाप्रभु ने कहा, "तुम गलत कह रहे हो। ये ब्रह्मानन्द भारती नहीं हैं।

अन्येरे अन्य कह, नाहि तोमार ज्ञान ।
भारती-गोसाञि केने परिबेन चाम ॥ १५७ ॥
अन्येरे अन्य कह, नाहि तोमार ज्ञान ।
भारती-गोसाञि केने परिबेन चाम ॥ १५७ ॥

अन्येरे—किसी को; **अन्य कह**—आप कोई और कह रहे हो; **नाहि**—नहीं है; **तोमार**—

तुम्हें; **ज्ञान**—ज्ञान; **भारती**—ब्रह्मानन्द भारती; **गोसाञि**—मेरे गुरु; **केने**—क्यों; **परिबेन**—पहनेंगे; **चाम**—चर्म।

अनुवाद

"तुम किसी दूसरे की बात कर रहे होगे, क्योंकि निश्चित रूप से ये ब्रह्मानन्द भारती नहीं हैं। तुम्हें कोई ज्ञान नहीं है। भला ब्रह्मानन्द भारती क्यों मृगचर्म पहनने लगे?"

শুনি' ব্রহ্মানন্দ করে হৃদয়ে বিচারে ।
মোর চর্মাম্বর এই না ভায় ইঁহারে ॥ ১৫৮॥

শুনি' ব্রহ্মানন্দ করে হৃদয়ে বিচারে ।
মোর চর্মাম্বর এই না ভায় ইঁহারে ॥ ১৫৮॥

शुनि'—सुनकर; **ब्रह्मानन्द**—ब्रह्मानन्द ने; **करे**—किया; **हृदये**—अपने भीतर; **विचारे**—विचार; **मोर**—मेरी; **चर्म-अम्बर**—चर्म की पोशाक; **एइ**—यह; **ना**—नहीं; **भाय**—अच्छी नहीं लगती; **इँहारे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को।

अनुवाद

जब ब्रह्मानन्द भारती ने यह सुना तो उन्होंने सोचा, "मेरा मृगचर्म श्री चैतन्य महाप्रभु को अच्छा नहीं लग रहा है।"

ভাল কহেন,—চর্মাম্বর দম্ভ লাগি' পরি ।
চর্মাম্বর-পরিধানে সংসার না তরি ॥ ১৫৯॥

ভাল কহেন,—চর্মাম্বর দম্ভ লাগি' পরি ।
চর্মাম্বর-পরিধানে সংসার না তরি ॥ ১৫৯॥

भाल—अच्छा; **कहेन**—उन्होंने कहा; **चर्म-अम्बर**—चमड़े की पोशाक; **दम्भ**—अभिमान; **लागि'**—के कारण; **परि**—मैं पहनता हूँ; **चर्म-अम्बर-परिधाने**—चर्म की पोशाक पहनकर; **संसार**—संसार को; **ना तरि**—मैं पार नहीं कर सकता।

अनुवाद

इस तरह अपनी त्रुटि स्वीकार करते हुए ब्रह्मानन्द भारती ने सोचा, "उन्होंने ठीक ही कहा है। मैं इस मृगचर्म को केवल प्रतिष्ठा के लिए ही

धारण करता हूँ। मैं केवल मृगचर्म पहनकर अज्ञान के सागर को पार नहीं कर सकता।

আজি হৈতে না পরিব এই চর্মাম্বর ।
প্রভু বহির্বাস আনাইলা জানিয়া অন্তর ॥১৬০॥

आजि हैते ना परिब एइ चर्माम्बर ।
प्रभु बहिर्वास आनाइला जानिया अन्तर ॥ १६० ॥

आजि हैते—आज से; **ना परिब**—मैं नहीं पहनूँगा; **एइ**—यह; **चर्म-अम्बर**—चमड़े की पोशाक; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **बहिर्-वास**—संन्यासी के वस्त्र; **आनाइला**—किसी से मंगवाए; **जानिया**—जानकर; **अन्तर**—उसके मन का विचार।

अनुवाद

"आज से मैं यह मृगचर्म धारण नहीं करूँगा।" जैसे ही ब्रह्मानन्द भारती ने यह निश्चय किया, वैसे ही श्री चैतन्य महाप्रभु उनके मन की बात जान गये और उन्होंने तुरन्त ही संन्यासी के वस्त्र मँगा भेजे।

চর্মাম্বর ছাড়ি' ব্রহ্মানন্দ পরিল বসন ।
প্রভু আসি' কৈল তাঁর চরণ বন্দন ॥১৬১॥

चर्माम्बर छाड़ि' ब्रह्मानन्द परिल वसन ।
प्रभु आसि' कैल ताँर चरण वन्दन ॥ १६१ ॥

चर्म-अम्बर छाड़ि'—चमड़े की पोशाक छोड़कर; **ब्रह्मानन्द**—ब्रह्मानन्द भारती; **परिल**—पहने; **वसन**—वस्त्र; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **आसि'**—आकर; **कैल**—किया; **ताँर**—उनकी; **चरण वन्दन**—चरण वन्दना।

अनुवाद

ज्योंही ब्रह्मानन्द भारती ने अपना मृगचर्म त्याग दिया और संन्यासी के वस्त्र पहन लिए, त्योंही श्री चैतन्य महाप्रभु ने आकर उनके चरणकमलों में नमस्कार किया।

ভারতী কহে,——তোমার আচার লোক শিখাইতে ।
পুনঃ না করিবে নতি, ভয় পাঙ চিত্তে ॥১৬২॥

भारती कहे,——तोमार आचार लोक शिखाइते ।
पुनः ना करिबे नति, भय पाऊ चित्ते ॥ १६२ ॥

भारती कहे—ब्रह्मानन्द भारती ने कहा; **तोमार**—आपका; **आचार**—आचरण; **लोक**—सामान्य लोगों को; **शिखाइते**—शिक्षा देने के लिए; **पुनः**—दोबारा; **ना**—नहीं; **करिबे**—करूँगा; **नति**—नमस्कार; **भय**—भय; **पाऊ**—मैं पाता हूँ; **चित्ते**—मन में।

अनुवाद

ब्रह्मानन्द भारती ने कहा, "आप अपने आचरण के द्वारा सामान्य जनता को शिक्षा देते हैं। मैं आपकी इच्छा के विरुद्ध कुछ भी नहीं करूँगा, अन्यथा आप मुझे नमस्कार भी नहीं करेंगे और मेरी उपेक्षा करोगे। मुझे इसी का डर है।

साम्प्रतिक 'दुई ब्रह्म' इहाँ 'चलाचल' ।
जगन्नाथ——अचल ब्रह्म, तुमि त' सचल ॥ १६३ ॥
साम्प्रतिक 'दुइ ब्रह्म' इहाँ 'चलाचल' ।
जगन्नाथ——अचल ब्रह्म, तुमि त' सचल ॥ १६३ ॥

साम्प्रतिक—अभी; **दुइ ब्रह्म**—दो ब्रह्म अथवा आध्यात्मिक व्यक्ति; **इहाँ**—यहाँ; **चल-अचल**—चल और अचल; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ; **अचल ब्रह्म**—अचल ब्रह्म; **तुमि**—आप; **त'**—तो; **स-चल**—सचल ब्रह्म।

अनुवाद

"इस समय मुझे दो ब्रह्म दिख रहे हैं—एक ब्रह्म हैं भगवान् जगन्नाथ जो गतिमान नहीं हैं और दूसरे ब्रह्म आप हैं, जो सचल हैं। भगवान् जगन्नाथ पूज्य अर्चाविग्रह हैं और वे अचल ब्रह्म हैं। किन्तु आप तो श्री चैतन्य महाप्रभु हैं और आप यहाँ-वहाँ चलते-फिरते रहते हैं। आप दोनों एक ही ब्रह्म अर्थात् भौतिक प्रकृति के स्वामी हैं, किन्तु आप दो भूमिकाएँ निभा रहे हैं—एक सचल की और दूसरी अचल की। इस तरह जगन्नाथ पुरी या पुरुषोत्तम में अब दो ब्रह्म निवास कर रहे हैं।

तुमि——गौर-वर्ण, तेँह——श्यामल-वर्ण ।
दुई ब्रह्मे कैल सब जगत्तारण ॥ १६४ ॥

तुमि——गौर-वर्ण, तेंह——श्यामल-वर्ण ।
दुइ ब्रह्मे कैल सब जगत्तारण ॥ १६४॥

तुमि—आप; **गौर-वर्ण**—गौरवर्ण; **तेंह**—वे; **श्यामल-वर्ण**—श्याम वर्ण के; **दुइ ब्रह्मे**—दोनों ब्रह्मों ने; **कैल**—किया; **सब जगत्**—सारे जगत् का; **तारण**—उद्धार।

अनुवाद

"दोनों ब्रह्मों में से आप गोरे रंग के हो और दूसरे ब्रह्म भगवान् जगन्नाथ साँवले हैं। किन्तु आप दोनों ही सारे जगत् का उद्धार कर रहे हैं।

प्रभु कहे,——सत्य कहि, तोमार आगमने ।
दुइ ब्रह्म प्रकटिल श्री-पुरुषोत्तमे ॥ १६५॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने वहा; **सत्य कहि**—मैं सत्य कहता हूँ; **तोमार आगमने**—आपकी उपस्थिति से; **दुइ ब्रह्म**—दोनों ब्रह्म; **प्रकटिल**—प्रकट हुए हैं; **श्री-पुरुषोत्तमे**—जगन्नाथ पुरी में।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने उत्तर दिया, "वास्तव में, सच्ची बात तो यह है कि आपकी उपस्थिति से जगन्नाथ पुरी में अब दो ब्रह्म हैं।

'ब्रह्मानन्द' नाम तुमि——गौर-ब्रह्म 'चल' ।
श्याम-वर्ण जगन्नाथ वसियाछेन 'अचल' ॥ १६६॥

'ब्रह्मानन्द' नाम तुमि——गौर-ब्रह्म 'चल' ।
श्याम-वर्ण जगन्नाथ वसियाछेन 'अचल' ॥ १६६॥

ब्रह्मानन्द—ब्रह्मानन्द; **नाम तुमि**—आपका नाम; **गौर-ब्रह्म**—गौर नामक ब्रह्म; **चल**—चलायमान हैं; **श्याम-वर्ण**—श्याम वर्ण के; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ; **वसियाछेन**—बैठे हैं; **अचल**—अचल।

अनुवाद

"ब्रह्मानन्द तथा गौरहरि—दोनों ही सचल हैं, किन्तु श्याम-वर्ण वाले जगन्नाथ दृढ़ता से बैठे हैं और अचल हैं।"

तात्पर्य

ब्रह्मानन्द भारती यह सिद्ध करना चाहते थे कि भगवान् तथा जीव में कोई अन्तर नहीं है, किन्तु श्री चैतन्य महाप्रभु यह सिद्ध करना चाहते थे कि वे तथा ब्रह्मानन्द भारती दोनों ही जीव हैं और यद्यपि सारे जीव ब्रह्म हैं, किन्तु वे संख्या में अनेक हैं, जबकि भगवान् परम ब्रह्म एक हैं। दूसरी ओर ब्रह्मानन्द भारती यह भी सिद्ध करना चाहते थे कि जगन्नाथ तथा श्री चैतन्य महाप्रभु एक ही भगवान् हैं, किन्तु अपनी उद्देश्य-पूर्ति के लिए श्री चैतन्य महाप्रभु सचल प्रतीत होते हैं, जबकि जगन्नाथ अचल हैं। किन्तु दोनों एक ही हैं। इस तरह बहुत ही रोचक तर्क चल रहा था। तब ब्रह्मानन्द भारती ने अन्तिम निर्णय के लिए इस मामले को सार्वभौम भट्टाचार्य को सौंप दिया।

ভারতী কহে,——সার্বভৌম, মধ্যস্থ হঞা ।
ইঁহার সনে আমার 'ন্যায়' বুঝ' মন দিয়া ॥ ১৬৭॥

भारती कहे,——सार्वभौम, मध्यस्थ हञा ।
इँहार सने आमार 'न्याय' बुझ' मन दिया ॥ १६७॥

भारती कहे—ब्रह्मानन्द भारती ने कहा; **सार्वभौम**—हे सार्वभौम भट्टाचार्य; **मध्य-स्थ हञा**—मध्यस्थ होकर; **इँहार सने**—श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ; **आमार**—मेरे; **न्याय**—तर्क; **बुझ'**—समझने का प्रयास करो; **मन दिया**—ध्यानपूर्वक।

अनुवाद

ब्रह्मानन्द भारती ने कहा, "हे सार्वभौम भट्टाचार्य, आप मेरे तथा श्री चैतन्य महाप्रभु के बीच इस तर्क में मध्यस्थ बनो।"

'ব্যাপ্য' 'ব্যাপক'-ভাবে 'জীব'-'ব্রহ্মে' জানি ।
জীব——ব্যাপ্য, ব্রহ্ম——ব্যাপক, শাস্ত্রেতে বাখানি ॥ ১৬৮॥

'व्याप्य' 'व्यापक'-भावे 'जीव'-'ब्रह्मे' जानि ।
जीव——व्याप्य, ब्रह्म——व्यापक, शास्त्रेते वाखानि ॥ १६८॥

व्याप्य—स्थानीय; **व्यापक**—सब जगह उपस्थित; **भावे**—इस भाव में; **जीव**—जीव; **ब्रह्मे**—परम भगवान्; **जानि**—मैं जानता हूँ; **जीव**—जीव; **व्याप्य**—स्थानीय; **ब्रह्म**—परम भगवान्; **व्यापक**—सब जगह उपस्थित ; **शास्त्रेते**—शास्त्रों में; **वाखानि**—वर्णन।

अनुवाद

ब्रह्मानन्द भारती ने कहा, "जीव स्थानीय है, जबकि परम ब्रह्म सर्वव्यापक है। यह शास्त्रों का निर्णय है।

तात्पर्य

ब्रह्मानन्द भारती ने सार्वभौम भट्टाचार्य का ध्यान इसीलिए आकृष्ट किया, क्योंकि वे उनसे तर्क का निर्णय कराना चाहते थे। तब उन्होंने कहा कि परब्रह्म सर्वव्यापक है। इसकी पुष्टि भगवान् कृष्ण द्वारा *भगवद्गीता* (१३.३) में की गई है :

क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत।
क्षेत्र क्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम॥

"हे भरतवंशी, तुम जान लो कि मैं सभी शरीरों को जानने वाला भी हूँ और इस शरीर को तथा इसके ज्ञाता को जानना ज्ञान है। यही मेरा मत है।"

पूर्ण पुरूषोत्तम भगवान् अपने परमात्मा स्वरूप में सर्वत्र व्याप्त रहते हैं। *ब्रह्म-संहिता* में कहा गया है—*अण्डान्तस्थपरमाणुचयान्तरस्थम्*—अपने सर्वव्यापी गुण के कारण भगवान् ब्रह्माण्ड के भीतर तथा ब्रह्माण्ड के सारे तत्त्वों के भीतर विद्यमान रहते हैं। यहाँ तक कि वे एक परमाणु के भीतर भी रहते हैं। इस तरह परम भगवान् गोविन्द सर्वव्यापी हैं। दूसरी ओर, सारे जीव अत्यन्त लघु हैं। कहा जाता है कि जीव बाल की नोक के दस हजारवें भाग के बराबर है। इसलिए जीव स्थानीय (स्थान विशेष में सीमित) है। सारे जीव ब्रह्मतेज में स्थित रहते हैं, जो परम भगवान् के देह की कान्ति है।

चर्म घुचाञा कैल आमारे शोधन ।
दोँहार व्याप्य-व्यापकत्वे एइ त' कारण ॥ १६९॥

चर्म घुचाञा कैल आमारे शोधन ।
दोंहार व्याप्य-व्यापकत्वे एइ त' कारण ॥ १६९॥

चर्म—मृगचर्म; **घुचाञा**—ले जाकर; **कैल**—किया; **आमारे**—मुझे; **शोधन**—शुद्धीकरण; **दोंहार**—हम दोनों; **व्याप्य**—स्थानीय होने के कारण; **व्यापकत्वे**—सब जगह उपस्थित होने के कारण; **एइ**—यह; **त'**—निस्सन्देह; **कारण**—कारण।

अनुवाद

"श्री चैतन्य महाप्रभु ने मेरा मृगचर्म छुड़ाकर मुझे निर्मल बना दिया है। यह इसका प्रमाण है कि वे सर्वव्यापक तथा सर्वशक्तिमान हैं और मैं उनके अधीन हूँ।

तात्पर्य

यहाँ पर ब्रह्मानन्द भारती यह बतलाना चाहते हैं कि श्री चैतन्य महाप्रभु परब्रह्म हैं और वे परब्रह्म के अधीनस्थ ब्रह्म हैं। इसकी पुष्टि वेदों से होती है—*नित्योनित्यानां चेतनश्चेतनानाम्।* भगवान् ब्रह्म या परम ब्रह्म हैं अर्थात् वे समस्त जीवों में अग्रणी हैं। परम ब्रह्म अर्थात् भगवान् तथा जीव दोनों व्यक्ति हैं, लेकिन परम ब्रह्म सर्वशक्तिमान हैं, जबकि जीव अधीन हैं।

सुवर्ण-वर्णो हेमाङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गदी ।
सन्न्यास-कृच्छमः शान्तो निष्ठा-शान्ति-परायणः ॥ १७० ॥

सुवर्ण-वर्णो हेमाङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गदी ।
सन्न्यास-कृच्छमः शान्तो निष्ठा-शान्ति-परायणः ॥ १७० ॥

सुवर्ण—सोने की; **वर्णः**—अंग कान्ति वाले; **हेम-अङ्गः**—जिनका शरीर पिघले सोने जैसा था; **वर-अङ्गः**—अत्यन्त सुन्दर शरीर वाले; **चन्दन-अङ्गदी**—जिनके शरीर पर चन्दन का लेप था; **सन्न्यास-कृत्**—संन्यास का पालन करने वाले; **शमः**—सन्तुलित; **शान्तः**—शान्त; **निष्ठा**—भक्ति के; **शान्ति**—और शान्ति के; **परायणः**—सर्वोच्च आश्रय।

अनुवाद

"'उनके शरीर का रंग सुनहला है और उनका सारा शरीर पिघले सोने जैसा है। उनके शरीर का अंग-प्रत्यंग सुडौल है तथा चन्दन से लेप किया हुआ है। संन्यास ग्रहण करके महाप्रभु सदैव सन्तुलित रहते हैं। वे हरे कृष्ण मन्त्र के कीर्तन के अपने उद्देश्य में दृढ़ हैं और वे अपने द्वैत निर्णय तथा अपनी शान्ति में दृढ़ता से स्थित हैं।'

तात्पर्य

यह *महाभारत* के विष्णुसहस्रनाम स्तोत्र का उद्धरण है।

এই সব নামের ইঁহ হয় নিজাস্পদ ।
চন্দনাক্ত প্রসাদ-ডোর——শ্রী-ভুজে অঙ্গদ ॥১৭১॥

एइ सब नामेर इँह हय निजास्पद ।
चन्दनाक्त प्रसाद-डोर——श्री-भुजे अङ्गद ॥ १७१ ॥

एइ सब—ये सब; **नामेर**—नामों के; **इँह**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **हय**—हैं; **निज-आस्पद**—भंडार; **चन्दन-अक्त**—चंदन से लिपा हुआ; **प्रसाद-डोर**—जगन्नाथ विग्रह से मिला धागा; **श्री-भुजे**—अपने बाजू पर; **अङ्गद**—आभूषण।

अनुवाद

"विष्णुसहस्र-नाम-स्तोत्र के श्लोक में उल्लिखित सारे लक्षण श्री चैतन्य महाप्रभु के शरीर में प्रकट हैं। उनकी भुजाएँ चन्दन-लेप एवं श्री जगन्नाथजी पर चढ़े डोरे से सुसज्जित हैं और ये उनके आभूषण-रूप कंकण हैं।"

ভট্টাচার্য কহে,——ভারতী, দেখি তোমার জয় ।
প্রভু কহে,——যেই কহ, সেই সত্য হয় ॥১৭২॥

भट्टाचार्य्य कहे,——भारती, देखि तोमार जय ।
प्रभु कहे,——य़ेइ कह, सेइ सत्य हय ॥ १७२ ॥

भट्टाचार्य्य कहे—भट्टाचार्य ने कहा; **भारती**—हे ब्रह्मानन्द भारती; **देखि**—मैं देखता हूँ; **तोमार जय**—आपकी विजय; **प्रभु कहे**—चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **य़ेइ कह**—जो कुछ आप कहते हैं; **सेइ**—वह; **सत्य**—सत्य; **हय**—है।

अनुवाद

यह सुनकर सार्वभौम भट्टाचार्य ने अपना निर्णय यह कहते हुए सुनाया, "हे ब्रह्मानन्द भारती, मैं देख रहा हूँ कि आप विजयी हो।" इस पर श्री चैतन्य महाप्रभु ने तुरन्त उत्तर दिया, "ब्रह्मानन्द भारती ने जो कुछ कहा है उसे मैं स्वीकार करता हूँ। यह मेरे लिए बिल्कुल सही है।"

গুরু-শিষ্য-ন্যায়ে সত্য শিষ্যের পরাজয় ।
ভারতী কহে,——এহো নহে, অন্য হেতু হয় ॥১৭৩॥

गुरु-शिष्य-न्याये सत्य शिष्येर पराजय ।
भारती कहे,——एहो नहे, अन्य हेतु हय ॥ १७३ ॥

गुरु-शिष्य-न्याये—गुरु और शिष्य में तर्क; **सत्य**—अवश्य; **शिष्येर**—शिष्य की; **पराजय**—पराजय; **भारती कहे**—ब्रह्मानन्द भारती ने कहा; **एहो नहे**—ऐसा नहीं है; **अन्य हेतु**—अन्य कारण; **हय**—है।

अनुवाद

इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने आपको शिष्य और ब्रह्मानन्द भारती को अपने गुरु के रूप में स्वीकार किया। तब उन्होंने कहा, "यह शिष्य अपने गुरु से तर्क में निश्चय ही हार गया है।" ब्रह्मानन्द भारती ने तुरन्त प्रतिवाद करते हुए कहा "आपकी हार का कारण यह नहीं है। कारण कुछ दूसरा ही है।

ভক্ত ঠাঞি হার' তুমি,——এ তোমার স্বভাব ।
আর এক শুন তুমি আপন প্রভাব ॥ ১৭৪ ॥

भक्त ठाञि हार' तुमि,——ए तोमार स्वभाव ।
आर एक शुन तुमि आपन प्रभाव ॥ १७४ ॥

भक्त ठाञि—भक्त की उपस्थिति में; **हार'**—हार जाना; **तुमि**—आप; **ए**—यह; **तोमार**—आपका; **स्वभाव**—स्वभाव; **आर**—अन्य; **एक**—एक; **शुन**—सुनो; **तुमि**—आप; **आपन प्रभाव**—अपना प्रभाव।

अनुवाद

"यह आपका स्वाभाविक गुण है कि आप अपने भक्तों के हाथों अपनी पराजय स्वीकार करते हैं। आपकी एक दूसरी भी महिमा है, जिसे आप सावधान होकर सुनो।

আজন্ম করিনু মুঞি 'নিরাকার'-ধ্যান ।
তোমা দেখি' 'কৃষ্ণ' হৈল মোর বিদ্যমান ॥ ১৭৫ ॥

आजन्म करिनु मुञि 'निराकार'-ध्यान ।
तोमा देखि' 'कृष्ण' हैल मोर विद्यमान ॥ १७५ ॥

आ-जन्म—मेरे जन्म से लेकर; **करिनु**—किया है; **मुञि**—मैं; **निराकार-ध्यान**—निराकार ब्रह्म का ध्यान; **तोमा देखि'**—आपको देखकर; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **हैल**—हो गये; **मोर**—मुझे; **विद्यमान**—अनुभव।

अनुवाद

"मैं जन्म से ही निर्विशेष ब्रह्म का ध्यान करता रहा हूँ, किन्तु जब से आपको देखा है, मुझे कृष्ण की पूरी-पूरी अनुभूति हो गई है।"

तात्पर्य

ब्रह्मानन्द भारती ने स्वीकार किया कि जब भी गुरु तथा शिष्य में कोई तर्क होता है, तो स्वभावत: गुरु ही विजयी होता है, भले ही शिष्य प्रबल तर्क क्यों न प्रस्तुत करे। दूसरे शब्दों में, गुरु के वचन शिष्य के वचनों की अपेक्षा अधिक मान्य हैं। ऐसी परिस्थितियों में, श्री ब्रह्मानन्द भारती गुरु-पद पर होने के कारण श्री चैतन्य पर, जो अपने आपको ब्रह्मानन्द भारती का शिष्य मानते थे, विजयी हुए। किन्तु ब्रह्मानन्द भारती ने तर्क को पलटकर भक्त के पद से स्वीकार किया कि श्री चैतन्य महाप्रभु पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् कृष्ण हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि महाप्रभु स्वेच्छा से अपने भक्त के प्रति स्नेह के कारण पराजित हुए। वे स्वेच्छा से हारे, क्योंकि भगवान् को कोई परास्त नहीं कर सकता। इस सम्बन्ध में *श्रीमद्भागवत* (१.९.३७) में भीष्म के शब्द महत्त्वपूर्ण हैं :

स्वनिगममपहाय मत्प्रतिज्ञा-
मृतम् अधिकर्तुम् अवप्लुतो रथस्थ:।
धृतरथचरणोऽभ्ययाच्चलद्गु-
र्हरिरिव हन्तुमिभं गतोत्तरीय:॥

"मेरी इच्छा पूरी करते हुए तथा अपने वचन की परवाह न करते हुए वे रथ से नीचे उतरे, उसका पहिया लिया और तेजी से मेरी ओर दौड़े, जिस तरह सिंह हाथी को मारने जाता है। यहाँ तक कि वे रास्ते में अपना उत्तरीय वस्त्र भी गिराते गये।"

कृष्ण ने प्रतिज्ञा की थी कि वे कुरुक्षेत्र के युद्ध में लड़ेंगे नहीं, किन्तु कृष्ण की प्रतिज्ञा भंग करने के लिए भीष्म ने अर्जुन पर इतना उग्र आक्रमण किया कि कृष्ण को बाध्य होकर रथ का पहिया उठाकर भीष्म पर आक्रमण करना

पड़ा। भगवान् ने यह ऐसा दिखाने के लिए किया कि वे भक्त की रक्षा अपनी प्रतिज्ञा की परवाह न करते हुए भी कर रहे हैं। ब्रह्मानन्द भारती ने कहा, "मैं अपने जीवन के प्रारम्भ से निर्विशेष ब्रह्म के साक्षात्कार के प्रति आसक्त था, लेकिन ज्योंही मैंने आपको देखा, त्योंही मैं भगवान् कृष्ण के प्रति अत्यधिक अनुरक्त हो उठा।" अतएव श्री चैतन्य महाप्रभु स्वयं भगवान् कृष्ण हैं। इस तरह ब्रह्मानन्द भारती उनके भक्त बन गये।

कृष्ण-नाम स्फुरे मुखे, मने नेत्रे कृष्ण ।
तोमाके तद्रूप देखि' हृदय——सतृष्ण ॥ १७६॥

कृष्ण-नाम स्फुरे मुखे, मने नेत्रे कृष्ण ।
तोमाके तद्रूप देखि' हृदय——सतृष्ण ॥ १७६॥

कृष्ण-नाम—भगवान् कृष्ण का पावन नाम; **स्फुरे**—प्रकट है; **मुखे**—मुख में; **मने**—मन में; **नेत्रे**—नेत्रों के सामने; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण की उपस्थिति; **तोमाके**—आपके; **तत्-रूप**—उनके रूप में; **देखि'**—देखता हूँ; **हृदय**—मेरा हृदय; **स-तृष्ण**—अति उत्सुक।

अनुवाद

ब्रह्मानन्द भारती कहते रहे, "जब से मैंने आपको देखा है, तब से मैं अपने मन में भगवान् कृष्ण की उपस्थिति का अनुभव कर रहा हूँ और उन्हें अपनी आँखों के सामने देख रहा हूँ। अब मैं भगवान् कृष्ण के पवित्र नाम का कीर्तन करना चाहता हूँ। इसके अतिरिक्त, मैं अपने हृदय में आपको कृष्ण मानता हूँ, अतएव मैं आपकी सेवा करने के लिए अत्यन्त उत्सुक हूँ।

बिल्वमङ्गल कैल यैछे दशा आपनार ।
इहाँ देखि' सेइ दशा हइल आमार ॥ १७७॥

बिल्वमङ्गल कैल ग्रैछे दशा आपनार ।
इहाँ देखि' सेइ दशा हइल आमार ॥ १७७॥

बिल्वमङ्गल—बिल्वमंगल; **कैल**—किया; **ग्रैछे**—जैसी; **दशा**—दशा; **आपनार**—अपनी; **इहाँ**—यहाँ; **देखि'**—मैं देखता हूँ; **सेइ दशा**—वही दशा; **हइल**—हो गई; **आमार**—मेरी।

अनुवाद

"बिल्वमंगल ठाकुर ने पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के साक्षात्कार के लिए अपनी निर्विशेष अनुभूति त्याग दी। अब मैं देख रहा हूँ कि मेरी दशा भी उन्हीं जैसी हो रही है, क्योंकि अब यह बदल चुकी है।"

तात्पर्य

प्रारम्भिक जीवन में बिल्वमंगल ठाकुर निर्विशेष अद्वैतवादी थे और वे निर्विशेष ब्रह्मज्योति का ध्यान किया करते थे। बाद में वे भगवान् कृष्ण के भक्त बन गये। उनके इस परिवर्तन की व्याख्या अगले श्लोक (१७८) में दी गई है, जो *भक्तिरसामृतसिन्धु* से उद्धृत है। कभी-कभी भक्त क्रमशः निर्विशेष ब्रह्म तथा अन्तर्यामी परमात्मा का साक्षात्कार कर लेने के बाद भगवान् अर्थात् परम पुरुष के साक्षात्कार की अवस्था को प्राप्त करता है। ऐसे भक्त की स्थिति का वर्णन प्रबोधानन्द सरस्वती ने *चैतन्य-चन्द्रामृत* (५) में किया है :

कैवल्यं नरकायते त्रिदशपूराकाशपुष्पायते
दुर्दान्तेन्द्रियकालसर्पपटली प्रोत्खातदंष्ट्रायते।
विश्वं पूर्णसुखायते विधिमहेन्द्रादिश्च कीटायते
यत्कारुण्यकटाक्षवैभववतां तं गौरमेव स्तुमः॥

भक्त को *कैवल्य* अर्थात् ब्रह्मज्योति से एकाकार होना नरक जैसा लगता है। स्वर्गलोक उसे मायाजाल-जैसा प्रतीत होता है। योगी इन्द्रिय निग्रह के लिए ध्यान धरते हैं, किन्तु भक्त को इन्द्रियाँ दंतरहित सर्पों जैसी लगती हैं। भक्त को अपनी इन्द्रियों को वश में नहीं करनी पड़ती, क्योंकि उसकी इन्द्रियाँ पहले से भगवान् की सेवा में लगी हुइ रहती हैं। फलतः उसकी इन्द्रियों द्वारा सर्पों की तरह कार्य करने की सम्भावना नहीं रहती। भौतिक अवस्था में इन्द्रियाँ विषधर सर्पों जैसी प्रबल होती हैं। किन्तु जब इन्द्रियाँ भगवान् की सेवा में लग जाती हैं, तब वे उस सर्प की तरह रह जाती हैं, जिसके दाँत तोड़ दिये गये हैं, अतः वे भक्त के लिए खतरनाक नहीं रह जातीं। भक्त के लिए सारा जगत् वैकुण्ठ की प्रतिकृति होता है, क्योंकि उसे कोई चिन्ता नहीं सताती। वह प्रत्येक वस्तु को कृष्ण की समझता है और उसका भोग स्वयं नहीं करना चाहता। यहाँ तक कि उसे ब्रह्मा या इन्द्र के पद की भी इच्छा नहीं होती। वह हर वस्तु को

भगवान् की सेवा में लगा देने के लिए इच्छुक रहता है। अतएव उसके सामने कोई समस्या ही नहीं उठती। वह अपनी मूल वैधानिक अवस्था में स्थित रहता है। यह तभी सम्भव है, जब उस पर श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपादृष्टि हो।

चैतन्य-चन्द्रामृत में इसी सिद्धान्त से सम्बन्धित अनेक श्लोक हैं :

धिक् कुर्वन्ति च ब्रह्मयोगविदुषस्तं गौरचन्द्रं नुमः

(*चैतन्य चन्द्रामृत* ६)

तावद् ब्रह्मकथा विमुक्तपदवी तावन्न तिक्तीभवेत्
तावच्चापि विशृङ्खलत्वमयते नो लोकवेदस्थितिः।
तावच्छास्त्रविदां मिथः कलकलो नाना बहिर्वर्त्मसु
श्रीचैतन्यपदाम्बुजप्रियजनो यावन्न दिग्गोचरः॥

(*चैतन्य चन्द्रामृत* १९)

गौरश्चौरः सकल महरत् कोऽपि मे तीव्रवीर्यः।

(*चैतन्य चन्द्रामृत* ६०)

भक्त को निर्विशेष ब्रह्म की चर्चा अच्छी नहीं लगती। शास्त्रों के तथाकथित विधान भी उसके लिए व्यर्थ हैं। ऐसे अनेक लोग हैं, जो शास्त्रों पर वाद-विवाद करते हैं, किन्तु भक्त के लिए आसी चर्चाएँ मात्र कानफाड़ू शोर के समान हैं। श्री चैतन्य महाप्रभु के प्रभाव से ये सारी समस्याएँ दूर हो जाती हैं।

अद्वैत-वीथी-पथिकैरुपास्याः
स्वानन्द-सिंहासन-लब्ध-दीक्षाः ।
शठेन केनापि वयं हठेन
दासी-कृता गोप-वधू-विटेन ॥ १७८॥

अद्वैत-वीथी-पथिकैरुपास्याः
स्वानन्द-सिंहासन-लब्ध-दीक्षाः ।
शठेन केनापि वयं हठेन
दासी-कृता गोप-वधू-विटेन ॥ १७८॥

अद्वैत-वीथी—अद्वैत मार्ग पर; **पथिकैः**—पथिकों से; **उपास्याः**—पूज्य; **स्व-आनन्द**—आत्म-साक्षात्कार का; **सिंह-आसन**—सिंहासन पर; **लब्ध-दीक्षाः**—दक्षित होकर; **शठेन**—

धोखेबाज से; **केन-अपि**—किसी; **वयम्**—मैं; **हठेन**—बलपूर्वक; **दासी-कृता**—दासी बनाकर; **गोप-वधू-विटेन**—गोपियों से हास्य विनोद करनेवाले बालक से।

अनुवाद

ब्रह्मानन्द भारती इस निष्कर्ष पर पहुँचे, "'यद्यपि मैं अद्वैत मार्ग पर चलने वालों द्वारा पूजित था तथा योग पद्धति द्वारा आत्म-साक्षात्कार में दीक्षित था, किन्तु गोपियों से परिहास करने वाले एक चतुर बालक ने बलपूर्वक मुझे एक दासी के रूप में परिणत कर दिया है।'"

तात्पर्य

यह श्लोक बिल्वमंगल ठाकुर का है। यह *भक्तिरसामृत- सिन्धु* (३.१.४४) में आया है।

प्रभु कहे,——कृष्णे तोमार गाढ़ प्रेमा हय ।
याहाँ नेत्र पड़े, ताहाँ श्री-कृष्ण स्फूरय ॥ १७९॥

प्रभु कहे,——कृष्णे तोमार गाढ़ प्रेमा हय ।
याहाँ नेत्र पड़े, ताहाँ श्री-कृष्ण स्फुरय ॥ १७९ ॥

प्रभु कहे—चैतन्य महाप्रभु ने उत्तर दिया; **कृष्णे**—कृष्ण में; **तोमार**—आपका; **गाढ़**—गाढ; **प्रेमा**—प्रेम; **हय**—है; **याहाँ**—जहाँ भी; **नेत्र**—नेत्र; **पड़े**—गिरते हैं; **ताहाँ**—वहाँ; **श्री-कृष्ण**—भगवान् श्रीकृष्ण; **स्फुरय**—प्रकट होते हैं।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने उत्तर दिया, "कृष्ण के प्रति आप में अगाध प्रेम है, अतएव आप जहाँ भी देखते हैं, आपकी कृष्ण-चेतना बढ़ती जाती है।"

भट्टाचार्य कहे,——दोँहार सुसत्य वचन ।
आगे यदि कृष्ण देन साक्षाद्दरशन ॥ १८०॥

भट्टाचार्य्य कहे,——दोंहार सुसत्य वचन ।
आगे यदि कृष्ण देन साक्षात्दरशन ॥ १८० ॥

भट्टाचार्य्य कहे—सार्वभौम भट्टाचार्य ने कहा; **दोंहार**—दोनों का; **सु-सत्य**—ठीक;

वचन—कथन; **आगे**—पहले; **यदि**—यदि; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **देन**—देते हैं; **साक्षात्**—साक्षात्; **दरशन**—दर्शन।

अनुवाद

सार्वभौम भट्टाचार्य ने कहा, "आप दोनों के कथन सही हैं। कृष्ण अपनी कृपा के माध्यम से साक्षात् दर्शन देते हैं।

প্রেম বিনা কভু নহে তাঁর সাক্ষাৎকার ।
ইঁহার কৃপাতে হয় দরশন ইঁহার ।। ১৮১ ।।

प्रेम विना कभु नहे ताँर साक्षात्कार ।
इँहार कृपाते हय दरशन इँहार ॥ १८१ ॥

प्रेम विना—बिना प्रेम के; **कभु नहे**—कभी नहीं; **ताँर**—उनका; **साक्षात्कार**—प्रत्यक्ष दर्शन; **इँहार कृपाते**—श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा से; **हय**—सम्भव होता है; **दरशन**—दर्शन; **इँहार**—ब्रह्मानन्द भारती का।

अनुवाद

"कृष्ण-प्रेम के बिना हम उनका प्रत्यक्ष दर्शन नहीं कर सकते। इसलिए श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा से ब्रह्मानन्द भारती को भगवान् का साक्षात्कार हो सका।"

तात्पर्य

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा "आप ब्रह्मानन्द भारती हैं, ऐसा महान् भक्त जो भगवान् से भावावेश में प्रेम करता है। अतएव आप सर्वत्र कृष्ण के दर्शन करते हैं—इसमें कोई सन्देह नहीं है।" सार्वभौम भट्टाचार्य ब्रह्मानन्द भारती तथा श्री चैतन्य महाप्रभु की मध्यस्थता कर रहे थे और उनका निर्णय यह था कि ब्रह्मानन्द भारती जैसे महान् भक्त कृष्ण की कृपा से ही कृष्ण का दर्शन करते हैं। कृष्ण महान् भक्त की दृष्टि के सम्मुख स्वयं उसस्थित होते हैं। चूँकि ब्रह्मानन्द भारती महान् भक्त थे, अतएव उन्हें श्री चैतन्य महाप्रभु के शरीर में कृष्ण के दर्शन हुए। *ब्रह्म-संहिता* (५.३८) में कहा गया है :

प्रेमाञ्जनच्छुरितभक्तिविलोचनेन
सन्तः सदैव हृदयेषु विलोकयन्ति।

यं श्यामसुन्दरमचिन्त्यगुणस्वरूपं
गोविन्दमादि पुरुषं तमहं भजामि॥

"मैं उन आदि भगवान् गोविन्द की पूजा करता हूँ, जिनका वे भक्त सदैव दर्शन करते हैं जिनकी आँखों में प्रेम का अंजन लगा रहता है। वे भक्त के हृदय में स्थित अपने शाश्वत श्यामसुन्दर रूप में देखे जाते हैं।"

प्रभु कहे,—'विष्णु' 'विष्णु', कि कह सार्वभौम ।
'अति-स्तुति' हय एई निन्दार लक्षण ॥ १८२॥

प्रभु कहे,—'विष्णु' 'विष्णु', कि कह सार्वभौम ।
'अति-स्तुति' हय एइ निन्दार लक्षण ॥ १८२॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **विष्णु विष्णु**—भगवान् विष्णु, भगवान् विष्णु; **कि कह**—आप क्या कह रहे हैं; **सार्वभौम**—सार्वभौम भट्टाचार्य; **अति-स्तुति**—ज्यादा स्तुति करना; **हय**—है; **एइ**—यह; **निन्दार लक्षण**—निन्दा का लक्षण।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "अरे सार्वभौम भट्टाचार्य, यह आप क्या कह रहे हैं? हे विष्णु! मुझे बचाओ! ऐसी स्तुति निन्दा का दूसरा रूप है।"

तात्पर्य

श्री चैतन्य महाप्रभु भट्टाचार्य के कथन से कुछ उलझन में पड़ गये, अतएव अपने आपको बचाने के लिए उन्होंने विष्णु के नाम का उच्चारण किया। यहाँ पर महाप्रभु इसकी पुष्टि करते हैं कि यदि किसी की अत्यधिक स्तुति की जाती है, तो यह एक प्रकार की निन्दा ही है। वे इस प्रकार के अपराधमूलक कथन का प्रतिरोध करते हैं।

एत बलि' भारतीरे लञा निज-बासा आइला ।
भारती-गोसाञि प्रभुर निकटे रहिला ॥ १८३॥

एत बलि' भारतीरे लञा निज-वासा आइला ।
भारती-गोसाञि प्रभुर निकटे रहिला ॥ १८३॥

एत बलि'—यह कहकर; **भारतीरे**—ब्रह्मानन्द भारती को; **लञा**—अपने साथ लेकर;

निज-वासा आइला—अपने निवासस्थान पर लौट आये; **भारती-गोसाञि**—ब्रह्मानन्द भारती; **प्रभुर निकटे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के घर पर; **रहिला**—रहे।

अनुवाद

यह कहकर श्री चैतन्य महाप्रभु ब्रह्मानन्द भारती को अपने साथ अपने निवासस्थान ले गये। उस क्षण से ब्रह्मानन्द भारती महाप्रभु के साथ रहने लगे।

रामभद्राचार्य, आर भगवानाचार्य ।
प्रभु-पदे रहिला दुँहे छाड़ि' सर्व कार्य ॥ १८४॥

रामभद्राचार्य, आर भगवानाचार्य ।
प्रभु-पदे रहिला दुँहे छाड़ि' सर्व कार्य ॥ १८४॥

रामभद्र-आचार्य—रामभद्र आचार्य; **आर**—और; **भगवानाचार्य**—भगवान् आचार्य; **प्रभु-पदे**—श्री चैतन्य महाप्रभु की शरण में; **रहिला**—रहे; **दुँहे**—वे दोनों; **छाड़ि'**—त्यागकर; **सर्व कार्य**—अन्य सभी कर्तव्य।

अनुवाद

बाद में रामभद्र आचार्य तथा भगवान् आचार्य भी उनके साथ आ गये। वे अपने अपने उत्तरदायित्व को छोड़कर श्री चैतन्य महाप्रभु के आश्रय में रहे।

काशीश्वर गोसाञि आइला आर दिने ।
सम्मान करिया प्रभु राखिला निज स्थाने ॥ १८५॥

काशीश्वर गोसाञि आइला आर दिने ।
सम्मान करिया प्रभु राखिला निज स्थाने ॥ १८५॥

काशीश्वर गोसाञि—काशीश्वर गोसांइ, एक अन्य भक्त; **आइला**—आये; **आर दिने**—अगले दिन; **सम्मान करिया**—सम्मान करके; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **राखिला**—रखे; **निज स्थाने**—अपने निवासस्थान पर।

अनुवाद

अगले दिन काशीश्वर गोसांइ भी आ गये। श्री चैतन्य महाप्रभु ने उनका बड़ा सम्मान किया और वे भी उन्हीं के साथ रहने लगे।

প্রভুকে লঞা করা'ন ঈশ্বর দরশন ।
আগে লোক-ভিড় সব করি' নিবারণ ॥ ১৮৬॥

প্রভুকে লঞা করা'ন ঈশ্বর দরশন ।
আগে লোক-ভিড় সব করি' নিবারণ ॥ ১৮৬॥

প্রভুকে—শ্রী চৈতন্য মহাপ্রভু; **লঞা**—লেকর; **করা'ন**—সহায়তা করতা থা; **ঈশ্বর দরশন**—ভগবান্ জগন্নাথ কা দর্শন করনে মেঁ; **আগে**—আগে; **লোক-ভিড়**—লোগোঁ কী ভীড়; **সব**—সব; **করি' নিবারণ**—রোক কর।

অনুবাদ

কাশীশ্বর মহাপ্রভু কো জগন্নাথ মন্দির কে ভীতর লে জায়া করতা থা। বহ ভীড় মেঁ মহাপ্রভু কে আগে-আগে রহতা ঔর লোগোঁ কো দূর রখতা, জিসসে লোগ উনকা স্পর্শ ন কর সকেঁ।

যত নদ নদী যৈছে সমুদ্রে মিলয় ।
ঐছে মহাপ্রভুর ভক্ত যাহাঁ তাহাঁ হয় ॥ ১৮৭॥

যত নদ নদী যৈছে সমুদ্রে মিলয় ।
ঐছে মহাপ্রভুর ভক্ত যাহাঁ তাহাঁ হয় ॥ ১৮৭॥

যত—সব; **নদ নদী**—নদিয়াঁ; **যৈছে**—জৈসে; **সমুদ্রে**—সমুদ্র মেঁ; **মিলয়**—মিলতী হৈঁ; **ঐছে**—ইসী প্রকার; **মহাপ্রভুর**—শ্রী চৈতন্য মহাপ্রভু কে; **ভক্ত**—ভক্ত; **যাহাঁ তাহাঁ**—জহাঁ কহীং; **হয়**—থে।

অনুবাদ

জিস তরহ সারী নদিয়াঁ সমুদ্র মেঁ মিলতী হৈঁ, উসী তরহ দেশ কে সারে ভক্ত শ্রী চৈতন্য মহাপ্রভু কী শরণ মেঁ আনে লগে।

সবে আসি' মিলিলা প্রভুর শ্রী-চরণে ।
প্রভু কৃপা করি' সবায় রাখিল নিজ স্থানে ॥ ১৮৮॥

সবে আসি' মিলিলা প্রভুর শ্রী-চরণে ।
প্রভু কৃপা করি' সবায় রাখিল নিজ স্থানে ॥ ১৮৮॥

सबे—सब; **आसि'**—आकर; **मिलिला**—मिले; **प्रभुर**—चैतन्य महाप्रभु के; **श्री-चरणे**—चरणकमलों में, आश्रय में; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कृपा करि'**—कृपा करके; **सबाय**—सभी को; **राखिल**—रखा; **निज स्थाने**—अपने संरक्षण में।

अनुवाद

चूँकि सारे भक्त उनकी शरण में आने लगे, अतएव श्री चैतन्य महाप्रभु ने उन सब पर कृपा की और उन्हें अपने संरक्षण में रख लिया।

এই ত' কহিল প্রভুর বৈষ্ণব-মিলন ।
ইহা যেই শুনে, পায় চৈতন্য-চরণ ॥ ১৮৯॥

এइ त' कहिल प्रभुर वैष्णव-मिलन ।
इहा येइ शुने, पाय चैतन्य-चरण ॥ १८९॥

एइ त'—इस प्रकार; **कहिल**—मैंने वर्णन किया है; **प्रभुर**—चैतन्य महाप्रभु का; **वैष्णव-मिलन**—भक्तों से मिलन; **इहा**—यह वर्णन; **येइ**—जो कोई; **शुने**—सुनता है; **पाय**—पाता है; **चैतन्य-चरण**—चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों का आश्रय।

अनुवाद

इस तरह मैंने श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ समस्त वैष्णवों के मिलन का वर्णन किया है। जो भी इस वर्णन को सुनता है, वह अन्ततः उनके चरणकमलों की शरण प्राप्त करता है।

শ্রী-রূপ-রঘুনাথ-পদে যার আশ ।
চৈতন্য-চরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥ ১৯০॥

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे यार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥ १९०॥

श्री-रूप—श्रील रूप गोस्वामी; **रघुनाथ**—श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी; **पदे**—चरणकमलों पर; **यार**—जिनकी; **आश**—आशा; **चैतन्य-चरितामृत**—*चैतन्य चरितामृत* पुस्तक; **कहे**—वर्णन करता है; **कृष्णदास**—श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी।

अनुवाद

श्री रूप तथा श्री रघुनाथ के चरणकमलों पर प्रार्थना करते हुए तथा

सदैव उनकी कृपा की कामना करते हुए तथा उनका अनुगमन करते हुए, मैं कृष्णदास उनके चरणचिह्नों पर चलकर श्री चैतन्य-चरितामृत का वर्णन कर रहा हूँ।

इस प्रकार श्री चैतन्य-चरितामृत मध्यलीला के दसवें अध्याय का भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुआ, जिसमें दक्षिण भारत से जगन्नाथ पुरी लौटने पर वैष्णवों से महाप्रभु की भेंट का वर्णन हुआ है ।